राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने पीएम को...

युद्ध के बीच बेंजामिन नेतन्याहू को नई टेंशन... 11

वर्ष : 14 | अंक : 244 | नई दिल्ली, मंगलवार, 16 जनवरी, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

अधिकतम तापमान 14°C
न्यूनतम तापमान 9°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

हां	40%
नहीं	45%
कह नहीं सकते	15%

बाजार

सोना	64,575
चांदी	78,800
सेंसेक्स	73,327
निफ्टी	22,097

संक्षिप्त खबरें

वैष्णो देवी मंदिर की पुरानी गुफा फिर खुली

जम्मू। श्रद्धालुओं की कम संख्या को ध्यान में रखते हुए जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित वैष्णो देवी मंदिर के पुराने और प्राकृतिक गुफा मार्ग को रविवार को फिर से खोल दिया गया। अधिकारियों के मुताबिक त्रिकुटा पहाड़ियों पर स्थित मंदिर की यात्रा के लिए इस प्राकृतिक मार्ग को आमतौर पर साल के इस समय में फिर से खोल दिया जाता है। उन्होंने बताया कि इस अवधि के दौरान मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं की कम संख्या को ध्यान में रखते हुए ऐसा किया गया है। उन्होंने बताया कि पुरानी गुफा मार्ग रविवार को फिर से खोल दिया गया और तीर्थयात्रियों ने इसके जरिये यात्रा की। जानकारी के मुताबिक, सुबह 10 बजे से लेकर शाम 4 बजे तक पुरानी गुफा खुली रहेगी। माता वैष्णोदेवी श्राइन बोर्ड (एसएमवीडीएसबी) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अंशुल गर्ग ने बताया कि आज मंदिर में पूजा करने के बाद तीर्थयात्रियों को पुराने गुफा मार्ग से यात्रा करने की सुविधा प्रदान की गई।

हाल ही में पढ़ाई करने अमेरिका गए दो भारतीय छात्रों की मौत

वाशिंगटन। अमेरिका के कनेक्टीकट में दो स्टूडेंट्स की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत की खबर सामने आई है। बताया जा रहा है कि 16 दिन पहले ही ये छात्र पढ़ाई के लिए अमेरिका पहुंचे थे। बताया गया कि दोनों ही छात्र एक ही कमरे में रहते थे। सोने के दौरान ही उनकी मौत हो गई। एक छात्र का नाम गड्डू निदेश बताया गया है जो कि तेलंगाना के वानापार्थी का रहने वाला ता। वहीं दूसरे का नाम श्रीकाकुलम बताया गया है। वह आंध्र प्रदेश का रहने वाला था। दिनेश के पिता गड्डू वेंकटन्ना का कहना है कि संभव है कार्बन मोनोऑक्साइडड पॉइजनिंग की वजह से दोनों की मौत हो गई। दिनेश ने कम्प्यूटर साइंस से बीटेक किया ता। इसके बाद कनेक्टिकट की सैक्रेड हार्ट यनिवर्सिटी में ऐडमिशन लिया। उसने महबूबनगर से स्कूलिंग की थी और फिर हैदराबाद जाकर इंटरमीडिएट पूरा किया था। साइनाथ के मुताबिक दिनेश को उसका परिवार हैदराबाद के राजीव गांधी एयरपोर्ट पर छोड़ने आया था।

दृढ़ विश्वास से आगे बढ़ रही भारत की सनातन परंपरा: मुख्यमंत्री योगी

प्रात: किरण/एजेंसी

गोरखपुर। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने प्रदेशवासियों को मकर संक्रांति की बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। इस मौके पर उन्होंने कहा कि इस पर्व पर आस्था को सम्मान देने के लिए पूरे प्रदेश के अंदर सुरक्षा सुविधा व सहूलियत के व्यापक इंतजाम किए गए हैं।

सोमवार की भोर में चार बजे मकर संक्रांति पर्व पर गोरखनाथ मंदिर में महायोगी गोरखनाथ को विधिविधान से आस्था की पवित्र खिचड़ी चढ़ाई। इसके बाद पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि कहीं भी श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो। पूरे प्रदेश में हर जगह पर्याप्त व्यवस्था की गई है। गोरखनाथ मंदिर में भी खिचड़ी चढ़ाने आए लाखों श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सारी व्यवस्थाएं की गई हैं। ज्ञातव्य हो कि गोरखनाथ मंदिर में कल से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु शिवावतार महायोगी गोरखनाथ को खिचड़ी चढ़ा रहे हैं और आज मकर संक्रांति के मुख्य पर्व पर यह संख्या लाखों में दिख रही है। गुरु गोरखनाथ को आस्था की पवित्र खिचड़ी चढ़ाने के लिए सड़कों पर लंबी-लंबी कतारें लगी हैं और लोग अनुशासित होकर दर्शन-पूजन और खिचड़ी चढ़ाने के अनुष्ठान में सम्मिलित हो रहे हैं। इन श्रद्धालुओं के लिए प्रशासन व मंदिर प्रबंधन की तरफ से भी व्यापक प्रबंध किए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने दी मंगलकामना

जगतपिता सूर्य से प्रदेशवासियों के शुभ व मंगलमय जीवन की कामना करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि बारह राशियों में भ्रमणशील सूर्यदेव मकर संक्रांति पर धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करने के साथ दक्षिणायण से उत्तरायण होते हैं। मकर संक्रांति हर प्रकार के शुभ और मांगलिक कार्यक्रमों के लिए प्रशस्त तिथि मानी गई है। आज से शुभ व मांगलिक कार्य भी प्रारम्भ हों जाएंगे। योगी ने कहा कि मकर संक्रांति के पावन पर्व पर लोग संगम तट, नदियों व सरोवरों में स्नान करके अपनी आस्था को पुष्ट करने के साथ भारत की सनातन परंपरा के प्रति दृढ़ विश्वास को आगे बढ़ा रहे हैं। हजारों वर्षों से जारी मकर संक्रांति की महत्वपूर्ण परंपरा में लाखों की संख्या में श्रद्धालु ब्रह्म मुहूर्त से ही पूरी श्रद्धा के साथ जुड़े हुए हैं।

पीएम ने प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के एक लाख लाभार्थियों को पहली किस्त जारी की

जिनको कभी किसी ने पूछा नहीं, उनको मोदी पूछता भी है और पूजता भी है : पीएम

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को कहा कि त्रेता युग में राजा राम की कथा हो या आज की राज-कथा, यह गरीब, वंचित और जनजातीय लोगों के कल्याण के बिना संभव ही नहीं है। उन्होंने कहा कि उनके नेतृत्व वाली सरकार इसी सोच के साथ लगातार काम कर रही है और इसी का प्रतिफल है कि जिनको कभी किसी ने पूछा नहीं, उनको मोदी आज पूछता भी है और पूजता भी है। प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान के अंतर्गत प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के एक लाख लाभार्थियों को पहली किस्त जारी करने के बाद वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से अपने संबोधन में मोदी ने कहा कि उनकी सरकार के 10 साल गरीबों को समर्पित रहे। उन्होंने कहा, त्रेता में राजा राम की कथा हो या आज की राज-कथा बिना गरीब, बिना वंचित, बिना वनवासी भाई-बहनों के कल्याण के संभव ही नहीं है। इसी सोच के साथ हम लगातार काम कर रहे हैं। हमने 10 साल गरीबों को समर्पित किए। गरीबों को 4 करोड़ से अधिक पक्के घर बनाकर दिए। उन्होंने कहा, जिनको कभी किसी ने पूछा नहीं, उनको मोदी आज पूछता भी है और पूजता भी है। प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के लाभार्थियों को 540 करोड़ रुपये की पहली किस्त जारी की गई। इस दौरान लाभार्थियों ने रसोई गैस कनेक्शन, बिजली, पाइप से पानी और आवास सहित अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के बाद अपने जीवन में आए सकारात्मक बदलावों पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री ने संवाद के दौरान कहा, हमारी सरकार का प्रयास है कि कोई भी उसकी कल्याणकारी योजनाओं से वंचित नहीं रहे। अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह का उल्लेख करते हुए मोदी ने कहा कि इन दिनों उन्होंने भी 11 दिन व्रत-अनुष्ठान का एक संकल्प किया हुआ है और इस दौरान वे श्री राम का ध्यान और स्मरण कर रहे हैं। उन्होंने कहा, जब आप प्रभु राम का स्मरण करेंगे तो माता शबरी की याद आना बहुत स्वाभाविक है। श्रीराम की कथा माता शबरी के बिना संभव ही नहीं है। अयोध्या से जब राम निकले थे तब तो वह राजकुमार थे। लेकिन राजकुमार राम, मयार्दा पुरुषोत्तम के रूप में हमारे सामने आए क्योंकि माता शबरी हो, केवट हो, निषाद राज हो, न जाने कौन-कौन से लोग जिनके सानिध्य ने राजकुमार राम को प्रभु राम बना दिया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार की योजनाएं अति पिछड़े जनजातीय लोगों तक पहुंचें, यही पीएम-जनमन महाअभियान का उद्देश्य है। उन्होंने कहा, सरकार पूरी ताकत लगा रही है कि हमारे अति पिछड़े जनजातीय भाई-बहनों तक सरकार की हर योजना जल्द से जल्द पहुंचे। मेरा कोई अति पिछड़ा भाई-बहन अब सरकार की योजना के लाभ से छूटेगा नहीं। उन्होंने कहा कि सिर्फ दो महीने में ही पीएम-जनमन अभियान ने वह लक्ष्य हासिल करने शुरू कर दिए हैं जो पहले कभी कोई नहीं कर सका। उन्होंने कहा कि जनजातीय समुदाय की भावी पीढ़ियों को अब किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना ना करना पड़े, इसके लिए उनकी सरकार लगातार प्रयास कर रही है।

परंपरा से उलट काम हो रहा, हम नहीं जाएंगे : शंकराचार्य

- पुरी पीठ के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद ने प्राण-प्रतिष्ठा पर कहा- इसे अहंकार से न जोड़ें
- शंकराचार्यों की ओर से रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को किए जाने को भी गलत बताया

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के आयोजन में शंकराचार्यों के न जाने का मुद्दा तूल पकड़ रहा है। कांग्रेस समेत विपक्ष शंकराचार्यों की राय का जिक्र करते हुए मोदी सरकार पर हमला बोल रहा है। वहीं पुरी पीठ के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद ने एक बार फिर से दोहराया है कि वह इस आयोजन में नहीं आएंगे। उन्होंने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा में न जाने का फैसला हमारे अहंकार से जुड़ा नहीं है बल्कि यह परंपरा की बात है। उन्होंने कहा कि सनातन परंपरा से उलट काम होने के चलते हम इस आयोजन में नहीं जा रहे हैं। उन्होंनें मीडिया से बातचीत में कहा कि शंकराचार्यों की अपनी एक गरिमा है। यह अहंकार की बात नहीं है। क्या हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि हम बाहर बैठें और जब पीएम प्राण प्रतिष्ठा करें तो बाहर बैठकर ताली बजाएं। एक सेकुलर सरकार का यह काम नहीं है कि वह परंपराओं से छेड़छाड़ करे। शंकराचार्यों की ओर से रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को किए जाने को भी गलत बताया था। उनका कहना था कि यह तारीख ठीक नहीं है। ऐसा आयोजन राम नवमी के दिन किया जाना चाहिए। हालांकि बाद में दो शंकराचार्यों ने खबरों को खारिज करते हुए आयोजन पर खुशी जताई थी, लेकिन यह भी साफ किया कि वे इस कार्यक्रम में नहीं जाएंगे।

बता दें कि शंकराचार्यों की राय के बहाने कांग्रेस समेत विपक्षी पार्टियां भी सरकार को घेर रही हैं। एक ओर कांग्रेस यह तर्क भी दे रही है कि मंदिर का निर्माण अभी चल ही रही है। वहीं दूसरी आरे अधूरे मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा करना सनातन धर्म की परंपरा के विपरीत है। अशोक गहलोत ने कहा कि सनातन धर्म के सर्वश्रेष्ठ गुरु शंकराचार्य कार्यक्रम में नहीं जा रहे हैं। इससे साफ है कि हमारा फैसला सही है। उन्होंने कहा कि इन लोगों ने पूरे आयोजन का राजनीतिकरण कर दिया है। यही वजह है कि हमारे सनातन धर्म के शीर्ष गुरु शंकराचार्य भी आयोजन में नहीं जा रहे हैं। यदि वे कुछ कह रहे है तो उसकी अहमियत है।22 जनवरी के आयोजन के लिए देश भर में 10 हजार लोगों को न्योता दिया गया है। पीएम नरेंद्र मोदी के अलावा संघ प्रमुख मोहन भागवत, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ मौजूद रहेंगे। वहीं कारोबारी जगत से मुकेश अंबानी, गौतम अडानी समेत कई हस्तियां मौजूद रहेंगी। सिलेब्रिटीज के साथ ही कई देशों के राजनयिकों को भी कार्यक्रम में बुलाया गया है।

भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दूसरे दिन इम्फाल वेस्ट में बोले राहुल गांधी

हम चाहते हैं कि मणिपुर में शांति लौटे

प्रात : किरण/ एजेंसी

इम्फाल। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दूसरे दिन सोमवार को राहुल गांधी ने सुबह इम्फाल वेस्ट के सेकमई से यात्रा शुरू की। लोगों को संबोधित करते हुए राहुल ने कहा कि पिछले साल हमने कन्याकुमारी से कश्मीर तक यात्रा शुरू की थी। इसका मकसद देशभर के लोगों को साथ लाना था। हम एक यात्रा देश के पूर्वी हिस्से से पश्चिम तक करना चाहते थे। इसे हमने मणिपुर से शुरू करने का फैसला लिया। हम भारत के लोगों को बताना चाहते थे कि मणिपुर के लोग किस तकलीफ से जूझ रहे हैं। मैं जानता हूं कि आप किस त्रासदी से गुजर रहे हैं। आपने कई अपनों को खोया है। संपत्ति का नुकसान हुआ। मैं आपके साथ हूं। हम चाहते हैं कि मणिपुर में शांति लौटे। 14 जनवरी को मणिपुर के थौबल से यात्रा की शुरूआत हुई थी। मणिपुर में सफर के बाद यात्रा ने रात में नगालैंड में प्रवेश किया। 66 दिनों तक चलने वाली भारत जोड़ो न्याय यात्रा देश के 15 राज्यों और 110 जिलों से होकर गुजरेगी। राहुल गांधी जगह-जगह रुक कर स्थानीय लोगों से संवाद करेंगे। इस दौरान राहुल 6700 किमी का सफर तय करेंगे। यात्रा 20 मार्च को मुंबई में खत्म होगी।

मालदीव विवाद पर बोले विदेश मंत्री मैं गारंटी नहीं दे सकता

नागपुर। मालदीव के साथ जारी तनाव के बीच विदेश मंत्री एस जयशंकर ने प्रतिक्रिया दी है। नागपुर में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान जयशंकर ने कहा, राजनीति तो राजनीति है। मैं इस बात की गारंटी नहीं दे सकता कि हर देश, हर रोज और सभी हमारा समर्थन करेंगे या हमारी बात से सहमत होंगे। उन्होंने कहा, हम बीते 10 सालों से बहुत ही मजबूत रिश्ता बनाने की कोशिश कर रहे हैं और इसमें हमें बहुत सफलता मिली है। उन्होंने कहा, राजनीति में उतार-चढ़ाव आ सकता है, लेकिन आमतौर पर उस देश के लोगों के मन में भारत के प्रति अच्छी भावना है और वे अच्छे रिश्तों की अहमियत को जानते हैं। इस दौरान उन्होंने अन्य देशों में इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में भारत के योगदान पर भी चर्चा की। बता दें कि मालदीव सरकार के तीन उपमंत्रियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लक्षद्वीप दौरे को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। इसके बाद अब मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने भारतीय सैनिकों की वापसी के लिए भी अल्टीमेटम दे दिया है।

समाज को संगठित करने के लिए तेजी से कार्य करने की जरूरत

सरसंघचालक ने आदर्श विश्व बनाने के लिए संगठन को मजबूत करने पर दिया जोर

प्रात : किरण/एजेंसी

जींद। आरएसएस के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि हमें समाज को संगठित करने के लिए और अधिक तेजी से कार्य करना होगा। जब सम्पूर्ण राष्ट्र एकमुष्ठ शक्ति के साथ खडा होगा तो दुनिया का सारा अमंगल हरण करके यह देश फिर से विश्व गुरु बनकर खड़ा होगा। डॉ. मोहन भागवत रविवार को अपने प्रवास के तीसरे दिन गोपाल विद्या मंदिर में जींद नगर की शाखाओं के स्वयंसेवकों को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उनके साथ क्षेत्रीय संघचालक सीताराम व्यास, प्रांत संघचालक पवन जिंदल व विक्रम गिरी महाराज भी मौजूद रहे। संघ प्रमुख ने कहा कि जो विश्व के सामने संकट खड़े हैं, भारत के विश्वगुरु बनने से वह सब शांति, उन्नति को प्राप्त करेंगे। सारी समस्याओं को ठीक करते हुए सब राष्ट्र अपनी-अपनी विशिष्ठता के आधार पर अपना जीवन जीते हुए मानवता के जीवन में, सृष्टि के जीवन में अपना योगदान करते रहें।

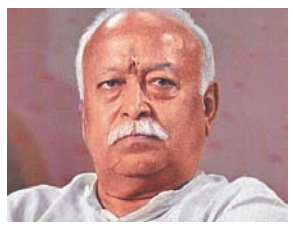

ऐसा एक आदर्श विश्व खड़ा करने की ताकत हिंदुओं की सगंठित अवस्था में है, उसी के चलते मंदिर बन रहा है। उन्होंने कहा कि राम का मदिर बनने का आनंद है और आनंद करना चाहिए। अभी और बहुत काम करना है, लेकिन साथ में यह भी ध्यान रखेंगे कि जिस तपस्या के आधार पर यह काम हो रहा है वह तपस्या हमें आगे भी जारी रखनी है। जिसके चलते हमारे ध्येय की प्राप्ति होगी। संघ प्रमुख ने कहा कि समाज में तीन शब्द चलते हैं क्रांति, उतक्रांति, संक्रांति तीनों का अर्थ परिवर्तन है परंतु परिवर्तन किस तरीके से आया उसमें अंतर आता है। संक्रांति हमारे यहां आदि काल से प्रचलित है। बड़े-बड़े कार्य स्व के आधार पर सत्य के आधार पर होते हैं। उनका जीवन शुद्ध, निष्कलंक, सतचरित्र था, विरोधी भी उनका सम्मान करते थे। अविचल दृढ़ता के साथ जो ध्येय निश्चित किया पूरा विचार करके उसकी सिद्धी के लिए डॉक्टर साहब अकेले चल पड़े और आगे चलकर बाकी सारी बातें धीरे-धीरे जुड़ गई। डॉक्टर साहब के सत्व, निश्चय को देखकर इस तपस्या को आगे जारी रखने के लिए संघ की पद्धति से हजारों स्वयंसेवक खड़े हुए।

इंडिगो की फ्लाइट में पायलट को जड़े थप्पड़

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर रविवार को इंडिगो की फ्लाइट में 13 घंटे से हो रही देरी से नाराज एक पैसेंजर ने पायलट को थप्पड़ जड़ दिया। यह घटना सुबह 7:40 बजे दिल्ली से गोवा जाने वाली इंडिगो की फ्लाइट (6ई-2175) की है। यह फ्लाइट कोहरे के कारण लेट हुई थी। इस घटना का वीडियो खूब वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में पीले रंग की हुडी पहने पैसेंजर सीट से उठकर पायलट के पास गया और थप्पड़ जड़ने कहते दिख रहा है- चलाना है तो चल, नहीं तो गेट खोल दे। इसके बाद एयर होस्टेस समझते हुए कह रही है की सर, यह गलत है। आप ऐसा नहीं कर सकते। फ्लाइट में मौजूद अन्य लोगों ने पैसेंजर की हरकत का विरोध किया। घटना के बाद पैसेंजर को विमान से बाहर कर सुरक्षाबलों हवाले कर दिया गया। पैसेंजर की पहचान साहिल कटारिया के रूप में हुई है। इंडिगो प्रबंधन ने उसके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

उत्तर भारत में अगले तीन दिनों तक घना कोहरा छाया रहेगा : आईएमडी

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने सोमवार को कहा कि अगले तीन दिनों तक उत्तर भारत में घने कोहरे की स्थिति जारी रहने की संभावना है।आईएमडी ने पूवार्नुमान जताया है कि अगले दो दिनों तक उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में अधिक शीत लहर की स्थिति जारी रहने की संभावना है। अपने डेली बुलेटिन में, मौसम पूवार्नुमान एजेंसी ने कहा कि पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, पश्चिम उत्तर प्रदेश और उत्तरी राजस्थान के अधिकांश हिस्सों में न्यूनतम तापमान 3 से 7 डिग्री सेल्सियस, दक्षिणी राजस्थान, उत्तरी मध्य प्रदेश, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश और झारखंड के हिस्सों में 8 से10 सेल्सियस डिग्री के बीच है। आईएमडी ने कहा, उत्तर पश्चिम और इससे सटे पूर्वी भारत के कई हिस्सों में ये सामान्य से 1 से 4 डिग्री सेल्सियस नीचे हैं। पूवार्नुमान है कि सोमवार रात से बुधवार सुबह तक पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली के कई हिस्सों में रात और सुबह में कुछ घंटों के लिए घना कोहरा छाए रहने की संभावना है। वहीं, कुछ हिस्सों में बुधवार की रात और गुरुवार की सुबह और अगले दो दिनों तक घना कोहरा रहेगा। विभाग ने कहा, सोमवार और शुक्रवार के दौरान झारखंड के अलग-अलग इलाकों में, उत्तराखंड, उत्तरी राजस्थान, उत्तरी मध्य प्रदेश, उपहिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम में बुधवार तक रात और सुबह कुछ घंटों के लिए घने कोहरे की स्थिति बने रहने की भी संभावना है। आईएमडी ने भविष्यवाणी की है कि सोमवार और बुधवार के दौरान पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली के कुछ हिस्सों में अधिक शीतलहर की स्थिति जारी रहने की संभावना है। जबकि, सोमवार और गुरुवार के दौरान उत्तरी राजस्थान के अलग-अलग हिस्सों में शीत लहर जारी रहने की संभावना है। मौसम पूवार्नुमान एजेंसी ने कहा, मंगलवार को उत्तर पश्चिम भारत में पाला पड़ने की संभावना है। आईएमडी ने कहा, उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में सोमवार को और अलग-अलग हिस्सों में मंगलवार को भी अधिक ठंडे दिन की स्थिति जारी रहने की संभावना है।

राजनीति सपा के अखिलेश को बताया गिरगिट की तरह रंग बदलनेवाला, सावधान रहने की जरूरत

मायावती का ऐलान, बीएसपी अकेले ही लड़ेगी लोकसभा चुनाव

प्रात : किरण/एजेंसी

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की मुखिया मायावती ने अपने जन्मदिन पर आज बड़ा ऐलान करते हुए कहा है कि बसपा अकेले ही अपने दम पर लोकसभा का चुनाव लड़ेगी। उन्होंने अखिलेश यादव को गिरगिट की तरह रंग बदलनेवाला करार देते हुए सपा से सावधान रहने की जरूरत बताई है। बसपा सुप्रीमों मायावती ने लखनऊ स्थित पार्टी कार्यालय पर प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि हम किसी से गठबंधन नहीं करेंगे और अपने दम पर अकेले ही चुनाव लड़ेगे। इस दौरान बसपा सुप्रीमो मायावती ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर भी जमकर हमला बोलते हुए कहा कि अखिलेश ने गिरगिट की तरह रंग बदला है।

हमें गिरगिट की तरह रंग बदलने वालों से सावधान रहना होगा। मिली जानकारी के मुताबिक बसपा की अध्यक्ष और यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने अपने 68वें जन्मदिन पर सोमवार को यहां कहा कि उनकी पार्टी 2024 का लोकसभा चुनाव अकेले ही पूरी तैयारी व दमखम के साथ लड़ेगी। यहां बसपा के राज्य मुख्यालय पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में मायावती ने कहा अपना चुनावी एजेंडा भी बताया। मायावती ने कहा कि चुनाव को लेकर यहां यह बात फिर से स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि हमारी पार्टी देश में जल्दी ही घोषित होने वाले लोकसभा के आम चुनाव में हर वर्ग को साथ लेने का संकल्प किया है। इसमें हमारी पार्टी गरीबों, उपेक्षित वर्गों में से विशेषकर दलितों, आदिवासियों, अति पिछड़े वर्ग, मुस्लिम व अन्य धार्मिक अल्पसंख्यक समाज के लोगों के बलबूते पर ही पूरी तैयारी व दमखम के साथ अकेले ही चुनाव लड़ेगी। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि इन्हीं के बलबूते पर ही हमने 2007 में आबादी के हिसाब से देश के सबसे बड़े राज्य यूपी में अकेले ही चुनाव लड़कर अपनी पार्टी की पूर्ण बहुमत की सरकार भी बनाई थी। इसलिए पूर्व के अनुभव को ध्यान में रखकर अब हमारी पार्टी लोकसभा चुनाव अकेले ही लड़ेगी। बसपा सुप्रीमों ने इस दौरान अपनी चार बार की उप्र सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए सत्तारूढ़ भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि बसपा ने चार बार की सरकार में सभी वर्गों के लिए काम किया।

वर्तमान समय में कोई काम नहीं दिख जबकि उन्हें मुफ्त में राशन देकर लोगों को गुलाम बनाया जा रहा है। बसपा प्रमुख ने ईवीएम को लेकर कहा कि ईवीएम में मिल रही गड़बड़ी की खबरों से बीएसपी के लोग चिंतित हैं। ऐसे में पूरी ऊर्जा ताकत से पार्टी को मजबूती देना है। इसके लिए पूरी निष्ठा से लगे रहना होगा।

मोबाइल खरीदने के नाम पर युवक से दस हजार की ठगी

रूड़की, एजेंसी। साइबर ठगों ने मोबाइल बिक्री का झांसा देकर एक युवक से हजारों रुपये की ठगी कर ली। युवक ने अपनी रकम वापस मांगी तो ठग ने मोबाइल बंद कर लिया। युवक की ओर से पुलिस को तहरीर दी गई है। सिविल लाइंस कोतवाली क्षेत्र स्थित खंजरपुर निवासी कुणाल कुमार ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि दो दिन पूर्व उसने ओएलएक्स पर मोबाइल बिक्री का एक विज्ञापन देखा था। विज्ञापन पर एक मोबाइल नंबर भी पड़ा था। मोबाइल पसंद आने पर उसने नंबर पर कॉल की तो सौदा तय हो गया। इस पर मोबाइल बिक्री करने वाले ने दस हजार रुपये एडवांस में डालने की बात कही। ढ्ढझांसे में आकर उसने दस हजार रुपये ट्रांसफर कर दिए। कुछ देर बाद उसने नंबर पर कॉल की तो वह बंद आया। युवक ने पुलिस से कार्रवाई की मांग की है। कोतवाली प्रभारी आरके सकलानी ने बताया कि तहरीर के आधार पर मामले की जांच कराई जा रही है। साथ ही मामले को जांच के लिए साइबर सेल भेजा जा रहा है।

स्वच्छता सर्वेक्षण में नरेंद्रनगर नगर पालिका को मिली दूसरी रैंक

नई टिहरी, एजेंसी। स्वच्छता सर्वेक्षण में नरेंद्रनगर नगर पालिका ने बेहतर प्रदर्शन किया है और प्रदेश में दूसरी रैंक मिली है। ट्रंचिंग ग्राउंड से लेकर अन्य सभी व्यवस्थाएं चाकचौबंध होने पर ही स्वच्छता रैंकिंग में दूसरा स्थान मिला है। नगर पंचायत गजा ने भी सफाई व्यवस्था में कुछ सुधार किया है। गजा ने पिछले 29वीं रैंक के मुकाबले इस बार 14वीं रैंक हासिल की है। हालांकि वहां अभी ट्रंचिंग ग्राउंड नहीं है। वहां टिनशेड में कॉम्पेट मशीन लगाकर कूड़ा निस्तारण का प्रयास किया जा रहा है। चंबा पालिका ने स्टेट में 11वीं और नॉर्थजोन स्तर पर 251वीं रैंक हासिल की है। वहां भी क्षेत्र बढ़ने से सफाई कर्मियों की कमी बनी है। कूड़ा निस्तारण मोकरी में बनाए गए अस्थायी ट्रंचिंग ग्राउंड में किया जा रहा है। नई टिहरी नगर पालिका ने भी कुछ सुधार किया है। इस बार स्टेट में 14वीं रैंक पर रही पालिका पिछली बार 15वीं रैंक पर थी जबकि इस बार नॉर्थजोन में पालिका को 203वीं रैंक मिली है। यहां व्यवस्थाएं तो पर्याप्त हैं, लेकिन अभी तक ट्रंचिंग ग्राउंड नहीं होने से कूड़ा मोकरी में अस्थायी निस्तारण केंद्र में निस्तारित किया जा रहा है।

मैडम! राशन के लिए चक्कर कटवाता है डीलर

हरिद्वार, एजेंसी। मैडम ! डीलर सरकारी राशन के लिए खूब चक्कर कटवाता है। दुकान भी बहुत कम खोलता है, इससे उन्हें समय पर राशन उपलब्ध नहीं हो पाता है। खाद्य आपूर्ति विभाग की ओर से लगाए गए शिविर में ग्रामीणों ने क्षेत्रीय खाद्य आपूर्ति अधिकारी से राशन डीलर की शिकायत की। इस पर डीलर को कार्यप्रणाली में सुधार लाते हुए रोजाना दुकान खोलकर राशन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। चेतावनी दी कि यदि फिर से उनकी शिकायत आई तो सख्त कार्रवाई की जाएगी। दअसल, बुधवार को सरकार जनता के द्वार कार्यक्रम के तहत एसडीएम की ओर से खाला टीहरा गांव में लगाए गए शिविर में खाद्य आपूर्ति से जुड़ी शिकायत आई थी। इस पर एसडीएम अजयवीर सिंह की ओर से खाद्य आपूर्ति विभाग को गांव में शिविर लगाने के निर्देश दिए गए थे। इससे क्षेत्रीय खाद्य आपूर्ति अधिकारी पूनम सैनी और पूर्ति निरीक्षक ममता ग्वाड़ी की ओर से गांव में जाकर शिविर लगाया गया।

तालाब में तैयार किया जा रहा था मौत का सामान

रूड़की, एजेंसी। आबकारी विभाग की टीम ने हाईवे किनारे स्थित एक तालाब में छापामारी कर बड़ी मात्रा में तैयार कच्ची शराब और बड़ी मात्रा लाहन बरामद किया है। टीम ने लाहन को नष्ट कर दिया। जबकि शराब बनाने वाले उपकरण कब्जे में लिए हैं। टीम कच्ची शराब बनाने वालों को चिह्नित कर रही है। रुड़की आबकारी विभाग की टीम को शिकायत मिल रही थी कि मंगलौर क्षेत्र स्थित लिब्बरहेड़ी के पास हाईवे किनारे एक तालाब में कुछ लोग कच्ची शराब तैयार करते हैं। शिकायत पर आबकारी निरीक्षक शुजात हुसैन के नेतृत्व में सन्नी सैनी, मधुर कुमार, पारुल, इस्तेखार, रेनू की टीम ने शनिवार की सुबह तालाब में छापामारी की। इस बीच टीम के पहुंचने से पहले ही शराब बनाने वाले मौके से फरार हो गए। टीम ने मौके से करीब 40 लीटर कच्ची शराब और दो हजार लीटर लाहन बरामद किया। आबकारी निरीक्षक शुजात हुसैन ने बताया कि लाहन को नष्ट कर दिया गया है। जबकि मौके शराब बनाने के उपकरण और शराब जब्त कर ली है। उन्होंने बताया कि मंगलौर कोतवाली में अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कराया गया है। साथ ही शराब तैयार करने वालों को चिह्नित किया जा रहा है।

आकाश के हत्यारों को फांसी की सजा की मांग

रूड़की, एजेंसी। आकाश के हत्यारों को फांसी की सजा दिए जाने की मांग करते हुए आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कर कैंडल मार्च निकाला। साथ ही फरार आरोपियों की गिरफ्तारी न होने पर नाराजगी जताई गई। शनिवार की शाम तमाम संगठनों और राजनीतिक लोगों ने नेहरू स्टेडियम पर एकत्रित होकर कैंडल मार्च निकाला। कैंडल मार्च नेहरू स्टेडियम, सिविल लाइंस बाजार, रुड़की टॉकीज पहुंचा। यहां आकाश के रेहड़ी के पास कैंडल जलाकर उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। इस दौरान आकाश के पिता स्वामीनाथ ने कहा कि उन्हें इंसाफ चाहिए। आकाश के हत्यारों को फांसी की सजा मिलनी चाहिए। जो आरोपी फरार चल रहे हैं। उनकी गिरफ्तारी जल्द होनी चाहिए। भीम आर्मी प्रदेश अध्यक्ष महक सिंह ने कहा कि हत्या हुए चार दिन बीत चुके हैं। लेकिन अभी तक पुलिस ने फरार आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं की है। अमित बेदी, अमित कुमार सोनकर, राजकुमार सोनकर, आकाश सोनकर, सूरज गुप्ता, सुमित, निशांत राणा, अरुण, अंकित, प्रशांत राणा, पापालाल सोनकर आदि मौजूद रहे।

16 जनवरी को ट्रैफिक प्लान देखकर ही कीजिएगा यात्रा

पिथौरागढ़, एजेंसी।
सीएम पुष्कर सिंह धामी के 16 जनवरी को पिथौरागढ़ आगमन को लेकर पुलिस ने यातायात नियम में बदलाव किया है। एसपी लोकेश्वर सिंह ने सभी वाहन चालकों को नियमों का पालन करने और पुलिस टीम को नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए है।

एसपी ने बताया कि वड्डा तिराहा से रोडवेज तिराहा जीरो जोन रहेगा और सड़क के दोनों ओर वाहनों की आवाजाही पर रोक रहेगी। धारचूला सड़क से आने वाले वाहन पंडा बाईपास से एपीएस, जाखनी, कुमौड़ तिराहा और टनकपुर तिराहे पर यात्रियों को उतारने के बाद केमू स्टेशन, गुप्ता तिराहा-अपटेक तिराहा होते हुए डिग्री कॉलेज और जीआईसी में पार्क होंगे।

चंडाक की ओर से आने वाले वाहन सवारियों को सिल्थाम में उतारने के बाद डिग्री कॉलेज और जीआईसी में पार्क किए जाएंगे। झूलाघाट से आने वाले वाहन यात्रियों को रोडवेज स्टेशन पर उतारेंगे। इसके बाद यह वाहन केमू स्टेशन से गुप्ता तिराहा, अपटेक तिराहा होते हुए डिग्री कॉलेज और जीआईसी में पार्क किए होंगे। घाट पनार से आने वाले वाहन सवारियों को रोडवेज पर उतारने के बाद केमू स्टेशन , गुप्ता तिराहा, अपटेक तिराहा होते हुए डिग्री कॉलेज में पार्क किए जाएंगे।

स्टेडियम से टकाना, गुप्ता तिराहा अपटेक तिराहा और गुप्ता तिराहा से केमू स्टेशन, रोडवेज स्टेशन, सिल्थाम रोड पर कोई भी चौपहिया और दोपहिया वाहन पार्क नहीं किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने नाबार्ड के तत्वावधान में आयोजित स्टेट क्रेडिट सेमिनार में मुख्य अतिथि किया प्रतिभाग

- नाबार्ड की ऋण योजना के आवंटन के लिए प्रत्येक बैंक ब्रांच को एक निश्चित टारगेट के साथ काम करना होगा:मुख्यमंत्री
- प्रदेश के शहरी और ग्रामीण इलाकों का समान रूप से विकास चाहती है राज्य सरकार

प्रात : किरण, संवाददाता

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सोमवार को नाबार्ड के तत्वावधान में एक स्थानीय होटल में आयोजित स्टेट क्रेडिट सेमिनार में बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने स्टेट फोकस पालिसी पेपर 2024-25 का अनावरण भी किया। मुख्यमंत्री ने नाबार्ड का विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड में कृषि, बागवानी तथा छोटे और मध्यम क्षेत्र के उद्योगों के विकास के लिए नाबार्ड ने इस वर्ष चालीस हजार करोड़ रुपए की ऋण योजना तैयार की है, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में साढ़े तैतीस प्रतिशत अधिक है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह हमारे छोटे किसानों तथा छोटे व मझौले उद्योगों में लगे लोगों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि इस ऋण व्यवस्था की सही निगरानी भी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ऋण, लोन या क्रेडिट को जरूरतमंद और योग्य लोगों तक सरलता से पहुंचाने में सबसे बड़ी भूमिका बैंकों की है। बैंकों को ध्यान देना होगा कि जरूरतमंद और योग्य लोगों को ऋण सम्बन्धित औपचारिकताओं के लिए अनावश्यक न भटकना पड़े। इसके लिए बैंकों को मिशन मोड पर काम करना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि नारी शक्ति वंदन विधेयक संसद के दोनों सदनों में पारित हो चुका है। राज्य सरकार भी उत्तराखंड में महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 30 प्रतिशत का आरक्षण प्रदान कर रही है। उन्होंने नाबार्ड के अधिकारियों से कहा कि प्रदेश की महिलाओं हेतु विशेष योजना प्रारंभ करें ताकि महिलाओं को भी इन योजनाओं का अधिक लाभ मिल सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि हाल ही में उन्होंने टिहरी जिले की लाभार्थी महिलाओं से संवाद किया। उनके द्वारा बताया गया कि सशक्त बहना उत्सव योजना से विपणन में उन्हें काफी मदद मिली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस तरह की योजनाओं के लिए बैंकों से ऋण लेने के लिए सरलीकरण होना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि कई बार देखा गया है कि जो लोग वास्तव में कुछ करना चाहते हैं वे कई बार लोन लेने से वंचित रह जाते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन रोकने हेतु पलायन निवारण आयोग का गठन किया। उन्होंने आह्वान किया कि पर्वतीय क्षेत्रों में ऋण आवंटन हेतु विशेष अभियान चलाया जाए। ऋण जरूरतमंद लोगों को आसानी से मिल सके, इसके लिए बेहतर व्यवस्था की जाए। इस कार्य में बैंकों की बहुत बड़ी भूमिका होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि रिवर्स पलायन की दिशा में सरकार निरंतर कार्य कर रही है, बैंक भी इस कार्य में भागीदार बनें। उन्होंने कहा कि नाबार्ड की ऋण योजना के आवंटन के लिए प्रत्येक बैंक ब्रांच को एक निश्चित टारगेट के साथ काम करना होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के ग्रामीण और पिछड़े इलाकों का विकास जरूरी है, यह हमारे रिवर्स पलायन मिशन के लिए भी अति आवश्यक है। राज्य सरकार लगातार ग्रामीण इलाकों में आधारभूत सुविधाओं, सड़क, कनेक्टिविटी आदि को मजबूत करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार दूरदर्शिता की सोच के साथ उत्तराखण्ड का विकास के लिए कार्य कर रही है। राज्य के शहरी क्षेत्रों के साथ ही ग्रामीण इलाकों का समान रूप से विकास हो, इस दिशा में लगातार कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि रूद्रप्रयाग, बागेश्वर और टिहरी ऋण की कमी वाले जिले हैं। इन तीन जिलों में ऋण आवंटन बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में पीएम- किसान सम्मान निधि स्कीम के 7.60 लाख लाभार्थी हैं और 6.89 लाख किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि पीएम किसान सम्मान निधि के तहत अवशेष किसानों को भी किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सभी को सामूहिक रूप से प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि सरकार आम लोगों के लिए भी सब्सिडी, क्रेडिट लिंक्ड योजनाओं, और ब्याज अनुदान जैसे योजनाओं को लागू कर रही है, जिसके अंतर्गत वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना, दीनदयाल उपाध्याय सहकारिता किसान कल्याण योजना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना जैसी योजनाएं चलाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि बैंक राज्य के सभी किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध करवाने के लिए एक विशेष कैम्पेन चलाएं जिससे ऋण का लाभ किसानों तक समय से पहुंच सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे राज्य की जलवायु और भौगोलिक परिस्थिति बागवानी, ऐरोमेटिक प्लांट्स, मेडिसनल प्लांट्स, डेयरी, फिशरीज, मधुमक्खी पालन, मशरूम पालन तथा जैविक कृषि के लिए सर्वाधिक अनुकूल है। इन क्षेत्रों में ऋण प्रवाह बढ़ाने के लिए भी बैंक विशेष कैंप चला सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा विकसित भारत संकल्प यात्रा का मुख्य उद्धेश्य,सरकार की योजनाओं को उन कमजोर लोगों तक पहुंचाना है। उन्होंने सभी हितधारकों, विभागों व बैंकों से अपील करते हुए कहा कि इस यात्रा में बढ़चढ़ कर भाग लें, लोगों को जागरूक बनाएं तथा सरकार की योजनाओं को आमजन तक पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों की आय दुगुनी करने का लक्ष्य दिया है। राज्य सरकार इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने पिछले दिनों बड़े स्तर पर ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य उत्तराखंड को एक निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित करना था, हमारा यह प्रयास सफल भी रहा। प्रधानमंत्री मोदी ने इस समिट में देश दुनिया के लोगों से विशेष अपील की थी कि वे उत्तराखंड में आकर डेस्टिनेशन वेडिंग करें, अब इसके सकारात्मक परिणाम भी दिख रहे हैं। इस दौरान नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक वीके बिष्ट ने नाबार्ड द्वारा प्रदेश में संचालित विभिन्न गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी, डॉ. धन सिंह रावत, अपर मुख्य सचिव राधा रतूड़ी, आनंद बर्द्धन, सचिव बी.वी.आर.सी पुरूषोत्तम, एच. सी.सेमवाल, एस.एन. पाण्डेय, विभिन्न विभागों एवं बैंकों के प्रतिनिधिगण आदि भी उपस्थित रहे।

गेंद मेले में उमड़ा ग्रामीणों का हुजूम

हरिद्वार, एजेंसी।
क्षेत्र के मां काली मंदिर मैदान में शनिवार को लोक संस्कृति की पहचान गेंद मेला का आगाज हुआ। तीन दिवसीय मेले का उद्घाटन पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद ने किया। मेले में पहले दिन ग्रामीणों का हुजूम उमड़ा।

विशिष्ट अतिथि ब्लॉक प्रमुख बहादराबाद आशा नेगी और अन्य ने दीप जलाकर सांस्कृतिक महोत्सव की शुरुआत की। मेले के पहले दिन समिति की ओर से क्षेत्र के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के बीच खेल प्रतियोगिता कराई गई। स्वामी यतीश्वरानंद ने कहा कि तीन दिन तक चलने वाला यह गेंद मेला यहां की सांस्कृतिक विरासत को संजोए हुए है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड की धरोहर के रूप में पहचान रखने वाले मेले के विकास को और अधिक प्रयास किए जाएंगे।

इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य बृजमोहन पोखरियाल, गगन कर्णवाल, कमलेश द्विवेदी, मो. सफी लोधा, रिहान मलिक, राजेश्वरी देवी, बालम सिंह नेगी, अनिता तड़ियाल, दिनेश बडोला, पूर्व प्रधान खेम सिंह, गीता जोशी, विमल डबराल, पूरन सिंह अधिकारी, गजराज सिंह, प्रकाश डोबरियाल, शैलेंद्र पाठक, चोहल सिंह, नन्दकिशोर सैनी आदि मौजूद रहे। मेले के दौरान कबड्डी, खो-खो, सौ मीटर दौड़, दो सौ मीटर दौड़, पांच सौ मीटर दौड़ कराई गई। खो खो में विजेता टीम अभिनव पब्लिक स्कूल लालढांग रही, सौ मीटर दौड़ में प्रथम मनीष थापा, द्वितीय ललित पाल, व तृतीय ईशान उप्रेती रहे। इसी तरह दो सौ मीटर दौड़ में प्रथम अनुज, द्वितीय रितेश व तृतीय पवन, पांच सौ मीटर दौड़ में प्रथम अंश कुमार, द्वितीय नावेद, तृतीय आदित्य रहे। कबड्डी में सीनियर विजेता टीम अभिनव पब्लिक स्कूल, जूनियर विजेता टीम सेंट जोसेफ स्कूल रसूलपुर रही।

सिरफिरे ने एंबुलेंस में की तोड़फोड़, चालक को पीटा, केस दर्ज

अल्मोड़ा, एजेंसी।
अल्मोड़ा में एक सिरफिरे ने मरीज को उतारकर लौट रही 108 एंबुलेंस में तोड़फोड़ कर दी। वहीं उसने चालक को भी डंडे से पीट दिया। चालक ने किसी तरह अपनी जान बचाई।

अल्मोड़ा के स्याल्दे में एक सिरफिरे ने मरीज को उतारकर लौट रही 108 एंबुलेंस में तोड़फोड़ कर दी। वहीं उसने चालक को भी डंडे से पीट दिया। चालक ने किसी तरह अपनी जान बचाई। उसकी तहरीर पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज हुआ है। वहीं इस घटना में एंबुलेंस को खासा नुकसान पहुंचा है।

बृहस्पतिवार को 108 एंबुलेंस चालक जसपुर निवासी नीरज मिश्रा सीएचसी स्याल्दे में मरीज को उतारकर एंबुलेंस को बैक करने के लिए कुछ दूरी पर गया। मुख्य बाजार से सिर्फ 100 मीटर दूर पैठाना निवासी करन मनराल ने बीच सड़क पर खड़े होकर एंबुलेंस रोक दी।

जैसे की चालक ने ब्रेक लगाया तो उसने डंडे से एंबुलेंस पर वार करना शुरू कर दिया। उसने एंबुलेंस के शीशे तोड़ दिए। इसी बीच एंबुलेंस को तोड़ने के बाद उसने चालक पर भी डंडे से वार कर दिया। इस घटना में उसे गंभीर चोट आई। किसी तरह उसने भागकर अपनी जान बचाई। पीड़ित चालक ने 112 नंबर पर फोन कर घटना की सूचना दी। दूसरे दिन शुक्रवार को चालक ने आरोपी के खिलाफ देघाट थाने पहुंचकर तहरीर दी। थानाध्यक्ष राहुल राठी ने कहा कि तहरीर मिलने के बाद आरोपी के खिलाफ आवश्यक धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पिथौरागढ़, चंपावत में ठंड से बढ़ी मुश्किल

पिथौरागढ़/चंपावत, एजेंसी। शनिवार को पिथौरागढ़ और चंपावत में दिनभर मौसम की आंख मिचौली जारी रही।आसमान में सुबह से ही बादल छाए रहे। दोपहर में कुछ देर के लिए धूप निकली लेकिन अपराह्न बाद फिर से बादल छा गए। इससे लोगों को कड़ाके की ठंड का सामना करना पड़ रहा है।

सीमांत जिला पिथौरागढ़ में लंबे समय से बारिश नहीं हुई है। उच्च हिमालयी क्षेत्र में इस बार अभी तक बर्फबारी भी नहीं होने से चोटियां काली दिखाई दे रही हैं। किसान फसलों के लिए आसमान की ओर उम्मीद लगाए हैं। शनिवार को सुबह से ही आसमान बादलों से पटा रहा। प्रात~आठ बजे बाद हल्की धूप खिली। शाम होते-होते एक बार फिर से आसमान में बादल छाने लगे। जिले के मुनस्यारी, अस्कोट, डीडीहाट, कनालीछीना, बेड़ीनाग, गंगोलीहाट आदि जगहों पर ठंड बढ़ गई है। कई जगहों पर लोग सुबह-शाम आग का सहारा ले रहे हैं। आसमान में घने बादल देख बारिश की संभावना जताई जा रही है।

चंपावत जिला मुख्यालय में मौसम बदलने के लिए साथ ही ठंड में इजाफा हो गया है। शनिवार को सुबह हल्के बादलों के बीच गुनगुनी धूम का आनंद लोगों ने लिया। कुछ देर बाद पूरे आसमान में बादल छा गए। बादल छाने के साथ ही मौसम में ठंडक बढ़ गई। बाजार में भी लोगों की चहल पहल कम हो गई।

साढ़े पांच किलो से ज्यादा चरस के साथ छह तस्कर गिरफ्तार

लोहाघाट (चंपावत) /पिथौरागढ, एजेंसी।
पुलिस के अभियान चलाने और ग्रामीणों के विरोध-प्रदर्शन के बावजूद पहाड़ पर नशे की खेप पहुंच ही जा रही है। शनिवार को चंपावत और पिथौरागढ़ में पुलिस और एसओजी ने संयुक्त रूप से अभियान चलाते हुए चरस की बड़ी खेप बरामद की। चंपावत के लोहाघाट में जहां 3.735 किलो चरस के साथ चार तस्करों को दबोचा गया। वहीं पिथौरागढ़ के धारचूला में टीम ने 1.908 किलो चरस के साथ दो तस्करों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज कर न्यायालय में पेश किया जा रहा है।

लोहाघाट में पुलिस और एसओजी ने संयुक्त रूप से चंपावत मार्ग पर देवराड़ी बैंड के पास चेकिंग के दौरान चंपावत की ओर जा रहे चार लोगों को रोककर तलाशी ली। तलाशी में अनुज कुमार निवासी मोहल्ला डालचंद थाना पीलीभीत (यूपी) के कब्जे से 938 ग्राम, सिराज अहमद निवासी मोहल्ला यारखान न्यूरिया हुसैनपुर थाना न्यूरिया (यूपी) के कब्जे से 912 ग्राम, भरत सिंह निवासी मोहल्ला बल्लभनगर थाना सुनगढ़ी के कब्जे से 934 ग्राम और राजवीर सिंह निवासी मोहल्ला छत्रपति शिवाजी कॉलोनी थाना सुनगढ़ी के कब्जे से 951 ग्राम चरस बरामद हुई।

चारों को एनडीपीएस एक्ट में गिरफ्तार कर पूछताछ की जा रही है। एसपी अजय गणपति ने कहा कि मादक पदार्थों की तस्करी के लिए अभियान लगातार जारी रहेगा। नशे के कारोबार करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

इधर पिथौरागढ़ के धारचूला में सीओ धारचूला परवेज अली, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली धारचूला कुंवर सिंह रावत और प्रभारी एसओजी एसआई हेम चंद्र तिवारी के नेतृत्व में टीम ने संयुक्त अभियान चलाया। मुखबिर की सूचना पर धारचूला बाजार अनवर तिराहा के पास से योगेश सिंह जेठा (27) निवासी घटधार और महेश सिंह तितियाल (19) निवासी कालिका हाल निवासी भोटिया पड़ाव (धारचूला) को 1.908 किलो चरस के साथ गिरफ्तार किया। सीओ परवेज अली ने बताया कि दोनों आरोपियों के खिलाफ धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट में केस दर्ज कर लिया गया है।

दाग अच्छे नहीं है और अब जो गंदगी करेगा तो कार्रवाई होगी

पिथौरागढ़, एजेंसी। कलक्ट्रेट परिसर में गंदगी फैलाने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। इसके निर्देश एडीएम ने जारी कर दिए हैं। इसके अलावा कलक्ट्रेट परिसर की सीढ़ियों और दीवारों पर गुटखे और पान की पीक से लाल हुई दीवारों की पुताई का कार्य भी शुरू कर दिया है।

एडीएम का कहना है कि सरकारी कार्यालयों और परिसर को साफ और स्वच्छ रखना प्रत्येक कर्मचारी और अधिकारी की जिम्मेदारी है। उनका कहना है कि जिन विभागों की सीढ़ियों और कोनों में गंदगी मिलेगी और गुटखे, सिगरेट के रैपर मिलेंगे उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा एक टीम से कलक्ट्रेट परिसर के पास स्थित गुटखे और पान की दुकानों का निरीक्षण कर गुटखा और सिगरेट पीने वालों की सूचना देने को कहा गया है। एडीएम के निर्देशों का विभाग पालन भी कर रहे हैं। गलियों में गुटखे के दागों को हटाने के लिए पुताई कराई जा रही है।

कलक्ट्रेट स्थित कैंटीन और परिसर में गुटखा, सिगरेट और अन्य नशा पान करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। कैंटीन में सिगरेट पीने वालों पर 500 रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। सीसीटीवी के माध्यम से ऐसे कर्मचारियों और लोगों पर नजर रखी जाएगी।

नगर पालिका की ओर से मीट मंडी में नई दुकानों का निर्माण कार्य शुरू कर दिया है। इन नई दुकानों को नगर पालिका सीमा में मीट बेचने वाले व्यापारियों को आवंटित किया जाएगा। जल्द ही मीट की दुकानों को मंडी में शिफ्ट किया जाएगा। पालिका की ओर से वर्षों पूर्व नगर में मीट मंडी बनाई गई थी। बाद में कुछ लोगों ने हिटलर मार्केट, ट्रेजरी के पास, जयंती भवन, बाड़ीगाड़ के पास नगर सीमा के बाहर भी मीट की दुकानें खोल दीं। मीट मंडी के व्यापारियों ने विरोध कर नगर सीमा में खुली सभी दुकानों को एक स्थान पर मीट मंडी में लाने की मांग की थी। इस पर पूर्व एसडीएम केएन गोस्वामी ने नगर सीमा में खुली मीट की दुकानों को मंडी में लाने की पहल की थी।

पिथौरागढ़ में सीसीटीवी की मदद से होंगे चालान

पिथौरागढ़, एजेंसी। नगर में कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पुलिस ने नगर के प्रवेश द्वार सहित प्रमुख हिस्सों में हाई रेजुलेशन सीसीटीवी कैमरे लगवा दिए हैं। भविष्य में पुलिस इन कैमरों की मदद से यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों का चालान करेगी। साथ ही कोई अपराध होने पर भी पुलिस को अपराधियों को पकड़ने में मदद मिलेगी।

एसपी लोकेश्वर सिंह की पहल पर पिथौरागढ़ नगर और जिले के अन्य प्रवेश द्वारों पर 41 हाई रेजुलेशन (उच्च गुणवत्ता) सीसीटीवी लगाए जा रहे हैं। वर्तमान में नगर के प्रमुख तिराहे, चौराहे, नगर के प्रवेश द्वार सहित कई अन्य हिस्सों में 15 सीसीटीवी लगा दिए गए हैं। 26 सीसीटीवी लगाने का कार्य किया जा रहा है।

नगर में सीसीटीवी लगाने का मुख्य उद्देश्य यातायात और कानून व्यवस्था को बनाए रखना है। भविष्य में पुलिस इन सीसीटीवी के माध्यम से यातायात व्यवस्था बाधित करने वालों, बिना हेलमेट, ट्रिपलिंग राइडिंग बाइक सवारों का चालान करेगी। इसके अलावा नगर में राहगीरों से छीना-झपटी या चोरी करने वाले लोगों के खिलाफ भी कार्रवाई करने में मदद मिलेगी।

जिला मुख्यालय में सुरक्षा के मद्देनजर प्रमुख चौराहों और सार्वजनिक स्थानों पर लगाए गए अधिकतर सीसीटीवी शोपीस बनकर रह गए हैं। इनकी मरम्मत नहीं होने से अपराध पर नियंत्रण रख पाना आसान नहीं है।

उच्च हिमालयी क्षेत्र में कनार के घी से तंदुरुस्त रहेगी सेहत

पिथौरागढ़, एजेंसी।
सीमांत जिले के उच्च हिमालयी क्षेत्र के गांव कनार का प्रसिद्ध घी अब लोगों को सेहतमंद रखेगा। भरपूर पौष्टिकता से भरे घी को दुग्ध संघ ने बाजार में बिक्री के लिए उतार दिया है। बंगापानी तहसील के बरम क्षेत्र का गांव कनार छिपलाकेदार की तलहटी पर बसा है। यह क्षेत्र जैव विविधता और जड़ी-बूटी उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

कनार का घी पहले काफी प्रसिद्ध था। 1990 तक यहां का घी अन्य जगहों पर टीन में भरकर घोड़ों के माध्यम से पहुंचाया जाता था।

अभी भी डीडीहाट और धारचूला के कई क्षेत्रों में कनार के घी का ही प्रयोग होता है। अब दुग्ध संघ ने कनार के घी को बढ़ावा देने के लिए आंचल कनार घी नाम से इसे बाजार में उतारा है। दुग्ध संघ के प्रबंधक हरीश आर्या ने बताया कि दिसंबर में 150 किलो घी की बिक्री की गई है। ग्रामीणों से घी 700 रुपये प्रति किलो खरीदा जा रहा है। बाद में इसे शुद्ध और पैकिंग कर 950 रुपये में एजेंट को उपलब्ध कराया जा रहा है। उपभोक्ताओं को एक हजार रुपये प्रति किलो की दर से यह बेचा जा रहा है। आर्या ने बताया कि कनार गांव की गाय उच्च हिमालयी क्षेत्र में घास के साथ जड़ी-बूटी और अन्य औषधियां भी खाती हैं। इस वजह से यहां का घी काफी पौष्टिक माना जाता है। यह घी दिखने में काले रंग का होता है। आंचल का सामान्य घी 700 रुपये किलो की दर से बेचा जा रहा है।

जिले में इस वर्ष दूध का उत्पादन पिछले साल की अपेक्षा 14 प्रतिशत अधिक हुआ है। दुग्ध संघ की 211 समितियों से 9918 सदस्य दूध उत्पादन से जुड़े हैं। दुग्ध संघ प्रबंधक हरीश चंद्र आर्या ने बताया कि पिछले साल दिसंबर में 5167 जबकि इस वर्ष 5895 लीटर दूध का उत्पादन हुआ।

चंपावत मॉडल कॉलेज का काम शुरू

चंपावत, एजेंसी। एसएसजे विश्वविद्यालय अल्मोड़ा का चंपावत परिसर जल्द ही मॉडल कॉलेज के रूप में नजर आएगा। प्रथम चरण में बालिका छात्रावास और आईटी लैब निर्माण के लिए सात करोड़ की राशि जारी हो गई है। कार्यदायी संस्था ने करीब 10 फीसदी निर्माण भी कर लिया है। मुख्यमंत्री की विधानसभा में 2025 में क्षेत्र के युवा मॉडल कॉलेज में पढ़ाई कर सकेंगे। शासन से प्रथम चरण में उत्तराखंड कृषि विपणन बोर्ड मंडी भवन को निर्माण कार्य के लिए 7.46 करोड़ रुपये जारी हो चुके हैं। प्रथम चरण में 50 बेड के बालिका छात्रावास और आईटी लैब का निर्माण किया जा रहा है। इसके निर्माण की अवधि मार्च 2025 है।

केजरीवाल ने एनसीसी गणतंत्र दिवस परेड कैंप का किया निरीक्षण

एनसीसी के प्रशिक्षण का उद्देश्य वर्तमान समय की चुनौतियों के साथ तालमेल बैठाकर कैडेट्स का सर्वांगीण विकास करना है-केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को दिल्ली कैंट में डीजी एनसीसी गणतंत्र दिवस परेड कैंप का निरीक्षण किया। इस दौरान सीएम ने देश को दिए गए एनसीसी के महत्वपूर्ण योगदान को जमकर सराहा। कैडेट्स को संबोधित करते हुए सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि एनसीसी अनुशासन और साहस के साथ देश की सेवा करने का अवसर प्रदान करता है। एनसीसी ने अपने देश के युवाओं को ऊजार्वान, उद्यमी और एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभाई है। एनसीसी प्रशिक्षण का उद्देश्य देश की वर्तमान चुनौतियों के साथ तालमेल बैठाकर कैडेट्स का सर्वांगीण विकास करना है। सीएम ने समाज में एनसीसी के योगदान का जिक्र करते हुए कहा कि एनसीसी कैडेट्स ने देश के अंदर नशा मुक्ति, पृथ्वी बचाओ, स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ, पर्यावरण बचाओ समेत कई मुद्दों पर लोगों को जागरूक किया है और मुझे पूरा विश्वास है कि सभी कैडेट्स देश और एनसीसी को गौरवांवित करेंगे।

दिल्ली कैंट में डीजी एनसीसी गणतंत्र दिवस परेड कैंप के निरीक्षण के दौरान राष्ट्रीय कैडेट कोर महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीरपाल सिंह समेत अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। इस दौरान सीएम अरविंद केजरीवाल ने कैंप में आयोजित विभिन्न गतिविधियों को देखा। मुख्यमंत्री को गेट नंबर-1 से एनसीसी कैंप एरिया तक पायलट किया गया और डीजी एनसीसी अगवानी की गई। सबसे पहले सीएम अरविंद केजरीवाल को गार्ड ऑफ ऑनर की सलामी दी गई। इसके बाद, मुख्यमंत्री ने एनसीसी बैंड का आनंद लिया और फ्लैग एरिया का दौरा किए। इस कार्यक्रम का समापन एनसीसी गीत की प्रस्तुति के बाद राष्ट्रगान के साथ हुआ। सीएम अरविंद केजरीवाल ने कैडेट्स के साथ बातचीत भी की। इस दौरान सीएम केजरीवाल को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया और कैडेट्स के साथ ग्रुप फोटो हुआ। डीजी एनसीसी गणतंत्र दिवस परेड कैंप को संबोधित करते हुए अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमारे देश के भविष्य के रूप में खड़े एनसीसी कैडेट्स के बीच उपस्थित होना मेरे लिए बहुत वर्ग की बात है। कैडेट्स के पहनावे, चाल और परेड से मैं बेहद प्रभावित हूं और इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। सीएम ने नव वर्ष 2024 की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि एनसीसी अनुशासन के गुणों, साहस की भावना और राष्ट्र सेवा के अवसर प्रदान करता है। हमारा देश अपनी विविध संस्कृति, विभिन्न भाषाओं और धर्मों के साथ विविधता में एकता का एक उत्कृष्ट उदाहरण पेश करता है। एकता और अनुशासन के अपने आदर्श वाक्य के साथ एनसीसी भारत के संविधान में निहित देशभक्ति और धर्म निरपेक्ष मूल्यों को मजबूत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है। एनसीसी ने देश के युवाओं को ऊजार्वान, उद्यमी और जिम्मेदार नागरिक बनाने में भी अहम भूमिका निभाई है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मैं एक भारत श्रेष्ठ भारत, विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर और स्वतंत्रता दिवस कैंप जैसे विभिन्न शिविरों से अवगत हूं, जिनका उद्देश्य विभिन्न राज्यों से आने वाले विभिन्न धर्मों व संस्कृतियों से संबंधित कैडेटों के बीच एकता की भावना को जगाना और समाहित करना है। एनसीसी के कैडेट थल सेना, नौ सेना और वायु सेना के कैंपों में जाकर विशेष तरह का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। एनसीसी के प्रशिक्षण का उद्देश्य वर्तमान समय की चुनौतियों के साथ तालमेल बैठाकर कैडेट्स का सर्वांगीण विकास करना है। साहसिक और खेल गतिविधियां एनसीसी प्रशिक्षण का एक अभिन्न अंग हैं। एनसीसी की टीमें जवाहर लाल नेहरू हॉकी टूनार्मेंट, सुब्रतो कप, अखिल भारतीय नौकायन रेगाटा और अखिल भारतीय जीवी मावलंकर शूटिंग चैंपियनशिप जैसे विभिन्न खेल टूनार्मेंटों में भाग लेती रही हैं।

सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि एनसीसी के जरिए चुने गए कैडेट्स को कई देशों के साथ यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम (वाईईपी) के जरिए विदेश जाने का मौका मिलता है। इससे कैडेट्स को मेजबान देश की संस्कृति और परंपराएं सीखने के साथ-साथ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों का एम्बेसेडर बनने का भी मौका मिलता है।

उन्होंने कहा कि एनसीसी कैडेट्स ने नशा मुक्ति, पृथ्वी बचाओ, स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ, पर्यावरण बचाओ और दहेज उत्पीड़न समेत कई विषयों पर समाज में जागरूकता फैलाने में अहम योगदान दिया है। ऐसा कोई सामाजिक कार्य या जागरूकता अभियान नहीं है, जिसमें एनसीसी ने अपनी मिसाल नहीं छोड़ी है। इस दौरान सीएम ने एनसीसी कैडेट्स और उनके प्रशिक्षकों को समाज के प्रति निस्वार्थ सेवा के लिए बधाई दी और कहा कि इसी उत्साह के साथ आप देशवासियों के लिए एक रोल मॉडल बनेंगे और राष्ट्र को नई ऊंचाइयों तक लेकर जाएंगे।

सीएम अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि मुझे यह जानकर काफी खुशी हुई कि एनसीसी अब देश के तटीय क्षेत्रों, सीमा क्षेत्रों और वामपंथी क्षेत्रों में अपनी पहुंच को मजबूती से बढ़ाने की कोशिश कर रही है, ताकि इन दूरस्थ इलाकों में रह रहे युवाओं को भी प्रोत्साहित किया जा सके। मुझे यकीन है कि एनसीसी शिक्षा और ड्रिल के साथ इन युवाओं में ऊर्जा भरने का काम करेगी और इन्हें राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देने वाले देश के श्रेष्ठ नागरिक बनाने में सफल होगी।

सीएम ने अपने संबोधन के अंत में कहा कि मैं इस कैंप के लिए चुने गए सभी कैडेट्स को बधाई देता हूं। मुझे पता है कि आप सभी ने यहां तक आने के लिए बहुत सी कठिनाइयों का सामना किया है। सभी कैडेट्स एक मुश्किल चयन प्रक्रिया को पास करके यहां तक पहुंचे हैं। मुझे यकीन है कि आप सभी देश और एनसीसी को गौरवान्वित करेंगे। मैं आप सभी को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में ड्राइंग प्रतियोगिता आयोजित

- 21 जनवरी को गणतंत्र दिवस उत्सव में घोषित होगा परिणाम

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

पश्चिमी दिल्ली। हर साल की भांति इस साल भी पश्चिमी दिल्ली के जय विहार, बपरोला में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में ड्राइंग कंपटीशन हुआ जिसका थीम- मेरा भारत महान, था। इसमें हर वर्ग के स्कूली बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पंचकोसी संस्था द्वारा जय विहार निवासियों की मदद से गणतंत्र दिवस उत्सव का आगाज सफलतापूर्वक हुआ। आगामी 21 जनवरी को स्थानीय छठ पूजा स्थल में आयोजित मुख्य कार्यक्रम के दौरान इसका परिणाम घोषित किया जाएगा। पिछले 10 सालों से लगातार यह कार्यक्रम आयोजित होता आ रहा है जिसमें क्विज प्रतियोगिता और देशभक्ति रंगारंग कार्यक्रम आयोजित होता है। इस बार भी इस उत्सव को लेकर बच्चों अभिभावकों, शिक्षकों एवं स्थानीय गणमान्य लोगों में काफी उत्साह देखा जा रहा है। देश भक्ति से भरा इस कार्यक्रम में कई सम्मानित अतिथियों के आने की संभावना है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने विवेक बिंद्रा से जुड़े यूट्यूब चैनल को संदीप माहेश्वरी को बदनाम करने से रोका

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली उच्च न्यायालय ने सोमवार को उद्यमी विवेक बिंद्रा के यूट्यूब चैनल पार्टनर विकास कोटनाला के खिलाफ यूट्यूबर और प्रेरक वक्ता संदीप माहेश्वरी के खिलाफ कोई भी अपमानजनक सामग्री पोस्ट करने पर रोक लगा दी। यह फैसला न्यायमूर्ति प्रतीक जालान द्वारा कोटनाला और बिंद्रा के बीच प्रथमदृष्टया संबंध पाए जाने के बाद आया है। यह नोट किया गया कि कोटनाला के वीडियो 22 दिसंबर, 2023 के सिविल कोर्ट के आदेश का उल्लंघन थे, जिसने माहेश्वरी और बिंद्रा दोनों को एक-दूसरे के खिलाफ अपमानजनक बयान देने से रोक दिया था। माहेश्वरी का प्रतिनिधित्व कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता संदीप सेठी ने तर्क दिया कि कोटनाला माहेश्वरी के खिलाफ आरोप लगाने के लिए बिंद्रा से प्रभावित थे।

दो वीडियो का संदर्भ दिया गया, जहां कोटनाला ने माहेश्वरी पर बिंद्रा से पैसे ऐंठने का प्रयास करने और बाजार में बिंद्रा के खिलाफ अभियान चलाने का आरोप लगाया।

सुनवाई के दौरान, न्यायमूर्ति जालान ने सोशल मीडिया पर बिगड़ती बहस पर टिप्पणी करते हुए कहा, मेरा इरादा किसी अनादर का नहीं है, लेकिन यह एक प्रकार का युद्ध है, जो इन यूट्यूब चैनलों पर शुरू हो रहा है।

अदालत ने निष्कर्ष निकाला कि माहेश्वरी ने प्रथमदृष्टया मामला प्रस्तुत किया और निषेधाज्ञा के बिना अपूरणीय क्षति हो सकती है।

इसलिए, कोटनाला के खिलाफ एक आदेश पारित किया गया, जिसमें उन्हें माहेश्वरी के खिलाफ ऑनलाइन या ऑफलाइन अपमानजनक सामग्री प्रकाशित करने से रोक दिया गया।

कानूनी लड़ाई माहेश्वरी द्वारा 11 दिसंबर, 2023 को बिग स्कैम एक्सपोज्ड शीर्षक से जारी एक वीडियो से शुरू हुई, जिसमें 10-दिवसीय एमबीए पाठ्यक्रम से संबंधित घोटाले में बिंद्रा की संलिप्तता का आरोप लगाया गया था। झगड़ा तेज हो गया, इससे दोनों पक्षों की ओर से लाखों लोगों की राय सामने आई और कानूनी हस्तक्षेप हुआ।

डिस्कॉर्ड कर्मचारी ने खुद को नौकरी से निकाले जाने का वीडियो किया वायरल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

लोकप्रिय टीनएज चैट प्लेटफॉर्म डिस्कॉर्ड की एक कर्मचारी ने कंपनी द्वारा नौकरी से निकाले जाने का एक वीडियो साझा किया है। कंपनी में उत्पाद प्रमुख क्लो शिह ने उस क्षण को रिकॉर्ड किया जब उन्हें एहसास हुआ कि वह भी उन 17 प्रतिशत कार्यबल में शामिल थीं, जिन्हें कंपनी ने पिछले सप्ताह नौकरी से निकाले जाने की घोषणा की थी।

डिस्कॉर्ड ने विभिन्न विभागों में अपने 17 प्रतिशत कार्यबल या लगभग 170 कर्मचारियों को नौकरी से निकालने की घोषणा की। वर्ज द्वारा प्राप्त एक आंतरिक ज्ञापन में, डिस्कोर्ड के सीईओ जेसन सिट्रोन ने 11 जनवरी की देर रात हुई सर्वदलीय बैठक में इस निर्णय के लिए ओवर-हायरिंग को जिम्मेदार ठहराया।

सिट्रोन ने मेमो में लिखा, हम तेजी से बढ़े और अपने कार्यबल को और भी तेजी से बढ़ाया, 2020 के बाद से 5 गुना की वृद्धि हुई।

शिह ने एक्स पर वीडियो साझा करते हुए कहा कि यह अनुभव टेक्स्ट पर ब्रेक-अप जैसा था। उन्होंने क्लिप में यह भी बताया, मैंने भी अभी एक घर खरीदा है! वीडियो में, शिह ने नौकरी से निकाले जाने के बाद कंपनी से प्राप्त मेल साझा किया। ईमेल में लिखा है, प्रिय चोए, भारी मन से हम आपको सूचित करते हैं कि हमारी कंपनी-व्यापी कटौती से आपकी भूमिका प्रभावित हुई है और डिस्कोर्ड के साथ आपका रोजगार समाप्त हो रहा है।

इस बीच, एक गूगल सॉफ्टवेयर इंजीनियर, जो लगभग दो दशकों से कंपनी के साथ था, को नौकरी में कटौती के नवीनतम दौर के तहत निकाल दिया गया है। पिछले हफ्ते, टेक दिग्गज ने पुष्टि की थी कि उसने हार्डवेयर, कोर इंजीनियरिंग और गूगल असिस्टेंट टीमों में कई सौ नौकरियों में कटौती की है।

डॉ. तारिणी तनेजा ने बताए एनीमिया से बचने के उपाय

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली विधानसभा के माननीय स्पीकर रामनिवास गोयत जी के विशेष आव्हान पर देश के वरिष्ठ ईएनटी सर्जन व आयुष मंत्रलय भारत सरक्रस के सदस्य डॉक्टर एम के तनेजा सीनियर गाइनेकोलॉजिस्ट एवं आईगीएक स्पेशलिस्ट डॉक्टर तारिणी तनेजा ने जीवन शरद शतम की गाधार बना अपना विषय प्रस्तुत किया आईवीएफ स्पेशलिस्ट डॉ सारिणी तनेजा ने विश्व की सबसे गंभीर अनेकों बीमारियों की जड़ एनीमिया जिसमे हीमोग्लोबिन की मात्रा कम हो जती है जिससे शरीर के सभी अंगों को पूर्ण रूप से ऑक्सीजन नहीं मिल पाती। एनीमिया केवल गरीव वर्ग तक ही सीमित नहीं है अमीर वर्ग भी इस्ली चपेट में है महालय में कुपोषण का परिणाम है वा तारिणी ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा मॉडर्न युग में जबकि हम स्पेस में पहुँच चुके है पर एनीमिया पर नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैंकि समाज में जंक फूड बाजारु साने कर पतन बहुत ज्यादा बढ़ चुका है। एनीमिया स्ववंजनिक चिंता का विषय बन चुकी है ये विशेष तौर पर बच्चों, यवितिकी एवं गर्भवती महिलाओ करे असित करती है। एनीमिया की नियंत्रण करने की टिप्स में डा तारिणी ने सभी को जागरुक करते भगवान कृष्ण ने गीता में स्वस्थ रहने के उपाय बताए हुए कहा आयरन की पूर्ति के लिए जी राम्जी एवं फल काटने पर काले पड़ जाते है जैसे आलु, बेगन, टमाटर, करहल और फल जैसे सेब अनार केला एवं खट्टे फस सतरा आवला और मेरी प्रोक्तस जरूर खाएं उन्होंने लंच एवं डिनर संतरा पर विशेष जोर दिया।

बुराड़ी अस्पताल के सफाई कर्मचारियों ने किया विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

सफाई कामगार यूनियन (एसकेयू) ने सोमवार को बुराड़ी अस्पताल के सफाई कर्मचारियों के साथ मिलकर उनके लगातार उत्पीड़न के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। सफाई कामगार यूनियन (एस.के.यू.) के कार्यकारिणी सदस्य हरीश गौतम ने बताया कि वेतन भुगतान अधिनियम 1936 के प्रावधान के बावजूद सफाई कर्मचारियों को उनके वेतन का भुगतान नहीं किया गया है। अधिनियम के अनुसार अनिवार्यतः हर महीने की सात तारीख तक वेतन का भुगतान करना होता है। इस संदर्भ में यह ज्ञात हो कि सफाई कर्मचारी समाज के सबसे सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित हिस्से से आते हैं और इसलिए वेतन का समय पर भुगतान न होना उन्हें ऋण-जाल की स्थिति में फंसा देता है। इस प्रकार, अधिनियम के अनिवार्य प्रावधान के बावजूद, वेतन का भुगतान न कर सफाई कर्मचारियों को जानबूझकर प्रताड़ित किया जा रहा है। ज्ञात हो कि भ्रष्ट बुराड़ी अस्पताल प्रशासन और ठेका कंपनी की साँठ-गाँठ से अस्पताल में चल रहे भ्रष्टाचार, शोषण और यौन उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने वाले कामगारों को चुप कराने की कोशिश के कारण ही यह किया जा रहा है। इसके अलावा, ठेका कंपनी द्वारा कामगारों को धमकाया जा रहा है और मनमाने ढंग से और जबरदस्ती उनको अस्पताल से स्थानांतरित करने की भी कोशिश की जा रही है। जो कामगार कंपनी के इस मनमाने आदेश के खिलाफ बोल रहे हैं उन्हें नौकरी से निकालने की धमकी दी जा रही है। यह घटनाक्रम विशेष रूप से चिंताजनक हैं क्योंकि यह माननीय स्वास्थ्य मंत्री के कार्यालय के हस्तक्षेप के बावजूद हो रहा है। इस संबंध में सफाई कामगार यूनियन ने दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री को पत्र लिख कर कहा है कि सफाई कर्मचारी कल से अस्पताल में सफाई का काम बंद करेंगे अगर उनके वेतन का भुगतान नहीं किया जाता है, और साथ ही, भ्रष्ट अस्पताल अधिकारियों और काट्रैक्ट कंपनी, और भ्रष्टाचार और अपराध में शामिल सभी लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की भी मांग उठाई है।

ड्रग्स तस्कर से नशे का सामान बरामद

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली जिला पुलिस की नारकोटिक्स स्क्वाड ने ड्रग तस्कर को गिरफ्तार कर बड़ी मात्रा में नशे का सामान बरामद किया है। आरोपी कुलदीप के खिलाफ आंबेडकर नगर थाने में केस दर्ज किया गया है। आरोपी के पास से 45 फेनिरामाइन मैलेट इंजेक्शन की शीशियां, 37 सिंगल सीरिंज, 21 स्टेराइल सिंगल यूज सुई, 416 ग्राम गांजा, 20 खाली प्लास्टिक पाउच और पीले और भूरे रंग का बैग बरामद हुआ है। पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान ने बताया कि दक्षिणी दिल्ली स्थित जेजे कलस्टर इलाके में ड्रग्स की आपूर्ति की जाने की शिकायतें मिल रही थी। इंस्पेक्टर छोटू राम की टीम ने आरोपियों की जानकारी जुटानी शुरू की। इस दौरान दक्षिणपुरी में एक तस्कर के आने की सूचना मिली। 13 जनवरी को पुलिस ने एक शख्स को संदिग्ध बैग ले जाते हुए देखा। पुलिस ने उसे रोका और बैग की जांच की। बैग में बड़ी मात्रा में नशा करने का सामान बरामद हुआ। पुलिस ने बैग जब्त कर आरोपी कुलदीप को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी पर पहले भी मालवीय नगर और सीआर पार्क में केस दर्ज हैं।

22 जनवरी को घोषित किया जाए सार्वजनिक अवकाश : बिधूड़ी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने दिल्ली सरकार से मांग की है कि सोमवार 22 जनवरी को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाए। उन्होंने कहा कि सदियों के इंतजार के बाद इस दिन अयोध्या में रामलला की मूर्ति स्थापना और प्राण प्रतिष्ठा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों की जा रही रही है। पूरा राष्ट्र इस दिन को एक बड़े उत्सव के रूप में मनाने की तैयारी कर चुका है। इसलिए उस दिन सार्वजनिक अवकाश घोषित करके लोगों को कार्यक्रम के लाइव प्रसारण देखने और खुशियां मनाने का अवसर दिया जाना चाहिए। बिधूड़ी इससे पहले दिल्ली सरकार से यह आग्रह भी कर चुके है कि 22 जनवरी को ड्राई डे घोषित करके शराब की सभी दुकानों को बंद किया जाए और मांस की दुकानों को भी बंद करने का आदेश दिया जाए। उन्होंने कहा कि इस दिन सभी मंदिरों में दीपमाला होगी और पूजा-अर्चना होगी। पूरा वातावरण राममय हो जाएगा। ऐसे में मांस और मदिरा नहीं बिकनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इन दिनों मंदिरों के भीतर की सफाई के लिए भाजपा सफाई अभियान चला रही है लेकिन मंदिरों के आसपास की सफाई का जिम्मा नगर निगम को लेना चाहिए। इस दिन लाखों लोग मंदिरों में आएंगे और अगर सफाई नहीं हुई तो उन्हें बहुत असुविधा होगी। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि भाजपा के मंदिरों के भीतर की सफाई अभियान को देखते हुए अब आम आदमी पार्टी को भी सुंदरकांड और हनुमान चालीसा की याद आ गई है। मगर, इससे पहले आम आदमी पार्टी को प्रायश्चित करना चाहिए। मंत्री रहते हुए एक आप विधायक ने जिस तरह हिंदू देवी-देवताओं का अपमान किया, उस पर आज तक आम आदमी पार्टी ने माफी नहीं मांगी। वे मंदिरों में जाकर माफी मांगें और उस नेता को पार्टी से निकालें। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनके मंत्री अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण का विरोध करते रहे हैं। इसके लिए भी उन्हें प्रायश्चित करना होगा। उन्होंने कहा कि अगर आप नेताओं में भगवान के प्रति आस्था है तो पहले प्रायश्चित करना चाहिए वरना इस तरह सुंदरकांड का पाठ या हनुमान चालीसा पढ़ने की घोषणा करने को जनता पाखंड ही मानेगी। बिधूड़ी ने कहा कि केजरीवाल सरकार को यदि सच्चा प्रायश्चित करना है तो मंदिरों के पुजारियों और उनके सहायकों के लिए भी उसी तरह वेतन की घोषणा करें जिस तरह वह मस्जिदों के इमामों और उनके सहायकों को कई सालों से वेतन दे रही है।

मुख्यमंत्री ने एनसीसी गणतंत्र दिवस परेड कैंप का किया निरीक्षण

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को दिल्ली कैंट में डीजी एनसीसी गणतंत्र दिवस परेड कैंप का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने ने देश को दिए गए एनसीसी के महत्वपूर्ण योगदान को सराहा। कैडेट्स को संबोधित करते हुए केजरीवाल ने कहा कि एनसीसी अनुशासन और साहस के साथ देश की सेवा करने का अवसर प्रदान करता है। एनसीसी ने अपने देश के युवाओं को ऊजार्वान, उद्यमी और एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभाई है। एनसीसी प्रशिक्षण का उद्देश्य देश की वर्तमान चुनौतियों के साथ तालमेल बैठाकर कैडेट्स का सर्वांगीण विकास करना है। सीएम ने समाज में एनसीसी के योगदान का जिक्र करते हुए कहा कि एनसीसी कैडेट्स ने देश के अंदर नशा मुक्ति, पृथ्वी बचाओ, स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ, पर्यावरण बचाओ समेत कई मुद्दों पर लोगों को जागरूक किया है और मुझे पूरा विश्वास है कि सभी कैडेट्स देश और एनसीसी को गौरवांवित करेंगे। दिल्ली कैंट में डीजी एनसीसी गणतंत्र दिवस परेड कैंप के निरीक्षण के दौरान राष्ट्रीय कैडेट कोर महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीरपाल सिंह समेत अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। इस दौरान मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कैंप में आयोजित विभिन्न गतिविधियों को देखा। मुख्यमंत्री को गेट नंबर-1 से एनसीसी कैंप एरिया तक पायलट किया गया और डीजी एनसीसी अगवानी की गई। सबसे पहले केजरीवाल को गार्ड ऑफ ऑनर की सलामी दी गई। इसके बाद उन्होंने एनसीसी बैंड का आनंद लिया और फ्लैग एरिया का दौरा किए। इस कार्यक्रम का समापन एनसीसी गीत की प्रस्तुति के बाद राष्ट्रगान के साथ हुआ। केजरीवाल ने कैडेट्स के साथ बातचीत भी की। इस दौरान सीएम केजरीवाल को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया और कैडेट्स के साथ ग्रुप फोटो हुआ।

ड्रग्स तस्कर से नशे का सामान बरामद

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दक्षिणी दिल्ली जिला पुलिस की नारकोटिक्स स्क्वाड ने ड्रग तस्कर को गिरफ्तार कर बड़ी मात्रा में नशे का सामान बरामद किया है। आरोपी कुलदीप के खिलाफ आंबेडकर नगर थाने में केस दर्ज किया गया है। आरोपी के पास से 45 फेनिरामाइन मैलेट इंजेक्शन की शीशियां, 37 सिंगल सीरिंज, 21 स्टेराइल सिंगल यूज सुई, 416 ग्राम गांजा, 20 खाली प्लास्टिक पाउच और पीले और भूरे रंग का बैग बरामद हुआ है। पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान ने बताया कि दक्षिणी दिल्ली स्थित जेजे कलस्टर इलाके में ड्रग्स की आपूर्ति की जाने की शिकायतें मिल रही थी। इंस्पेक्टर छोटू राम की टीम ने आरोपियों की जानकारी जुटानी शुरू की। इस दौरान दक्षिणपुरी में एक तस्कर के आने की सूचना मिली। 13 जनवरी को पुलिस ने एक शख्स को संदिग्ध बैग ले जाते हुए देखा। पुलिस ने उसे रोका और बैग की जांच की। बैग में बड़ी मात्रा में नशा करने का सामान बरामद हुआ। पुलिस ने बैग जब्त कर आरोपी कुलदीप को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी पर पहले भी मालवीय नगर और सीआर पार्क में केस दर्ज हैं।

मकर संक्रांति मिलन समारोह एवं दही चूड़ा भोज का हुआ आयोजन

नई दिल्ली। अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासंघ के द्वारा रविवार को हिन्दू महासभा सभागार मंदिर मार्ग नई दिल्ली में मकर संक्रांति मिलन समारोह एवं दही चूड़ा भोज का आयोजन महासंघ के अध्यक्ष मनीष कुमार शेखर की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर महासंघ के द्वारा विवाह योग्य युवक यिवतियों का डाटा संग्रह कर भूमिहार ब्राह्मण वर-वधू डायरेक्टरी का प्रकाशन किया गया है जिसका लोकार्पण किया गया। भगवान परशुराम के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिनिधियों का आपस में परिचय कार्यक्रम हुआ। समारोह में भारतीय विश्वविद्यालय परिसंघ के अध्यक्ष कुलाधिपति डॉ प्रियरंजन त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा के विकास से ही भूमिहार ब्राह्मण समाज एवं देश को तेज गति से आगे बढ़ाया जा सकता है। भूमिहार जाति देश के विभिन्न कोनों में विभिन्न नाम से जाने जाते हैं जिसकी जानकारी सभी को होना जरुरी है। बिहार से आए पूर्व विधायक चोकर बाबा ने कहा कि भूमिहार होने के कारण राजनीति में लोग ठोकर मार देते हैं जिसके लिए समाज की एकजुटता जरुरी है। महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनीष कुमार शेखर ने कहा कि भूमिहार ब्रह्मण समाज को आर्थिक सत्ता का केन्द्र बनना है जो हमारे पूर्वज कृषि के माध्यम से सभी जातियों का पोषण करके पहले से थे। राजनीति सभी समस्याओं का समाधान नहीं है। भूमिहार ब्रह्मणों के लिए राजनीति सिर्फ राष्ट्रनीति है जिससे हम पहले देशहित को सर्वोपरि रखते हैं। शेखर ने कहा कि सरकार के स्तर पर जो होना था वह काफी हो गया है अब देश की जनता को ही करना है जिसमें भूमिहार ब्रह्मणों की अग्रणी भूमिका होगी। भूमिहार ब्राह्मण वर-वधू डायरेक्टरी का संपादन मनीष कुमार शेखर के साथ ललितेश्वर कुमार राय, गोपालजी राय, राजीव चंचल, कुंदन कुमार मधुकर, दिनेश सिंह, अमितेश आनंद, अभिनंदन सिंह संपादक मंडल के सदस्य हैं। इस अवसर पर अपने विचार रखने वालों में प्रो. सत्यदेव राय, कर्णल राजीव रंजन, मुन्ना कुमार शर्मा, डॉ. विपीन कुमार, विन्देश्वर शर्मा, रविन्द्र रंजन, नीरज त्यागी आदि प्रमुख थे। स्वागत समिति के सदस्यों में राजीव चंचल, दिनकर शर्मा, अमितेश आनंद, दिनेश सिंह, अभिनंदन सिंह, आमोद कुमार, श्रीमति रचना शाही, श्रीमति शशि प्रभा सिंह, श्रीमति रश्मि ठाकुर, रंजीत कुमार सिंह, पवन ब्रह्मर्षि, प्रमोद कुमार सिंह, राकेश कुमार, ओंकार नाथ राय, निशांत कुमार, धनंजय सिंह, रविश कुमार, राज रोहन, सीए विनोद कुमार, अनमोल सिंह, प्रभात चंद्र सिंह, सुधाकर कुमार, कुमार गौरव, अरिंजय कुमार, अभय कुमार आदि की भूमिका सराहनीय रही।

स्थायी समिति के प्रस्ताव को लेकर सदन में हंगामा, भाजपा पार्षदों ने निगम सचिव को किया कमरे में बंद

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

स्थायी समिति का गठन होने तक समिति की शक्तियां सदन को दिए जाने को लेकर बुलाई गई निगम सदन बैठक हंगामे का सामना कर रही है। लगातार दो बार मेयर डॉ. शैली ओबेराय दो बार सदन में पहुंची, लेकिन भाजपा के पार्षदों ने उन्हें सदन के आसन पर नहीं बैठने नहीं दिया। इस दौरान भाजपा पार्षदों ने निगम सचिव को कमरे में बंद कर दिया है। भाजपा के पार्षद निगम सचिव को बाहर नहीं आने दे रहे हैं। सहायक निगम सचिव भी अंदर बंद हैं।

भाजपा के पार्षद मेयर के आसन पर चढ़ गए और बैठक शुरू नहीं होने दी। मेयर के आसन के पास निगम ने महिला और पुरूष गार्ड की तैनाती भी की, लेकिन वह कारगर साबित नहीं हुई। दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति सर्वोच्च समिति इसलिए क्योंकि सभी वित्तीय मंजूरी अधिकतर पहले स्थायी समिति से ही दी जाती है। इतना ही नहीं पांच करोड़ से अधिक राशि की निविदा में एजेंसी के चयन का अधिकार भी इसी समिति के पास है।

मेयर चुनाव के बाद होता है स्थायी समिति का गठन आम तौर पर मेयर चुनाव के एक से डेढ़ माह बाद स्थायी समिति का गठन हो जाता है, लेकिन मेयर का एक कार्यकाल निकल चुका है और दूसरे वर्ष का कार्यकाल भी अप्रैल माह में समाप्त होने को है बावजूद इसके स्थायी समिति का गठन नहीं हो पाया है। हालांकि समय-समय पर मेयर डॉ. शैली ओबेराय ने इसको लकेर तर्क दिया है कि चूंकि सुप्रीम कोर्ट में मनोनीत सदस्यों की नियुक्ति को लेकर मामला लंबित हैं इसलिए वह उस निर्णय का इंतजार कर रही है। उन्होंने कई बार यह भी कहा है कि वह सुप्रीम कोर्ट से अपील करते हैं कि जो निर्णय सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षित रख रखा है उसे जल्द सुनाया जाए। हालांकि इस मामले में मेयर कार्यालय से पक्ष मांगा गया, लेकिन कोई पक्ष नहीं मिल पाया। कई प्रस्ताव करीब डेढ़ वर्ष से लंबित स्थायी समिति के गठन न होने से लंबित पड़े हैं कई प्रस्ताव स्थायी समिति के गठन न होने से ऐसे कई प्रस्ताव हैं जो करीब डेढ़ वर्ष से लंबित पड़े हैं। सर्वाधिक प्रस्ताव शहरी नियोजन विभाग के हैं। चूंकि ले लाउट प्लान पास करने की शक्ति सिर्फ स्थायी समिति के पास ही है। ऐसें में समिति का गठन न होने से 50 से अधिक ले आउट प्लान पास होने के लिए लंबित है। इसमें ढाका में डीयू में बनने वाला एक परिसर भी शामिल हैं। इस परिसर का शिलान्यास स्वयं पीएम मोदी ने बीते वर्ष किया था। इसके अलावा, कूड़े उठाने के लिए एजेंसी नियुक्त करने या फिर कूड़े के पहाड़ों पर ट्रामल मशीनों की संख्या बढ़ाने के लिए दूसरी एजेंसी के चयन जैसे प्रस्ताव भी समिति के गठन होने की वजह से पास नहीं हो पा रहे हैं।

आईपीयू में फामेर्सी के नए पाठ्यक्रम शुरू होंगे

नई दिल्ली। गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय (आईपीयू) द्वारका कैम्पस में फामेर्सी एवं फिजियोथेरेपी के नए पाठ्यक्

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, मंगलवार, 16 जनवरी, 2024

अब दिल्ली की सभी विधानसभाओं में भव्य सुंदरकांड पाठ का आयोजन करेगी : आप

पहले "आप" के कई विधायक अपने स्तर पर दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में सुंदरकांड पाठ का कार्यक्रम करते आ रहे हैं- सौरभ भारद्वाज

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी दिल्ली के सभी विधानसभा क्षेत्रों में मंगलवार को सुंदरकांड पाठ का आयोजन करेगी। सुंदरकांड पाठ का कार्यक्रम आयोजित करने के पीछे पार्टी का उद्देश्य दिल्ली में रहने वाले लोगों के जीवन में सुख और समृद्धि लाना है। इस संबंध में ह्यह्यआपह्लह्ल के वरिष्ठ नेता सौरभ भारद्वाज का कहना है कि पार्टी ने सुंदरकांड पाठ के आयोजन के लिए एक नया संगठन बनाया है। यह संगठन "आप" विधायकों और पार्षदों के साथ मिलकर हर महीने के पहले मंगलवार को सभी विधानसभा क्षेत्रों में सुंदरकांड पाठ का आयोजन करेगा। आने वाले दिनों में विधानसभा के अलावा वार्ड और मंडल स्तर पर भी सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने आम आदमी पार्टी की तरफ से पूरी दिल्ली की जनता को अपने-अपने इलाके में आयोजित होने जा रहे सुंदरकांड पाठ कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की है। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने सोमवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता कर पूरी दिल्ली में आयोजित होने जा रहे सुंदर कांड के आयोजन को लेकर जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि पहले से ही आम आदमी पार्टी के कई विधायकों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में सुंदर कांड का कार्यक्रम कराया जाता रहा है। कुछ साथी मंगलवार को हनुमान चालीसा भी अपने-अपने क्षेत्रों में कराते हैं, लेकिन अब पार्टी ने तय किया है कि सुंदरकांड पाठ का आयोजन एक तयबद्ध तरीके से पूरी दिल्ली में पार्टी द्वारा किया जाएगा। पार्टी ने इसके लिए एक नया संगठन बनाया है। इस संगठन के माध्यम से पूरी दिल्ली में सुनियोजित तरीके से सुंदर कांड पाठ का कार्यक्रम चलाया जाएगा। मंगलवार (16 जनवरी) को दिल्ली की हर विधानसभा में आम आदमी पार्टी के विधायक और पार्षद संगठन के पदाधिकारियों के साथ भव्य सुंदर कांड के पाठ का आयोजन करेंगे। आप के वरिष्ठ नेता सौरभ भारद्वाज ने दिल्लीवासियों से अपील करते हुए कहा कि दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में आयोजित होने वाले इस सुंदर कांड पाठ के कार्यक्रम में सभी दिल्लीवासी परिवार के साथ बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। उन्होंने बताया कि आम आदमी पार्टी के कई विधायक अपने कार्यालय और मंदिरों में सुंदर कांड का पाठ कराते रहते हैं। अब आम आदमी पार्टी ने तय किया है कि इस कार्यक्रम को हर महीने के पहले मंगलवार को नियमित रूप से किया जाए। उन्होंने बताया कि आम आदमी पार्टी सुंदर कांड के पाठ का आयोजन पहले विधानसभा स्तर पर करेगी। इसके बाद वार्ड स्तर और फिर मंडल स्तर पर भी किया जाएगा। जब यह कार्यक्रम मंडल स्तर पर होने लगेंगे, तब हर महीने दिल्ली के अंदर 2,600 से ज्यादा जगहों पर सुंदरकांड पाठ का कार्यक्रम होने लगेंगे। इसके अंतर्गत कहीं पर सुंदर कांड होगा तो कहीं पर हनुमान चालीसा का आयोजन किया जाएगा। मंगलवार से शुरू होने जा रहे इस कार्यक्रम के तहत सभी विधानसभाओं के अंदर सुंदर कांड का आयोजन किया जाएगा।

नोएडा: युवक की हत्या के मामले में दो लोग गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गौतमबुद्ध नगर जिले की पुलिस ने तीन दिन पहले हिंडन नदी के किनारे एक युवक का शव मिलने के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि नगला चरण दास गांव के निवासी विपिन की कथित तौर हत्या करने के बाद 12 दिसंबर को उसका शव इकोटेक-तृतीय थाना क्षेत्र में हिंडन नदी के किनारे फेंक दिया था। पुलिस उपायुक्त (जोन द्वितीय) सुनीति ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान उसके ही गांव के निवासी जॉनी और उसके दोस्त श्यामवीर के रूप में हुई है। उन्होंने बताया, ह्लजॉनी को अपनी पत्नी और विपिन के बीच अवैध संबंध का शक था, जिसके बाद उसने दोस्त श्यामवीर के साथ मिलकर विपिन की कथित तौर पर हत्या कर शव को ठिकाने लगाने के लिए हिंडन नदी के किनारे फेंक दिया।

सोसाइटी के फ्लैट में आग लगी, दमकलकर्मियों तीन बुजुर्गों को निकाला

- घटना में कोई जनहानि नहीं हुई, लेकिन फ्लैट में रखा लाखों रुपये का सामान जलकर राख हो गया।

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गौतमबुद्ध नगर जिले में नोएडा स्थित आवासीय सोसाइटी के एक फ्लैट में आग लग गई। दमकलकर्मियों ने अंदर फंसे तीन बुजुर्गों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया है। एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि नोएडा के सेक्टर-25 स्थित जलवायु विहार सोसाइटी के दूसरे तल पर एक फ्लैट में रविवार पूर्वाह्न करीब 11 बजे आग लगी। घटना की सूचना मिलने पर दमकल की छह गाड़ियों को तुरंत मौके पर भेज गया। मुख्य अग्निशमन अधिकारी (सीएफओ) प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि दमकलकर्मियों के मौके पर पहुंचने पर फ्लैट में धुआं भरा हुआ था। यहां रहने वाले सेवानिवृत्त एयर कमांडर आर. पालीवाल (83), उनकी पत्नी मधु पालीवाल (75) और एक अन्य बुजुर्ग वीर बहादुर सिंह (90) अंदर फंसे हुये थे। उन्होंने बताया कि दमकलकर्मी काफी मशक्कत के बाद फ्लैट में दाखिल हुये और बालकनी के रास्ते तीनों को सुरक्षित बाहर निकाला। करीब डेढ़ घंटे में आग पर काबू पाया गया। सीएफओ ने बताया कि आग फ्लैट के प्रवेश द्वार के पास बने इनवर्टर कक्ष में लगी और उसके बाद फ्लैट में फैल गई। उन्होंने बताया कि आग लगने का सही कारण फिलहाल पता नहीं चल पाया है। संभवतः शार्ट-सर्किट एक वजह हो सकती है। उन्होंने बताया कि घटना में कोई जनहानि नहीं हुई, लेकिन फ्लैट में रखा लाखों रुपये का सामान जलकर राख हो गया।

कर्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस की जोरों से तैयारी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के कर्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस मनाया जाएगा। गणतंत्र दिवस की तैयारी एक महीने पहले ही शुरू हो जाती है। इस दिन कर्तव्य पथ पर भारत अपने शौर्य का प्रदर्शन करता है। जिसमें तीनों भारतीय सेना और राज्यों की झाकियां निकलती हैं। कर्तव्य पथ पर सोमवार सुबह भी सेना के जवानों ने परेड की रिहर्सल की। कर्तव्य पथ पर चल रही परेड रिहर्सल में जवान ऊंटों के ऊपर बैठे हुए हैं। बीते साल 26 जनवरी पर गणतंत्र दिवस परेड में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की ऊंट सवार टुकड़ी में पहली बार पुरुष जवानों के साथ महिला कर्मी शामिल हुई थीं। रक्षा मंत्रालय ने बताया है कि बीटिंग रिट्रीट समारोह 26 जनवरी की परेड से तीन दिन बाद होता है। सरकार के मुताबिक, इस साल के बीटिंग रिट्रीट समारोह में संगीत की धुनें रोमांचिक करेंगी। खास बात ये कि सभी धुनें स्वदेशी ही होंगी। यानी भारत में कंपोज म्यूजिक और सैनिकों की देशभक्ति का रंग सिर चढ़कर बोलेगा। दिल्ली सरकार इस वर्ष भी 25 जनवरी को मॉडल टाउन स्थित छत्रसाल स्टेडियम में गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित करेगी। समारोह में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल मुख्य अतिथि होंगे। इस दौरान के स्कूलों के बच्चे भी हिस्सा लेंगे। शिक्षा निदेशालय ने मंगलवार को यह जानकारी दी। गणतंत्र दिवस के दिन जाम नहीं छलकेगा। दिल्ली आबकारी नियमावली, 2010 के नियम 52 के प्रावधानों के तहत सरकार ने इस दिन ड्राई-डे घोषित किया है। इसके अलावा गुरु रविदास, स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती, महा शिवरात्रि, होली और गुड फ्राइडे को भी शराब की दुकानें नहीं खुलेगी। हालांकि शराब की बिक्री पर प्रतिबंध एल-15 लाइसेंस लेने वालों पर लागू नहीं होगा। वहां ठहरे मेहमानों को शराब परोसी जा सकेगी।

भारत में अवैध रूप से रह रहे चार नाइजीरियाई गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गौतमबुद्ध नगर जिले की रबूपुरा थाना पुलिस ने भारत में कथित तौर पर अवैध रूप से रह रहे चार नाइजीरियाई नागरिकों को गिरफ्तार किया है। अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। थाना रबूपुरा के प्रभारी निरीक्षक राघवेंद्र सिंह ने बताया कि पुलिस और क्षेत्रीय अभिसूचना इकाई की एक संयुक्त टीम अभियान के तहत विदेशी नागरिकों के सत्यापन का कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि रविवार को टीम सुपरटेक गोल्फ कंट्री सोसाइटी पहुंची। यहां टीम को चार ऐसे नाइजीरियाई नागरिक मिले, जिनके वीजा और पासपोर्ट की अवधि खत्म हो चुकी है। सिंह ने बताया कि उनसे पूछताछ की जा रही है और यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि कहीं ये लोग किसी आपराधिक गतिविधि में संलिप्त तो नहीं हैं।

नोएडा में कबाड़ के गोदाम में लगी आग

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दादरी थाना क्षेत्र के रूप बांसगांव में रविवार को एक कबाड़ के गोदाम में भीषण आग लग गई। मौके पर पहुंची दमकल विभाग की छह गाड़ियों ने आग पर काबू पाया। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। मुख्य दमकल अधिकारी प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि दादरी के रूप बांसगांव में मोबीन अहमद की कबाड़ की गोदाम में आग लग गई। उन्होंने बताया कि आग लगने के कारण का पता लगाया जा रहा है और आग लगने से हुई क्षति का आकलन किया जा रहा है। दमकल अधिकारी ने बताया कि घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची दमकल विभाग की छह गाड़ियों ने आग पर काबू पाया। उन्होंने बताया कि मामले में जांच जारी है।

एम्स में नए सहायक प्रोफेसरों की नियुक्ति, केंद्र सरकार ने दी मंजूरी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

एम्स के राष्ट्रीय कैंसर संस्थान (एनसीआइ) में कैंसर के इलाज और जांच की सुविधाओं में विस्तार के लिए छह विभागों में नए सहायक प्रोफेसरों की नियुक्ति के लिए 11 नए पद सृजित किए गए हैं। केंद्र सरकार ने इसकी स्वीकृति भी दे दी है। जिसके बाद इन पदों पर नए सहायक प्रोफेसरों की नियुक्ति का रास्ता साफ हो गया है। उम्मीद की जा रही है कि एम्स प्रशासन जल्द ही इन पदों पर सहायक प्रोफेसरों की नियुक्ति प्रक्रिया शुरू करेगा। इससे हरियाणा के झज्जर स्थित एनसीआइ में कैंसर के इलाज व जांच की सुविधाएं बढ़ेगी। मौजूदा समय में एनसीआइ में डॉक्टरों की कमी बनी हुई है। इससे मरीजों का इलाज प्रभावित होता है। इसके मद्देनजर सहायक प्रोफेसरों के नए पद सृजित किए गए हैं। इसके तहत पैलिएटिव मेडिसिन के तीन सहायक प्रोफेसर नियुक्त किए जाएंगे। इसके अलावा पैथोलाजी विभाग में भी तीन, माइक्रोबायोलाजी के दो व बायोस्टेटिस्टिक के एक सहायक प्रोफेसर के पद सृजित किए गए हैं। **नियुक्ति होने से बढ़ेगी जांच सुविधाएं**-इन तीनों विभागों में नए सहायक प्रोफेसरों की नियुक्ति होने से जांच सुविधाएं बढ़ेगी। इसके अलावा प्रिवेंटिव आंकोलाजी में सहायक प्रोफेसर एक नया पद सृजित किया गया है। ताकि कैंसर की रोकथाम और स्क्रीनिंग को बढ़ावा दिया जा सके। वहीं फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन के एक सहायक प्रोफेसर की नियुक्ति होगी।

दिल्ली में सीजन का सबसे कम तापमान 3.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली सहित उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड और कोहरा का सितम जारी है। दिल्ली-एनसीआर में आज सोमवार को भी कड़ाके की ठंड के साथ वातावरण में घने कोहरे की चादर नजर आई। वहीं, न्यूनतम तापमान भी और लुढ़का है। मौसम विभाग से मिली ताजा जानकारी के मुताबिक, दिल्ली के सफदरजंग में आज सीजन का सबसे कम तापमान 3.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। आज आसमान साफ रहेगा, दिन में धूप भी खिली रहेगी, लेकिन कुछ जगह शीत लहर की स्थिति बने रहने के आसार हैं। **अभी सर्दी से राहत के आसार नहीं-** मौसम विभाग का अनुमान है कि अभी सर्दी से राहत के आसार नहीं है। अनुसार है कि अभी दो दिन घना कोहरा होगा। इस वजह से सोमवार व मंगलवार के लिए मौसम विभाग ने ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। आज सोमवार को भी शीत लहर चलेगी। वहीं, बुधवार से कोहरे के स्तर में कमी आएगी। इसके बाद तापमान में भी दो से तीन डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है। मौसम विभाग के अधिकारियों के अनुसार, इससे पहले रविवार को न्यूनतम तापमान 3.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस सीजन का पिछला सबसे कम तापमान था। यह शनिवार के 3.6 डिग्री सेल्सियस और शुक्रवार के 3.9 डिग्री सेल्सियस था। ये दोनों उस दिन के सीजन के सबसे कम तापमान थे। आईएमडी ने बताया कि आज न्यूनतम तापमान 3.3 डिग्री सेल्सियस रहा जबकि अधिकतम 20 डिग्री रहने के आसार हैं। वहीं, राजधानी में वायु की गुणवत्ता आज भी गंभीर श्रेणी बरकरार है। दिल्ली के कई इलाकों में एक्यूआइ 400 के पार बना हुआ है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के मुताबिक, आज दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 382 रहा। बता दें कि शून्य और 50 के बीच एक अदकको अच्छा, 51 और 100 के बीच संतोषजनक, 101 और 200 के बीच मध्यम, 201 और 300 के बीच खराब, 301 और 400 के बीच बहुत खराब और 401 और 500 के बीच गंभीर माना जाता है।

दिल्ली आने वाली 110 ट्रेनें लेट

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

सप्ताह के पहले दिन सोमवार को रेलवे यात्रियों की परेशानी ज्यादा बढ़ गई है। दिल्ली आने वाली 110 ट्रेनें एक घंटे से अधिक लेट हैं। इनमें से कई ट्रेनें 24 घंटे से ज्यादा विलंब से चल रही हैं। रविवार को आने वाली नई दिल्ली- भुवनेश्वर राजधानी 24.45 घंटे की देरी से सोमवार पूर्वाह्न10.40 बजे दिल्ली पहुंचेगी और 23 घंटे की देरी से शाम चार बजे रवाना होगी। नई दिल्ली-दरभंगा-बिहार संपर्क क्रांति एक्सप्रेस रविवार दोपहर एक बजे की जगह सोमवार दोपहर 12 बजे चलेगी। बिहार जाने वाली स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस भी रविवार रात सवा नौ बजे की जगह 12.45 घंटे की देरी से आज सुबह दस बजे रवाना होगी।

10 घंटे की देरी से दिल्ली पहुंचने वाली प्रमुख ट्रेनें

दरभंगा-नई दिल्ली बिहार संपर्क क्रांति एक्सप्रेस (रविवार को आने वाली)	29.43 घंटे
नई दिल्ली- भुवनेश्वर राजधानी (रविवार को आने वाली)	24.45 घंटे
जयनगर-नई दिल्ली स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस (रविवार को आने वाली)	17.33 घंटे
बनारस-नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस (रविवार को आने वाली)	12.17 घंटे
लखनऊ-नई दिल्ली स्वर्ण शताब्दी एक्सप्रेस (रविवार को आने वाली)	12 घंटे
हावड़ा-कालका नेताजी एक्सप्रेस	13.40 घंटे
अजमेर-जम्मूतवी एक्सप्रेस	12 घंटे
जम्मूतवी-अजमेर एक्सप्रेस	11.47 घंटे
गया-नई दिल्ली महाबोधि एक्सप्रेस	11 घंटे
हैदराबाद-नई दिल्ली तेलंगाना एक्सप्रेस	10.15 घंटे
पुरी-योगनगरी ऋषिकेश कलिंग उत्कल एक्सप्रेस	10 घंटे
रानी कमलापति-नई दिल्ली शताब्दी एक्सप्रेस (रविवार को आने वाली)	10 घंटे

आज से दिल्ली में पांच लाख कारों पर बैन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली में बीएस-3 पेट्रोल और बीएस-4 डीजल कार चला रहे हैं तो आज से इन्हें छोड़ सार्वजनिक वाहनों में यात्रा करने की आदत डाल लें, क्योंकि परिवहन विभाग ने दिल्ली में इन कारों पर प्रतिबंध लगा दिया है। ग्रेप-तीन के नियम लागू होने के आदेश के तुरंत बाद परिवहन विभाग के उपायुक्त योगेश जैन ने शनिवार को इस बारे में आदेश जारी कर दिया। आदेश में कहा गया है कि अगर बीएस-3 पेट्रोल और बीएस-4 डीजल चार पहिया वाहन चलते पाया गया तो उसके मालिक पर 20 हजार का जुमार्ना लगाया जाएगा। दिल्ली में बीएस-3 के 2,07,038 पेट्रोल व बीएस-4 के 3,09,225 डीजल कारें हैं। इतनी पुरानी नहीं होनी चाहिए पेट्रोल-डीजल कार- बीएस-3 पेट्रोल यानी एक अप्रैल 2010 से पहले की पेट्रोल और बीएस-4 डीजल की एक अप्रैल 2020 से पहले की पंजीकृत डीजल कारें दिल्ली में नहीं चल पाएंगी। इन कारों पर कार्रवाई के लिए परिवहन विभाग ने 114 टीमें तैनात की हैं।

हाई कोर्ट ने शरजील मामले में दिल्ली पुलिस को दिया चार्ट पेश करने का निर्देश

- पीठ ने मामले में जमानत की मांग करने वाली इमाम शरजील की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश पारित किया।

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली उच्च न्यायालय ने सोमवार को राजधानी की पुलिस से एक चार्ट दाखिल करने के लिए कहा ताकि वर्ष 2020 के सांप्रदायिक दंगों के पीछे की कथित बड़ी साजिश से जुड़े यूएपीए मामले में गिरफ्तार छात्र कार्यकर्ता शरजील इमाम की भूमिका को सह आरोपी नताशा नरवाल, देवांगना कलिता और आसिफ इकबाल तन्हा से अलग किया जा सके। न्यायमूर्ति सुरेश कुमार कैत और न्यायमूर्ति मनोज जैन की पीठ ने कहा कि चार्ट में पुलिस आरोपी के इतिहास, उसकी भूमिका और उसके मामले को दूसरों से अलग करने वाले अन्य विवरणों का उल्लेख कर सकती है। पीठ ने मामले में जमानत की मांग करने वाली इमाम शरजील की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश पारित किया। अदालत इस मामले में अब अगली सुनवाई 19 फरवरी को करेगी। इमाम ने समानता के आधार पर जमानत की मांग करते हुए कहा कि प्राथमिकी में नामित 18 आरोपियों में से छह को पहले ही राहत दी जा चुकी है। विशेष लोक अभियोजक अमित प्रसाद ने याचिका का विरोध करते हुए कहा कि दंगों के पीछे बड़ी साजिश से जुड़े मामले में अलग-अलग आरोपियों को अलग-अलग भूमिकाएं सौंपी गई हैं।

उत्तर-पूर्वी दिल्ली में फरवरी 2020 में हुए दंगों की साजिश रचने के आरोपी शारजील इमाम, यूनाइटेड अगेंस्ट हेट के संस्थापक खालिद सैफी और छात्र-कार्यकर्ता उमर खालिद सहित कई अन्य लोगों पर कथित तौर पर आतंकवाद विरोधी कानून, गैर कानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) और भारतीय दंड संहिता के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया है। इन दंगों में 53 लोग मारे गए और 700 से अधिक लोग घायल हो गए।

रामलला तो आ गए अब रामराज्य स्थापना की तैयारी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

अयोध्या नही जायेंगे दिल्ली को अयोध्या बनाएंगे यह संदेश दिया गया स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी महाराज द्वारा शाहदरा गोरख पार्क स्थित श्री राजमाता झंडेवाला मंदिर द्वारा आयोजित राम संदेश नगर कीर्तन में सैकडो भक्तजनों को। संस्थान के सहप्रबंधक राम वोहरा ने बताया कि आने वाली 22जनवरी को रामजन्म भूमि पर रामल्ला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी महाराज के पावन सानिध्य में गोरख पार्क मंदिर से राम संदेश कीर्तन यात्रा निकाली गई।यह यात्रा गोरख पार्क, बहाल गली, सुभाष पार्क की छोटी बड़ी गलियों से होती हुई वापिस मंदिर पहुंची।स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी एवम गुरु माता जी के हाथों में आभूषण की सुंदर गुत्थी में संजोए हुए पवित्र अक्षत के कलश शोभायमान थे।इन पवित्र अक्षत की आभूषण गुत्थियों को घर घर में परंपरागत सनातनी ढंग से निमंत्रण के रूप में निमंत्रण के रूप में दिए जा रहे थे तो स्वामीजी द्वारा हर घर में 11दिए एक मीठे तेल की शीशी बत्तियां और मिठाई बांटी जा रही थी।ढोल की थाप पर भक्तजन नाचते भजन गाते हुए मस्ती में चूर होकर हाथो में ध्वजा मस्तक पर तिलक जय श्री राम जय श्री राम के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे।किसी घर में राम कीर्तन यात्रा का पुष्प वर्षा से तो किसी ने राम भक्तों के मस्तक पर तिलक लगाकर तो किसी ने प्रसाद बांटने के साथ स्वामीजी गुरुमाता जी का शॉल चुनरी ओढ़ाकर आशिर्वाद प्राप्त किया।स्वामी जी ने एक बाल्मिकी के हाथ से नारियल फोड़कर राम कीर्तन यात्रा का शुभारंभ किया।राम कीर्तन यात्रा के समाप्ति पर भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। विभिन्न धार्मिक सामाजिक संगठनों के वरिष्ठ सदस्यों योगेश गुप्ता, भागचंद माहेश्वरी, डॉली कवात्रा ने मुख्य भूमिका निभाई। इस अवसर पर संगत को संबोधित करते हुए स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी महाराज ने विशेष संदेश में कहा कि जो भक्त 22जनवरी को अयोध्या नही जायेंगे वह दिल्ली को अयोध्या बनाएंगे।यानी 22 जनवरी श्री राजमाता झंडेवाला मंदिर में दोपहर 11 से 1बजे राम श्याम नाम संकीर्तन किया जायेगा जिसके बाद रामराज्य की ओर कदम बढ़ाते हुए सर्व जात भोज का आयोजन किया जाएगा।इस भोज के पीछे यह विचार रहेगा की रामलल्ला की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही अब हमने बढ़ना है राम राज्य की स्थापना के मार्ग में।जात पात के भेदभाव के चलते रामराज्य की परिकल्पना सार्थक नही हो सकती।अतः 22जनवरी को ब्राह्मण, बाल्मिकी, रविदासिए, वैश्य हर वर्ण हर जात के हिंदुओ को एक साथ भोजन व्यवस्था की गई है।ऊंच नीच जात पात वर्ण भेद से ऊंचा उठकर सिर्फ हिंदू की सोच से ही रामराज्य की ओर यात्रा का शुभारंभ होगा। प्रभु राम ने सबसे पहले निषादराज गुह को गले लगाकर रामराज्य का संदेश दिया था अब उसी की पुनरावृति होगी।

अंकित सक्सेना मर्डर केस में दोषियों की सजा पर फैसला टला

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के चर्चित अंकित सक्सेना हत्याकांड में दिल्ली की तीस हजारी कोर्ट ने 2018 के मर्डर केस में दोषियों को सजा देने के मामले पर सुनवाई टाल दी है। एडिशनल सेशंस जज सुनील कुमार शर्मा ने 31 जनवरी को सुनवाई करने का आदेश दिया। कोर्ट ने दिल्ली पुलिस, दिल्ली विधिक सहायता प्राधिकार और दोषियों के वकीलों को हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया। इसमें दोषियों की आमदनी, उनकी जिम्मेदारी और पूर्व के आपराधिक इतिहास का विस्तृत विवरण देने को कहा है।

सुनवाई के दौरान दोषियों के वकील ने मीडिया रिपोर्टिंग पर सवाल उठाते हुए उस पर रोक लगाने की मांग की। दोषियों की ओर से पेश इस दलील का दिल्ली पुलिस की ओर से विरोध करते हुए कहा कि दोषी करार देने का आदेश मीडिया में चलाया गया है, जो सार्वजनिक दस्तावेज के आधार पर चलाया जा रहा है। बता दें, 2018 में पश्चिमी दिल्ली के ख्याला में अंकित सक्सेना की दिनदहाड़े हत्या कर दी गई थी। अंकित सक्सेना के दूसरे धर्म की लड़की से प्रेम संबंध थे। कोर्ट ने 23 दिसंबर 2023 को इस हत्याकांड के तीन दोषियों को दोषी करार दिया था।कोर्ट ने तीनों आरोपियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 302 और 34 के तहत दोषी करार दिया था। धारा 302 के तहत उम्रकैद से लेकर फांसी तक की सजा का प्रावधान है। कोर्ट ने अंकित सक्सेना की हत्या के मामले में लड़की के माता-पिता और उसके मामा को दोषी करार दिया था। इस मामले में कोर्ट ने दिल्ली पुलिस की ओर से 28 गवाहों के बयान और उनकी ओर से पेश साक्ष्यों को दर्ज किया था। 28 गवाहों में अंकित सक्सेना के पिता और शिकायतकर्ता यशपाल सक्सेना, मां कमलेश और अंकित के दो दोस्तों नितिन और अनमोल सिंह बयान प्रमुख थे। घटना 1 फरवरी 2018 की है।

संक्षिप्त खबरें

प्रतियोगिता में भाग लेकर लौटी सभी छात्रा को किया सम्मानित

मधुबनी परिचय का मोहताज नहीं होती है। जरूरत है तो सिर्फ मौका मिलने की। अब समय बदल रहा है और ग्रामीण स्तर पर भी लड़कियां खेल जगत में भाग लेकर अपने क्षेत्र का नाम रोशन कर रही है। यह बात डीएसपी विपल्व कुमार ने महिला विकास मंच के द्वारा नेशनल स्तर पर वॉलीबाल प्रतियोगिता में भाग लेकर लौटी छात्रा पूजा कुमारी, सोनी कुमारी, चांदनी कुमारी और माही कुमारी को अपने कार्यालय में सम्मानित करते हुए कहा कि वॉलीबाल जैसे राष्ट्रीय स्तर के बड़े प्रतियोगिता में प्रखंड की छात्राओं का भाग लेकर अच्छा प्रदर्शन करते हुए अपनी पहचान एवं खेल प्रदर्शन के माध्यम से क्षेत्र का नाम रोशन करने वाली सभी छात्राओं को उनके स्वर्णिम भविष्य की शुभकामना देते है। इस मौके पर महिला विकास मंच की जिलाअध्यक्ष दीपशिखा सिंह, अरुण जैन, पीयूष कुमार, अमित गुप्ता ने सभी छात्राओं, उनके अभिभावकों एवं कोच प्रमोद कुमार को पाग एवम शॉल से सम्मानित कर उनका मुंह मीठा कराकर उनके उज्जवल भविष्य की बधाई दी। बता दे कि इससे पूर्व में भी राज्य स्तर पर वॉलीबाल प्रतियोगिता में जीतकर वापस आने पर महिला विकास मंच एवम रोटी बैंक के द्वारा पूरी टीम को प्रोत्साहित करते हुए सम्मानित किया गया था।

हथियार के साथ कुख्यात अपराधी गिरफ्तार

मुजफ्फरपुर। जिला पुलिस ने एक कुख्यात अपराधी को हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। यह जानकारी देते हुए टाउन एएसपी अवधेश सरोज दीक्षित ने बताया कि पुलिस की विशेष टीम को सूचना मिली थी कि सदर थाना इलाके के गोबरसही- डुमरी रोड स्थित निमार्णाधीन पुल के पास हथियार से लैस होकर एक अपराधी लूट की बडी घटना को अंजाम देने की योजना बना रहा है। पुलिस ने मौके पर छापेमारी कर अपराधी को हथियार समेत दबोच लिया। उसकी पहचान पकड़ी इस्माइल निवासी रामनाथ महतो के रूप में हुई है। पुलिस ने उसके पास से एक देसी कट्टा, एक कारतूस, 3 ग्राम स्मैक और एक बाईक बरामद किया है। बताया जा रहा है कि पिछले साल सितंबर महीने में गोबरसही में आनंद नगर रोड नंबर एक स्थित डिप्टी कमांडेंट के घर पर रामनाथ महतो ने अपने सहयोगी के साथ मिलकर लूटपाट की घटना को अंजाम दिया था।

मधेपुरा मंथन शिक्षा संवाद कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

चौसा (मधेपुरा) बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में आमजनों को जानकारी देने के लिए मधेपुरा मंथन शिक्षा एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन आज उत्क्रमित जनता उच्च माध्यमिक विद्यालय चौसा परिसर में किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी ब्रजेश कुमार दीपक ने की। कार्यक्रम में अभिभावकों, शिक्षार्थियों, अध्यापकों के साथ शिक्षा संवाद का आयोजन किया गया। जिसमें अधिकारियों ने अभिभावकों को कुछ आवश्यक विषयों पर अवगत करवाया तथा अभिभावकों से सहयोग की अपेक्षा की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला उपविकास आयुक्त नितिन कुमार ने शिक्षा विभाग द्वारा छात्र छात्राओं के हितार्थ मिलने वाली सभी योजनाओं पर विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि उन्होंने कहा कि इन लोक कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को समुचित जानकारी नहीं रहने की स्थिति में उन्हें योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में असुविधा होती है तथा कभी-कभी उन्हें इसके लाभ से वंचित रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में शिक्षा संवाद आयोजित करने का निर्देशित सरकार से प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग द्वारा बच्चों को मुख्यमंत्री बालक-बालिका साइकिल योजना, मुख्यमंत्री किशोरी स्वास्थ्य कार्यक्रम योजना, बिहार शताब्दी बालक-बालिका पोशाक योजना, मुख्यमंत्री बालिका पोशाक योजना, मुख्यमंत्री मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना, मुख्यमंत्री विद्यार्थी प्रोत्साहन योजना समेत दर्जनों योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है।उन्होंने सरकार द्वारा शिक्षा में संचालित योजनाओं पर विस्तृत रूप से चर्चा की। इस मौके पर एक वीडियो का प्रसारण कर भी आमलोगों में जागरूकता पैदा की गई। प्रखंड विकास पदाधिकारी ब्रजेश कुमार दीपक ने कहा कि चौसा प्रखंड के सभी उच्च विद्यालयों में शिक्षा विभाग की लोक कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में छात्र छात्राओं एवं अभिभावकों को जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से शिक्षा संवाद कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। शिक्षा संवाद कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है कि शिक्षा विभाग से संबंधित लोक कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को समुचित जानकारी उपलब्ध कराना है। साथ ही उन्होंने कहा कि योजनाओं की जानकारी नहीं रहने की स्थिति में आए दिन उन योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में काफी असुविधा होती है और कभी-कभी उन योजनाओं को लाभ लेने से वंचित भी रह जाते हैं। ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि शिक्षा विभाग की विभिन्न लोक कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में सभी विद्यार्थियों के साथ-साथ अभिभावकों को समुचित जानकारी प्रदान किया जाए। यह कार्यक्रम जनसंवाद कार्यक्रम के तर्ज पर शिक्षा संवाद कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। मौके पर जिला उपविकास आयुक्त नितिन कुमार, प्रखंड विकास पदाधिकारी ब्रजेश कुमार दीपक, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी नरेंद्र झा, मनरेगा कार्यक्रम पदाधिकारी बिंदु कुमारी, जनता उच्च विद्यालय चौसा के प्रधानाध्यापक ब्रजकिशोर प्रसाद, शिक्षक डॉ. रविंद्र कुमार यादव, अभिषेक विद्यार्थी, पंकज कुमार यादव, नौशाद आलम, नमिता कुमारी केसरी, किरण कुमारी, निकिता सिंह, सुभाषचंद्र आजाद, डॉ. प्रीति कुमारी, पूर्व प्रखंड साधन सेवी राजीव अग्रवाल, निकासी एवं व्यवयन पदाधिकारी छविनाथ पासवान, कन्या मध्य विद्यालय चौसा के प्रधानाध्यापक विजय पासवान, संजय कुमार सुमन, प्रतिभा गुप्ता, हकीम उद्दीन, बिंदु कुमारी, याहिया सिद्दीकी, भालचंद्र मंडल समेत शिक्षक एवं बच्चे उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी नरेंद्र झा ने की।

हर इंसान को कभी ना कभी अकेले ही शुरूआत करनी होती है : चंदन

प्रात: किरण, संवाददाता

आलमनगर (मधेपुरा) नेहरू युवा केंद्र मधेपुरा के तत्वधान में युवा दिवस के सप्ताहिक कार्यक्रम के दौरान स्वामी विवेकानन्द की जयंती मेघा कार्यक्रम के तहत भागीदारी दिवस भागीपुर में मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक चंदन कुमार पासवान ने बताया कि ह्लयुवा वो होता है, जो बिना अतीत की चिंता किए अपने भविष्य के लक्ष्यों की दिशा में काम करता है। ह्व हर इंसान को कभी ना कभी अकेले ही शुरूआत करनी होती है, इसलिए किसी भी काम को करने से घबराना नहीं चाहिए। अगर आपकी नियत साफ, इरादे स्पष्ट और हौसले बुलंद होते हैं, तो आपके साथ अपने आप ही लोग जुड़ने लगते हैं। वही समिति प्रतिनिधि शशिनाथ जी ने बताया स्वामी जी इतने ओजवान और तेजस्वी थे, कि वह उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देता था। उन्होंने युवाओं के दिल में अपने कार्य को करने के लिए जो आग फूंकी वो आज भी हर भारतीय के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। कार्यक्रम के अंतरगत युवाओं के बीच निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मौके पर पंचायत के समिति प्रतिनिधि शशि नाथ पासवान, संचालन प्रताप कुमार, कोचिंग संचालक विशाल कुमार, राजू, राजा, मिट्ठू, अंकुश, कुमोद, धीरज, बिट्ठू कुमार, मासूम, बाबू, श्यामसुंदर, सुधीर कुमार आदी मौजुद रहे।

रूपेश कुमार हत्याकांड को ले सर्किल इंस्पेक्टर ने बारीकी से की छानबीन

प्रात: किरण, संवाददाता

कुमारखंड (मधेपुरा) कुमारखंड थाना क्षेत्र के भतनी ओपी अंतर्गत रोता पंचायत स्थित हरि बोल वार्ड नंबर 5 में 13 जनवरी को रूपेश कुमार की हत्या कर बांस बिट्टा में रस्सी से लटका हुआ स्थानीय ग्रामीणों ने शव देखा था। रूपेश हत्या कांड का उद्वेदन को लेकर सोमवार को मधेपुरा सर्किल इंस्पेक्टर सुरेंद्र कुमार, भतनी ओपी प्रभारी सत्य प्रकाश और पुलिस बल के घटनास्थल पर पहुंच कर मामले की बारीकी से छानबीन कर मृतक रूपेश कुमार के पिता, माता, भाई और स्थानीय ग्रामीणों से हत्या को लेकर बारी-बारी से पूछताछ किया। हत्या को लेकर मृतक के छोटे भाई रितिक राज उर्फ अमलेश कुमार ने भतनी ओपी में 10 नामजद लोग और सात अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ आवेदन देकर प्राथमिक की दर्ज कराया है। इस संबंध में प्रभारी थाना अध्यक्ष श्याम चंद्र झा ने बताया मृतक के भाई रितिक राज उर्फ अमलेश कुमार के आवेदन के आलोक में 10 नामजद 7 अज्ञात के विरुद्ध प्राथमिक की दर्ज कर आगे की कार्यवाही की जा रही है।

हनुमान मंदिर परिसर से निकाली गई भव्य कलश शोभा यात्रा

प्रात: किरण, संवाददाता

कुमारखंड (मधेपुरा) कुमारखंड प्रखंड के ईसराइन खुर्द पंचायत स्थित यादव पट्टी बाजार स्थित हनुमान मंदिर परिसर से श्री राम जन्मभूमि अयोध्या से आए हुए अक्षत कलश के साथ हनुमान मंदिर परिसर से यदुआ पट्टी ग्रामवासी द्वारा कड़ाके ठंड में 301 कुंवारी कन्याओं द्वारा भव्य कलश शोभा यात्रा बैंड बाजा के साथ हाथ में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा और धर्म का झंडा के साथ सैकड़ों की संख्या में शामिल श्रद्धालु भक्ति मय, जय श्री राम, जय हनुमान के जयकारा से गूंजता रहा पूरा कलश शोभा यात्रा।यदुआपट्टी हनुमान मंदिर परिसर से नगर भ्रमण करते हुए एकना टोला, यादव टोला, रजक टोला, दुर्गा स्थान, सरस्वती स्थान होते हुए हनुमान मंदिर में कलश स्थापित किया गया। सभी कुंवारी कन्याओं ने प्रसाद ग्रहण कर अपने अपने घर लौट गये। गौतम राणा ने कहा यह शांति का प्रतीक है। आगामी 22 जनवरी को होने वाले भय श्री राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा और मंदिर में जो भगवान की प्रतिमा स्थापित किया जाना है। अयोध्या से आए अक्षत कलश को लेकर घर घर आमंत्रित के लिए यदुआपट्टी हनुमान मंदिर परिसर से हिंदू समाज के द्वारा भव्य कलश शोभा यात्रा निकाली गई है। कलश शोभा यात्रा में सुरेंद्र साह, डॉक्टर राजीव कुमार, राहुल राणा, सुमन कुमार, प्रीतम कुमार, रतन यादव, मुकेश भगत, मनोज कुमार, लक्ष्मण साह, कमलेश्वरी भगत, विनोद यादव समेत समस्त ग्रामीण कलश शोभा यात्रा में शामिल हुए।

एनपी इंटर कॉलेज में इंडिया गठबंधन की बैठक आयोजित

आगामी लोकसभा चुनाव में मोदी सरकार को सत्ता से हटाने का लिया संकल्प

प्रात: किरण, संवाददाता

कुमारखंड (मधेपुरा) कुमारखंड प्रखंड के नेती प्रसाद महा विद्यालय परिसर में रविवार को इंडिया गठबंधन के विभिन्न घटक दलों के कार्यकताओं की बैठक आयोजित की गई। मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित गठबंधन दलों की बैठक की अध्यक्षता राजद प्रखंड अध्यक्ष अरुण कुमार ने किया। कामरेड ललन कुमार यादव के संचालन में आयोजित बैठक के दौरान राजद, कांग्रेस, जदयू, सीपीएम, भाकपा सहित अन्य विपक्षी दल के नेताओं और कार्यकताओं ने एक स्वर में आगामी लोकसभा चुनाव में देश की सत्ता से मोदी सरकार को उखाड फेंकने और इंडिया गठबंधन सरकार को लाने का संकल्प लिया। बैठक के दौरान राजद के प्रदेश महासचिव मोहम्मद नूरी साहब ने कहा कि केंद की बीजेपी गठबंधन सरकार देश में जातिवाद को बढावा देने, साम्प्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ने, हिन्दू मुस्लिम समुदाय के बीच नफरत फैलाने का काम किया है। राजद के प्रदेश महिला अध्यक्ष विनिता भारती ने कहा कि केंद की मोदी सरकार ने देश में मंहगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पलायन को मजबूत करने का काम भर किया है। राजद महिला प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष अनिता देवी, सीपीआईएम राज्य कमेटी सदस्य गणेश मानव ने अपने अपने संबोधन में कहा कि धर्म और जाति के नाम पर राजनीति करने वाली मोदी सरकार ने देश को मंहगाई, भ्रष्टाचार, अफसरशाही के दलदल में धकेल दिया है। उन्होंने कहा कि इस बार के होने जा रही है लोकसभा चुनाव में विपक्षी एकता को मजबूती के साथ आगे ले जाकर सभी इंडिया गठबंधन के कार्यकर्ता देश में इंडिया गठबंधन सरकार लाने का काम करेंगे। भाकपा के केंद्रीय परिषद सदस्य प्रमोद प्रभाकर ने कहा कि भाजपा गठबंधन की सरकार ने देश को अंबानी अडानी के हाथों गिरवी रखने का काम कर जनता के साथ छलावा किया है। उन्होंने कहा कि हर एक जनता के खाते में 15 लाख देने का वादा करने वाली मोदी सरकार 15 लाख तो नहीं दे सकी लेकिन हर एक नागरिक के ऊपर लाखों रुपए का कर्ज जरूर डाल दिया है। उन्होंने कहा कि ईडी और सीबीआई का सहारा लेकर विपक्षी दलों के नेताओं को डराने धमकाने का काम मोदी सरकार जरूर कर रही है। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन बनने से विपक्ष एकता मजबूत हुई है और बीजेपी गठबंधन कमजोर हुई है। मजबूती के साथ विपक्षी दल इस बार के चुनाव में उतरेगी तो केंद्र से तानाशाही सरकार को हटाने में सफल हो पाएगी। बैठक में देवकृष्ण यादव, जदयू अध्यक्ष संजय कुमार गांधी कांग्रेस अध्यक्ष शत्रुध्न भगत, राजद कार्यकारी अध्यक्ष प्रो वेदप्रकाश रिंकू, राजद युवा अध्क्ष चंद्रकिशोर राम, वीरेंद्र प्रसाद यादव सीपीआईएम के कृष्ण कुमार यादव, अशोक कुमार यादव, कामरेड अनमोल यादव, चंदेश्वरी रजक, राजकिशोर सरदार, परमेश्वर यादव, विनोद यादव, विवेकानंद यादव, ब्रजमोहन यादव, विशेश्वर यादव, शेर सिंह, मो. रब्बान, विरु यादव समेत सैकडों इंडिया गठबंधन दलों के कार्यकर्ता मौजूद थे।

मार्गदर्शन एवं उत्प्रेरण केन्द्र में नामांकन पूरा, दीक्षारंभ कार्यक्रम शीघ्र

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा । मुख्यमंत्री व्यवसायिक पाठ्यक्रम मार्गदर्शन एवं उत्प्रेरण केंद्र में दूसरे बैच के लिए निर्धारित 120 सीटों पर नामांकन पूरा कर लिया गया है। शीघ्र ही इस सत्र का दीक्षारंभ (सत्रारंभ) कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। यह जानकारी कुलसचिव प्रो. मिहिर कुमार ठाकुर ने दी।कुलसचिव ने बताया कि इस केंद्र की शुरूआत बिहार राज्य पिछड़ा वर्ग एवं अतिपिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम, पटना द्वारा उच्च शैक्षणिक संस्थानों में शैक्षणिक पदों पर नियुक्ति में पिछड़ा वर्ग एवं अत्यंत पिछड़ा वर्ग की भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से की गई है। इसमें विद्यार्थियों को इनईटी, जीएटीई, जेआरएफ, पीएचडी आदि प्रतियोगिता परीक्षाओं में चयनित होने के लिए परीक्षा पूर्व निशुल्क प्रशिक्षण (कोचिंग) की व्यवस्था है। शीतकालीन सत्र में नामांकन प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। उप कुलसचिव (स्थापना) डॉ. सुधांशु शेखर ने बताया कि केन्द्र में कुल 120 छात्र -छात्राओं का दो बैच (प्रशिक्षण अवधि 06 माह) संचालित है। इसमें 40 प्रतिशत (48) पिछड़ा वर्ग तथा 60 प्रतिशत (72) अति पिछड़ा वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिए अनुमान्य होगा। अति पिछड़ा वर्ग के छात्र-छात्राओं की अनुपलब्धता की स्थिति में पिछड़ा वर्ग के छात्र-छात्राओं को एवं पिछड़ा वर्ग के छात्र-छात्राओं की अनुपलब्धता की स्थिति में अति पिछड़ा वर्ग के छात्र-छात्राओं का नामांकन किया जाएगा। दोनों कोटियों में छात्राओं के लिए 33 प्रतिशत छैतिज आरक्षण अनुमान्य है। उन्होंने बताया कि केंद्र के विद्यार्थियों को आई. कार्ड दिया जाएगा और उनकी बायोमेट्रिक उपस्थिति दर्ज होगी। निर्धारित 75 प्रतिशत उपस्थिति पूरा करने वाले विद्यार्थियों को तीन हजार रुपए प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। जिला कल्याण पदाधिकारी रामकृपाल प्रसाद ने बताया कि बीएनएमयू में बिहार सरकार द्वारा मुख्यमंत्री व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन केंद्र और प्राक परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र संचालित हो रहा है। दोनों केंद्रों को जिला प्रशासन द्वारा हरसंभव सहायता दी जा रही है। सरकार को विश्वविद्यालय में प्राक परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र भवन के लिए भी प्रस्ताव भेजा गया है।

शिक्षा संवाद कार्यक्रम किया गया आयोजित

प्रात: किरण, संवाददाता

मधुबनी खजौली प्रखंड क्षेत्र के कसमा मरार उच्च माध्यमिक विद्यालय में सोमवार को बीडीओ लवली कुमारी के नेतृत्व में शिक्षा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया.इस कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर संयुक्त रूप से बीडीओ लवली कुमारी,एचएम सुभाष कुमार सरहान, शिक्षक राशेन्द्र सहनी, कारीराम यादव सुरेश कुमार यादव सेवा निवृत्त शिक्षक जगदीश सिंह विद्यालय शिक्षा समिति सचिव कविता कुमारी शिक्षा समिति अध्यक्ष काजल कुमारी शिक्षिका नीलम कुमारी,निधि कुमारी, नेहा कुमारी, मौसमी कुमारी द्वारा किया गया. शिक्षा संवाद कार्यक्रम के दौरान बीडीओ ने 9 से 12 वर्ग के छात्र,छात्राओ एव अभिभावकों को शिक्षा संवाद के जरिये बिहार सरकार से विभिन योजनाओं के लाभ के बारे में जानकारी दी.उन्होंने कहा कि बिहार सरकार शिक्षा विभाग द्वारा उच्च माध्यमिक विद्यालय में पठन पाठन कर रहे छात्र,छात्राएं को मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना,मुख्यमंत्री बालक साइकिल योजना,मुख्यमंत्री किशोरी स्वास्थ योजना,मुख्यमंत्री बालिका प्रोत्साहन योजना,बिहार शताव्दी मुख्यमंत्री बालिका पोशाक योजना,मुख्यमंत्री प्रोत्साहन छात्रवृति योजना, फ्री - मैट्रिक छात्रवृति योजना,बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना सहित अन्य की बारीकी से छात्र,छात्राएं एव अभिभावक को जानकारी दी.वही विद्यालय के एचएम प्रभास कुमार सरहान ने कहा कि शिक्षा विभाग के विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी हेतु बिहार सरकार द्वारा शिक्षा संवाद के जरिये छात्र एव उनके अभिभावक को जानकारी देकर कोई भी छात्र,छात्राएं लाभ से वंचित नही हो सके.वही शिक्षा संवाद कार्यक्रम के तहत प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी योगेंद्र प्रसाद चौधरी ने बलूलाल उच्च माध्यमिक उच्च विद्यालय एकडारा एव महात्मा गांधी + 2 उच्च विद्यालय खजौली में शिक्षा संवाद कार्यक्रम चलाकर छात्र,छात्राओ एव अभिभावक को जागरूक किया गया. वही सीओ मनीष कुमार ने बिलट सिंह जनता बालिका + 2 उच्च विद्यालय खजौली एव राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रसीदपुर में शिक्षा संवाद कार्यक्रम का आयोजन कर समस्त रसीदपुर के ग्रामीण, विद्यालय के छात्र, छात्राएं एव अभिभावक को विभिन्न कल्याणकारी योजना से लाभ के बारे में बारीकी से जानकारी दी.इस शिक्षा संवाद कार्यक्रम के मौके पर शिक्षक सुरेश राण, भोगेन्द्र सिंह,नीरज कुमार, बिलट सिंह बालिका जनता + 2 उच्च विद्यालय के एचएम मो. अबरार अहमद सहित छात्र,छात्राएं एव अभिभावक मौजूद थे.

किशोरी का अपहरण के आरोप में एक गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

बोचहा। थाना क्षेत्र के एक गांव से किशोरी का घर से अपहरण किए जाने का सनसनी खेज मामला सामने आया है। इस मामले में किशोरी की मां ने स्थानीय प्रशासन से लिखित शिकायत करते हुए कार्रवाई की मांग की है। जहां पुलिस ने त्वरित कार्रवाई कार्रवाई करते हुए किशोरी का अपहरण करने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए व्यक्ति से पूछताछ की जा रही है। पुलिस को दिए गए बयान में बताया गया है कि 13 जनवरी की रात किशोरी को सुलाने के बाद उसकी मां खुद सोने चली गई। सुबह देखा तो बच्ची अपने कमरे में नहीं थी। इस मामले में किशोरी की मां ने हथौड़ी थाना क्षेत्र के चार लोगों पर अपहरण अपहरण करने का दावा किया है। उन्होंने किशोरी के जान मारने या दूसरे शहर में ले जाकर बेचने की आशंका जताई है, प्रभारी थाना अध्यक्ष रंजीत कुमार गुप्ता ने बताया कि किशोरी के मां के द्वारा दिए गए आवेदन के आधार पर एक व्यक्ति को पूछताछ के लिए थाना लाया गया है।

ठंड से बचाव के लिए जलाया अलाव

प्रात: किरण, संवाददाता

सिमरी बख्तियारपुर/सहरसा। लगातार बढ़ती ठंड को देखते हुए नगर परिषद द्वारा शहर के चौक-चौराहों व सार्वजनिक स्थानों पर अलाव की व्यवस्था सोमवार को शुरू की है। शहर में अलाव जलाने का कार्य नगर परिषद सभापति फसीहा खातून प्रतिनिधि हसन आलम उपसभापति इंदु भगत प्रतिनिधि विकास कुमार विकी की अगुवाई में की गई। इस दिन जिले का अधिकतम तापमान 22 डिग्री और न्यूनतम तापमान आठ डिग्री सेल्सियस दर्ज की गई है।इस दौरान नप सभापति फसीहा खातून प्रतिनिधि हसन आलम ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से तापमान में काफी गिरावट हुई है। लोगों को घरों से निकलना मुश्किल हो गया। शहर में गरीब और निःसहाय लोगों और वैसे लोग जिन्हें ठंड से बचने के लिए प्रयाप्त गर्म कपड़े नहीं हैं। वैसे लोगों के लिए अलाव ही एक मात्र सहारा है। इसको देखते हुए शहर के प्रमुख चौक चौराह पर अलाव जलाया गया है।अलाव जलने से राहगीरों ने ली राहत की सांस अलाव जलते ही बाजार में सब्जी खरीदने आए लोग व रिक्सा और ठेला चालक ठंड से बचने के लिए अलाव के पास पहुंच गए। रिक्सा चालकों ने बताया कि इस ठंड में चादर से हाथ बाहर निकालने का मन नहीं करता। बाहर ठंड से मानों हाथ शरीर से अलग हो जाएगा। ऐसे में आग तापने से ठंड से थोड़ी राहत मिलती है।

सीनेट के इंतजार में बजट का अनुमोदन अधर में, 6 माह से बीएनएमयू में तदर्थ व्यवस्था

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा । भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय में सीनेट की बैठक को लेकर संशय की स्थिति बनी हुई है। अब तक बैठक की तिथि जारी नहीं हो सकी है। ऐसे में विश्वविद्यालय के वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट का अनुमोदन भी पेंच में फंसा है। बजट अनुमोदन में विलंब से विश्वविद्यालय के शिक्षक कर्मियों व सेवानिवृत्त शिक्षा कर्मियों के वेतन व पेंशन भुगतान में भी विलंब की आंशका बनती जा रही है। बीएनएमयू में आमतौर पर दिसम्बर जनवरी में सीनेट-सिंडिकेट की सामान्य बैठक आयोजित होती रही है, जिसमें विश्वविद्यालय का बजट अनुमोदित कर राज्य सरकार को भेजा जाता है। इस वर्ष जनवरी आधे बीतने के बाद भी सीनेट-सिंडिकेट की बैठक की तिथि स्पष्ट नहीं हो सकी है। प्रावधान के अनुसार सीनेट की बैठक से करीब 35 दिन पूर्व इसकी अधिसूचना जारी की जाती है। सीनेट की बैठक से पूर्व विश्वविद्यालय की विभिन्न परिनियमित समितियों की बैठक कर विभिन्न प्रस्तावों को अनुशंसित कर सिंडिकेट में भेजा जाता है। वहीं, बजट को वित्त समिति से अनुशंसित कर सिंडिकेट में भेजा जाता है। सिंडिकेट में बजट सहित सभी प्रस्तावों को सीनेट के लिए अनुमोदित किया जाता है। ये पूरी प्रक्रिया अब तक बीएनएमयू में लंबित है। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि वर्तमान परिपेक्ष्य में सीनेट की बैठक मार्च से पहले आयोजित होने की संभावना नहीं दिख रही। बीएनएमयू में कुलपति का कार्यकाल भी सितम्बर 2023 में ही समाप्त हो चुका है और फिलहाल पूर्णिया विश्वविद्यालय पूर्णिया के कुलपति डॉ. राजनाथ यादव कार्यकारी भूमिका में विश्वविद्यालय के दैनिक कार्यों का ही निर्वहन कर रहे हैं।

कार्यकारी कुलपतियों के अधीन विश्वविद्यालय न तो भविष्य की योजना बना पा रहे हैं और ना ही पठन पाठन के स्वरूप में विकास का कोई प्रयास कर पा रहे हैं। प्रभारी कुलपति को नीतिगत व वित्तीय मामलों में निर्णय लेने पर राज्यपाल सचिवालय से रोक लगी हुई है।विश्वविद्यालय गलियारों में यह भी चर्चा है कि स्थायी कुलपति के अभाव में सीनेट की बैठक लंबित है, लेकिन अब तक बीएनएमयू में स्थायी कुलपति की नियुक्ति को लेकर भी स्थिति स्पष्ट नहीं है। ऐसे में सीनेट की बैठक में विलंब के आसार साफ साफ दिख रहे हैं। बजट अनुमोदन करने और राज्य सरकार को भेजने में विलंब के कारण विश्वविद्यालय में कार्यरत एवं सेवानिवृत्त शिक्षा कर्मियों के वेतन-पेंशन भुगतान की राशि निर्गत होने में भी स्वाभाविक रूप से विलंब होगा। ऐसे में नए साल में शिक्षक कर्मियों की परेशानी बढ़ती नजर आ रही है। विश्वविद्यालय से जुड़े जानकारों का कहना है कि जब तक कुलाधिपति कार्यालय से दिशा निर्देश नही मिलता, संशय की स्थिति बनी रहेगी। इस बाबत बीएनएमयू के रिसर्च स्कॉलर सारंग तनय ने बताया कि बिहार राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम-1976 में प्रावधान है कि सीनेट की बैठक साल में दो बार आयोजित होनी चाहिए। बीएनएमयू में आमतौर पर एक ही सीनेट आयोजित होती रही है जिसमें बजट के साथ शैक्षणिक प्रस्तावों पर मुहर लगती रही है। उन्होंने बताया कि पिछली बैठक के लगभग साल पूरा होने के बाद भी अबतक सीनेट की बैठक नहीं होने से वित्त संबंधी मामले फंसने की संभावना बनी हुई है। वहीं शिक्षण से संबंधित कई योजनाएं भी लंबित चल रही है। विश्वविद्यालय में एकेडमिक गतिविधियों पर भी इसका असर पड़ रहा है। सारंग तनय ने कहा कि सीनेट किसी भी विश्वविद्यालय के लिए सर्वोच्च सदन होता है, जिसमें चुनाव प्रक्रिया के तहत सीनेट के मेंबर निर्वाचित होते हैं और सीनेट की कार्यवाही भी विधानसभा के तर्ज पर होती है। सीनेट की बैठक में स्टूडेंट्स से जुड़े मुद्दों के साथ साथ विश्वविद्यालय से संबंधित योजनाओं पर चर्चा कर निर्णय लिया जाता है। इसके बाद क्रियान्वयन की प्रक्रिया शुरू की जाती है।

महुली में शिक्षा संवाद कार्यक्रम का आयोजन

हसनपुर, प्रात: किरण संवाददाता

हसनपुर प्रखंड के मंगलगढ़ विद्यालय, उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय देवधा, उच्च विद्यालय नकुनी, उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय रामपुर व उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय महुली में शिक्षा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसको लेकर उक्त विद्यालय में अध्यनरत छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों के साथ नामित पदाधिकारी ने संवाद किया। इस कार्यक्रम में अभिभावकों ने विद्यालय के बेहतर संचालन को लेकर अपने-अपनी राय दी। इस संबंध में प्रखंड विकास पदाधिकारी जय किसान ने देवधा में आयोजित सवांद कार्यक्रम में शैक्षणिक स्तर में सुधार लाने को लेकर अपनी बातें कही। उन्होंने बताया कि जीवन में शिक्षा का महत्व काफी अधिक है, जो व्यक्ति शिक्षित बनेगा व काफी विकास करेगा। ऐसे में शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने की अपील की।

रामपुर विद्यालय में प्रभारी सीओ सुधांशु मधुकर ने भी अपने संबोधन में बताया कि लोगों को सामाजिक विकास के लिए समाज के बच्चों को शिक्षा के प्रति जोड़ना दायित्व बनता है। समाज के बच्चे शिक्षित होंगे तो स्वत शिक्षित समाज होगा। जिससे समाज का विकास काफी अधिक होगा। मौके पर बीईओ डॉ संगीता मिश्रा, सीडीपीओ अमर ज्योति, एचएम धर्मेश कुमार, राजकिशोर, कृष्ण मुरारी उर्फ लक्की, प्रवीण कुमार, राजकुमार रजक, कामेश्वर पासवान, मो सगीर, ब्रजेश कुमार ब्रज आदि थे।

सम्पादकीय

कांग्रेस समझौता मूड में, लचीली!

अगले लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस अपने हितों से समझौता करने को तैयार है। सीट बंटवारे को लेकर चल रही बातचीत में कांग्रेस ने बहुत लचीला रुख दिखाया है। कांग्रेस ने सभी सहयोगी पार्टियों को मैसेज दिया है कि वह सीटों की संख्या पर नहीं अड़ेगी। असल में कांग्रेस के लिए चुनाव प्रबंधन और रणनीति बनाने का काम देख रहे सुनील कनुगोलू की टीम कांग्रेस के लिए सर्वेक्षण कर रही है और ऐसी सीटों की पहचान कर रही है, जहां वह ज्यादा आसानी से लड़ और जीत सकती है। ध्यान रहे कांग्रेस चार सौ से ज्यादा सीटों पर लड़ती रही है और पिछली बार भी 421 सीटों पर लड़ी थी। उससे पहले 2014 के चुनाव में तो 464 सीटों पर लड़ी थी लेकिन सिर्फ 44 सीट जीत पाई थी। दूसरे चुनाव में वह 421 सीटों पर लड़ी, जिसमें से 52 पर जीती और 209 सीटों पर दूसरे स्थान पर रही।इस आंकड़े को ध्यान में रख कर सुनील कनुगोलू की टीम ने ऐसी सीटों पर फोकस करने की सलाह दी है, जिन पर कांग्रेस जीत सकती है। कांग्रेस के उम्मीदवार जिन सीटों पर तीसरे या चौथे स्थान पर रहे थे उनको छोड़ दिया है। तभी पिछले दिनों कांग्रेस नेताओं की बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने 255 सीटों पर फोकस करने की बात कही। हालांकि इसका यह मतलब नहीं है कि कांग्रेस सिर्फ 255 सीटों पर लड़ेगी। वह इसके अलावा एक सौ और सीटों पर लड़ सकती है। लेकिन उसका जोर इन 255 सीटों पर होगा। बताया जा रहा है कि कांग्रेस ने 375 सीटों की मांग की है। इसमें से 291 सीटें तो ऐसी हैं, जो कांग्रेस और भाजपा के सीधे मुकाबले वाली हैं और 85 सीटें उन राज्यों में हैं, जहां प्रादेशिक क्षत्रप मजबूत हैं और कांग्रेस उनकी सहयोगी पार्टी है।हालांकि कांग्रेस ने भले 375 सीटों पर लडे की बात कही है लेकिन खडगे की बात से स्पष्ट है कि पार्टी 255 से 290 के बीच सीटें अपने लिए अनुकूल मान रही है और उन्हीं पर लडे की तैयारी कर रही है। तभी ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस का तालमेल ऐसी पार्टियों से भी हो जाएगा, जिनके साथ सीटों की एडजस्टमेंट में मुश्किल आ रही है। कांग्रेस पुरानी सहयोगी पार्टियों के साथ साथ नई सहयोगियों को जोडे के लिए भी अपनी कुछ सीटें छोडे को तैयार है।कांग्रेस हर हाल में उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और महाराष्ट्र में तालमेल करना चाहती है। इन चारों राज्यों की प्रादेशिक पार्टियों के साथ कांग्रेस का पुराना तालमेल रहा है और कांग्रेस पहले भी उनके साथ चुनाव लड़ चुकी है। इसलिए भले कांग्रेस ज्यादा सीटों की मांग कर रही है लेकिन वह प्रादेशिक पार्टियों के हिसाब से सीटों की एडजस्टमेंट के लिए तैयार है। नई पार्टियों में शिव सेना उद्धव ठाकरे गुट है, जिसके साथ कांग्रेस को पहली बार चुनाव लडा है और आम आदमी पार्टी के साथ भी तालमेल होता है तो कांग्रेस पहली बार चुनाव लड़ेगी।

बदलता भारत, झुकता विश्व

बलबीर पुंज

भारत 1947 में राजनीतिक, 1991 में आर्थिक, तो 2014 में सांस्कृतिक रूप से स्वतंत्र हुआ है। भले ही अंग्रेज 1947 में देश छोड़कर चले गए थे, परंतु कालांतर में गुलाम और बाह्य मानसिकता से प्रेरित वर्ग (राजनीतिज्ञ-नौकरशाह) के हाथों देश का नेतृत्व चला गया, जिसमें अपनी मूल सनातन संस्कृति, परंपरा और जीवनशैली के प्रति घृणा का भाव था। उसी औपनिवेशिक दृष्टिकोण की एक-एक कड़ी को ध्वस्त करके वर्तमान मोदी सरकार सुदृढ़ आर्थिक प्रगति के साथ भारत को उसकी मौलिक सांस्कृतिक जड़ों से जोड का प्रयास कर रहा है।हालिया मालदीव प्रकरण का निहितार्थ क्या है? यह ठीक है कि मालदीव पांच लाख की आबादी वाला सूक्ष्म इस्लामी देश है, जिसकी आर्थिकी मुख्यतः पर्यटन पर निर्भर है। वह भारत रूपी बड़ी आर्थिक शक्ति के समक्ष किसी भी मामले में नहीं टिकता। परंतु जिस प्रकार मालदीव सरकार के मंत्रियों द्वारा प्रकट भारत-मोदी विरोधी वक्तव्यों के खिलाफ देश का बड़ा वर्ग एकजुट होकर खड़ा हुआ– वह वैश्विक विमर्श में भारत की बढ़ती शक्ति, राष्ट्र के रूप में भारत की एकता, अखंडता और उसकी सुरक्षा व सम्मान के प्रति सजगता को रेखांकित करता है। आखिर इस आमूलचूल परिवर्तन का कारण क्या है? कहा जा सकता है कि भारत 1947 में राजनीतिक, 1991 में आर्थिक, तो 2014 में सांस्कृतिक रूप से स्वतंत्र हुआ है। भले ही अंग्रेज 1947 में देश छोड़कर चले गए थे, परंतु कालांतर में गुलाम और बाह्य मानसिकता से प्रेरित वर्ग (राजनीतिज्ञ-नौकरशाह) के हाथों देश का नेतृत्व चला गया, जिसमें अपनी मूल सनातन संस्कृति, परंपरा और जीवनशैली के प्रति घृणा का भाव था। उसी औपनिवेशिक दृष्टिकोण की एक-एक कड़ी को ध्वस्त करके वर्तमान मोदी सरकार सुदृढ़ आर्थिक प्रगति के साथ भारत को उसकी मौलिक सांस्कृतिक जड़ों से जोडे का प्रयास कर रहा है। मालदीव के भारत-विरोधी चिंतन के खिलाफ देश के बहुत बड़े वर्ग का प्रतिकार– इसी उपक्रम का परिणाम है।सुधी पाठकों को विदित होगा कि मालदीव के वर्तमान राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू चीन की गोद में बैठकर भारत-विरोधी गतिविधियों में लिप्त हैं। परंतु यह इस प्रकार और इतनी तीव्रता के साथ धराशायी हो जाएगा, इसका अनुमान स्वयं राष्ट्रपति मुइज्जू और उनकी सरकार को भी नहीं रहा होगा। आखिर यह पूरा प्रकरण क्या है? चार जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने लक्षद्वीप दौरे के अनुभव को तस्वीरों-वीडियों के माध्यम से एक्सइ पर साझा किया था। इसमें जब प्रधानमंत्री मोदी ने मालदीव का नाम लिए बिना लक्षद्वीप को पर्यटन का अच्छा विकल्प बताया, तब पहले भारत-विरोधी नीतियों में लिप्त मालदीव की मुइज्जू सरकार के तीन मंत्रियों– मरियम शिऊना, मालशा शरीफ और हसन जहान ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ भारत के लिए विषवमन प्रारंभ कर दिया। देखते ही देखते इसके विरुद्ध सोशल मीडिया पर असंख्य भारतीयों का गुस्सा भड़का, देश के कई लोकप्रिय हस्तियों ने मालदीव को आईना दिखाना, सैंकड़ों भारतीयों और पर्यटन कंपनियों द्वारा मालदीव प्रवास का पूर्वनिर्धारित पंजीकरण व हवाई टिकटें रद्द करना शुरू किया, वैसे ही मालदीव का भारत-विरोधी सत्ता-अधिष्ठान घुटनों पर आ गया और अपने उन्हीं मंत्रियों को निलंबित कर दिया। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि मालदीव आने वाले पर्यटकों में एक तिहाई हिस्सेदारी भारतीयों की है। अब चूंकि मालदीव के भारत-विरोधी उपक्रम के खिलाफ असंख्य भारतीयों ने मालदीव के बहिष्कार का निर्णय किया है, इसलिए अपनी आर्थिकी को बचाने के लिए मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने चीनी समकक्ष के आगे अधिक से अधिक चीनी पर्यटकों को मालदीव भेजने की भीख मांगी है।यह कोई पहला मामला नहीं है। चाहे संकटग्रस्त क्षेत्रों में सैन्य अभियान चलाकर अपने लोगों की सुरक्षित देश-वापसी हो, रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवाने हेतु विश्व के बड़े देशों का प्रधानमंत्री मोदी से मध्यस्था का आह्वान हो या फिर जी20 सम्मेलन में देश की कूटनीतिक सफलता– यह सब दुनिया में भारत की भू-राजनीति में मौलिक परिवर्तन को प्रामाणित करता है। भ्रष्टाचार-मुक्त जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वन और आर्थिक-सामाजिक सरोकारों के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में मोदी सरकार ने अभूतपूर्व प्रगति की है। 2014 से पहले दिल्ली, राजस्थान, मुंबई, पुणे, वडोदरा आदि नगरों में जिहादियों द्वारा बम धमाके आम थे। परंतु कश्मीर-पंजाब रूपी अपवादों को छोड़कर बीते 10 वर्षों एक भी घातक आतंकवादी हमला नहीं हुआ है। आज देश में सुरक्षा की स्थिति यह है कि यदि सीमापार से किसी ने दुस्साहस का प्रयास किया, तो उसे उचित जवाब मिलता है। 2016-2019 में भारतीय सेना की सर्जिकल स्ट्राइक और गलवान-तवांग प्रकरण में चीन की हेकड़ी को तोडा– इसका प्रमाण है देश के पूर्व राजनयिक और पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त रहे अजय बिसारिया ने अपनी पुस्तक एंगर मैनेजमेंटः द ट्रबल डिप्लोमेटिक रिलेशनशिप बिटवीन इंडिया एंड पाकिस्तानइ में खुलासा किया है कि फरवरी 2019 में बालाकोट एयरस्ट्राइक के बाद पाकिस्तान में फंसे भारतीय लड़ाकू पायलट विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान की सुरक्षित वतन-वापसी के लिए भारतीय सेना ने पाकिस्तान पर नौ घातक मिसाइलें तान दी थी। यह घटना 27 फरवरी 2019 की थी, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने कत्ल की रातइ कहकर संबोधित किया था। इससे पहले भारतीय नेतृत्व की क्या स्थिति थी, वह पाकिस्तान से आए आतंकवादियों द्वारा वर्ष 2008 के भीषण 26/11 मुंबई हमले से स्पष्ट हो जाता है, जिसमें प्रतिकार को तैयार भारतीय सेना का मनोबल तत्कालीन मनमोहन सरकार ने तोड़ दिया था।मई 2014 से पहले कुछ अपवादों (पोखरण-2 परिक्षण सहित) को छोड़कर भारतीय नेतृत्व के दृष्टिकोण में आत्मसम्मान का अभाव था। तब हमारा रवैया कैसा था, यह स्वतंत्रता के बाद देश पर लगभग 50 वर्षों तक प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से शासन करने वाली कांग्रेस के वर्तमान शीर्ष नेता राहुल गांधी के विचारों से स्पष्ट है। 2 अप्रैल 2021 को पूर्व अमेरिकी राजनयिक निकोलस बर्न्स से ऑनलाइन चर्चा करते हुए राहुल इस बात से असंतुष्ट हो गए थे कि भारत के आंतरिक मामलों पर अमेरिका अब कुछ नहीं बोलता। ऐसा ही विचार 1972 बैच के भारतीय विदेश सेवा अधिकारी (सेवानिवृत्त), पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) और चीन आदि देशों में भारतीय राजदूत रहे शिवशंकर मेनन ने भी एक विदेशी पत्रिका को लिखे कॉलम में प्रस्तुत किया था। तब राहुल और मेनन के विचारों का मर्म यह था कि अमेरिका प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सही रास्तेइ पर लाने और अमेरिकी नीति के अनुसार काम करवाने का प्रयास नहीं कर रही है।

मुइज्जू ने राष्ट्रवाद को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करवा कर क्या संदेश दिया है?

मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू चीन की यात्रा से लौटने के बाद से भारत के खिलाफ आक्रामक तेवर अपनाये हुए हैं और एक के बाद एक ऐसी घोषणाएं कर रहे हैं जो दर्शा रही हैं कि उनके मन के अंदर भारत के प्रति कितनी कटुता भरी हुई है। मोहम्मद मुइज्जू यह तो चाहते हैं कि उनके देश के लोग देशभक्त बनें लेकिन खुद वह चीन को अपना रिमोट कंट्रोल सौंप आये हैं। हालांकि राजधानी माले की जनता ने मेयर चुनाव में राष्ट्रपति को सीधा संदेश दे दिया है कि वह भारत विरोध के पथ पर आगे नहीं बढ़ें लेकिन मुइज्जू तो अपना ईमान बीजिंग को जैसे बेच आये हैं। तानाशाह शी जिनपिंग से मुलाकात करने के बाद मुइज्जू ऐसा प्रभावित हुए हैं कि अब उन्होंने वैसा ही रुख अपने देश में अपनाने का निर्णय ले लिया है। इसके लिए मालदीव की सरकार कई बड़े कदम उठाने जा रही है। इसके तहत मुइज्जू सरकार ने आगामी नए शैक्षणिक वर्ष से स्कूली पाठ्यक्रमों में ह्यराष्ट्रवादह्न को एक अलग विषय के रूप में शामिल करने की घोषणा की है। चीन की यात्रा से लौटने के बाद राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने अपने मंत्रिमंडल की जो पहली बैठक की उसमें यह महत्वपूर्ण फैसला किया गया। मंत्रिमंडल के फैसले की जानकारी देते हुए राष्ट्रपति के प्रधान सचिव अब्दुल्ला नाज़िम इब्राहिम ने कहा कि यह निर्णय युवा पीढ़ी के बीच राष्ट्रवाद के सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए किया गया है नाजिम ने कहा कि हमारा लक्ष्य एक ऐसी पीढ़ी तैयार करना है।

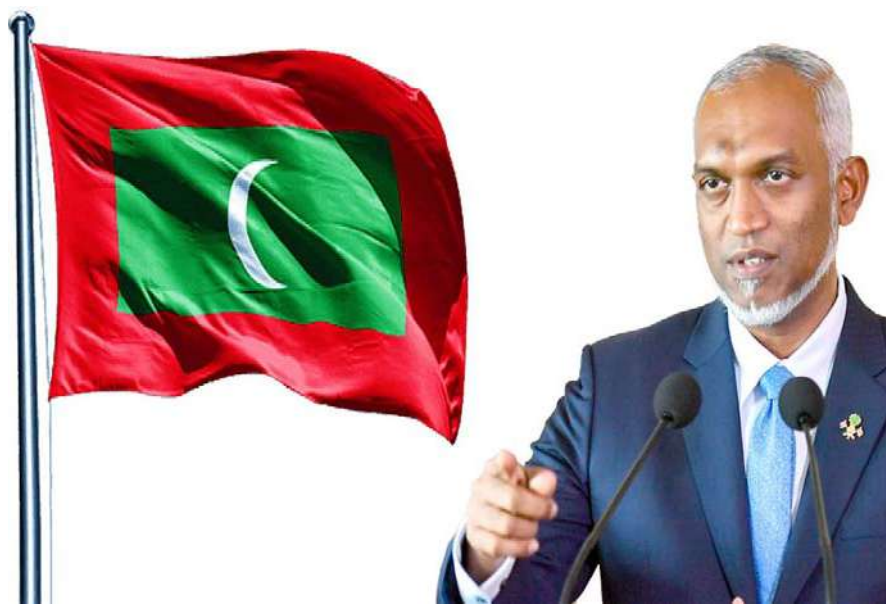

नीरज कुमार दुबे
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

मालदीव मंत्रिमंडल के फैसले की जानकारी देते हुए राष्ट्रपति के प्रधान सचिव अब्दुल्ला नाज़िम इब्राहिम ने कहा कि यह निर्णय युवा पीढ़ी के बीच राष्ट्रवाद के सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू चीन की यात्रा से लौटने के बाद से भारत के खिलाफ आक्रामक तेवर अपनाये हुए हैं और एक के बाद एक ऐसी घोषणाएं कर रहे हैं जो दर्शा रही हैं कि उनके मन के अंदर भारत के प्रति कितनी कटुता भरी हुई है। मोहम्मद मुइज्जू यह तो चाहते हैं कि उनके देश के लोग देशभक्त बनें लेकिन खुद वह चीन को अपना रिमोट कंट्रोल सौंप आये हैं। हालांकि राजधानी माले की जनता ने मेयर चुनाव में राष्ट्रपति को सीधा संदेश दे दिया है कि वह भारत विरोध के पथ पर आगे नहीं बढ़ें लेकिन मुइज्जू तो अपना ईमान बीजिंग को जैसे बेच आये हैं। तानाशाह शी जिनपिंग से मुलाकात करने के बाद मुइज्जू ऐसा प्रभावित हुए हैं कि अब उन्होंने वैसा ही रुख अपने देश में अपनाने का निर्णय ले लिया है।

इसके लिए मालदीव की सरकार कई बड़े कदम उठाने जा रही है। इसके तहत मुइज्जू सरकार ने आगामी नए शैक्षणिक वर्ष से स्कूली पाठ्यक्रमों में ह्यराष्ट्रवादह्न को एक अलग विषय के रूप में शामिल करने की घोषणा की है। चीन की यात्रा से लौटने के बाद राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने अपने मंत्रिमंडल की जो पहली बैठक की उसमें यह महत्वपूर्ण फैसला किया गया। मंत्रिमंडल के फैसले की जानकारी देते हुए राष्ट्रपति के प्रधान सचिव अब्दुल्ला नाज़िम इब्राहिम ने कहा कि यह निर्णय युवा पीढ़ी के बीच राष्ट्रवाद के सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। नाजिम ने कहा कि हमारा लक्ष्य एक ऐसी पीढ़ी तैयार करना है जो राष्ट्रवाद से परिचित हो और देश के प्रति प्रेम रखे। उन्होंने कहा कि मालदीव राष्ट्रवाद को पुनर्जीवित करना चाहता है यही कारण है कि सामाजिक परिषद ने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में राष्ट्रवाद को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाने का फैसला किया है। नाजिम ने कहा कि मुइज्जू सरकार स्कूलों में राष्ट्रवाद को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां तेजी के साथ करेगी। उन्होंने कहा कि शिक्षा मंत्रालय को इस संबंध में काम शुरू करने का निर्देश दिया गया है। हम आपको बता दें कि राष्ट्रवाद को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाना राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद मुइज्जू द्वारा चुनावों के दौरान किये गये प्रमुख वादों में से एक है। मुइज्जू ने चुनावों के समय कहा था कि राष्ट्रवाद विषय को शुरू करके सरकार बच्चों को अनुशासन सिखाएगी। इसके लिए सरकार ने शैक्षणिक वर्ष की तारीखों में बदलाव करने का फैसला भी किया है, जिसके मुताबिक चालू शैक्षणिक वर्ष अप्रैल में समाप्त होगा। नया शैक्षणिक वर्ष 26 मई से शुरू होने होगा। सरकार ने तारीखों में बदलाव इसलिए किया है ताकि उसे नया पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए तैयारियां करने के लिए कुछ और वक्त मिल जाये।

कुछ बड़ी घोषणाएं कर सकते हैं मुइज्जू हम आपको यह भी बता दें कि मुइज्जू चीन से जो निर्देश लेकर आये हैं उसे अमली जामा पहनाने के लिए वह मालदीव की संसद में कुछ बड़ी घोषणाएं कर सकते हैं। इस वर्ष संसद के पहले सत्र की उद्घाटन बैठक 5 फरवरी को होगी। मालदीव के संसद सचिवालय के मुताबिक स्पीकर मोहम्मद असलम ने इस साल के पहले सत्र की उद्घाटन बैठक 5 फरवरी को सुबह 9 बजे से तय की है। राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद मुइज्जू, जिन्होंने पिछले साल 17 नवंबर को शपथ ली थी, उन्हें संसद की उद्घाटन बैठक में अपना पहला राष्ट्रपति भाषण देना होगा। माना जा रहा है कि इस उद्घाटन भाषण में कई बड़ी घोषणाएं होंगी। हम आपको बता दें कि सरकार को कामकाज संभाले हुए दो महीने से ज्यादा हो गये हैं मगर संसद ने अभी तक कैबिनेट को मंजूरी नहीं दी है। देखना होगा कि संसद क्या उन तीन मंत्रियों का निलंबन वापस लेती है जिनको भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अमर्यादित टिप्पणी करने के चलते निलंबित किया गया था।

मुइज्जू को लगा चुनावी झटका जहां तक मुइज्जू को बीजिंग से लौटते ही लगे चुनावी झटके की बात है तो आपको बता दें कि माले के मेयर चुनावों में जनता ने सत्तारुढ़ पार्टी को हरा दिया है। हम आपको यह भी बता दें कि मुइज्जू भी राष्ट्रपति बनने से पहले माले के मेयर थे। उन्होंने मेयर पद से इस्तीफा देकर ही राष्ट्रपति चुनाव लड़ा था। इस बार मेयर चुनाव में जनता ने भारत समर्थक विपक्षी मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) को शानदार जीत देकर राष्ट्रपति के भारत विरोधी अभियान की सारी हवा निकाल दी है। एमडीपी उम्मीदवार एडम अजीम को माले के नए मेयर के रूप में चुना गया है। मालदीव मीडिया ने एडम अजीम की जीत को मुइज्जू के लिए राजनीतिक भूकंप के समान बताया है। उल्लेखनीय है कि एमडीपी का नेतृत्व भारत समर्थक पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद सोलिह कर रहे हैं, जो राष्ट्रपति चुनाव में चीन समर्थक नेता मुइज्जू से हार गए थे। मेयर चुनाव की जीत से एमडीपी की राजनीतिक किस्मत फिर से चमकने की उम्मीद है क्योंकि संसद में अब भी उसके पास अच्छी खासी संख्या में सीटें हैं।

ज्यादा आक्रामक हो गये हैं मुइज्जू जहां तक मुइज्जू की ओर से भारत विरोधी अभियान को हवा देने की बात है तो निश्चित रूप से बीजिंग से लौटते ही वह पहले से ज्यादा आक्रामक दिख रहे हैं। पहले उन्होंने भारत के साथ हालिया विवादों के बारे में पूछे जाने पर कहा कि हम छोटे (देश) हो सकते हैं, लेकिन इससे आपको हमें धमकाने का लाइसेंस नहीं मिल जाता। उसके ठीक बाद उन्होंने भारत से कहा कि वह उनके देश में तैनात अपने सैन्यकर्मियों को 15 मार्च तक हटा ले। माले की ओर से भारतीय सैनिकों को हटाने की मांग किये जाने के करीब दो महीने बाद राष्ट्रपति ने यह समय सीमा तय की है। नवीनतम सरकारी आंकड़ों के अनुसार, मालदीव में 88 भारतीय सैन्यकर्मी हैं। हम आपको बता दें कि मालदीव और भारत ने सैनिकों की वापसी पर बातचीत के लिए एक उच्च स्तरीय कोर समूह का गठन किया है। विदेश मंत्रालय ने नयी दिल्ली में बयान जारी करके कहा कि इस कोर समूह ने रविवार सुबह माले स्थित विदेश मंत्रालय के मुख्यालय में अपनी पहली बैठक की। हम आपको यह भी याद दिला दें कि पिछले साल 17 नवंबर को मालदीव के राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने के तुरंत बाद मुइज्जू ने औपचारिक रूप से भारत से भारतीय सैन्यकर्मियों को मालदीव से वापस बुलाने का अनुरोध किया था। उन्होंने कहा था कि मालदीव के लोगों ने उन्हें नयी दिल्ली से यह अनुरोध

श्रीराम के निमंत्रण को ठुकरा कर कांग्रेस ने राजनीतिक अपरिपक्वता का परिचय दिया है

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे और अधीर रंजन चौधरी एवं इंडिया गठबंधन के अन्य दलों ने शामिल नहीं होने का निर्णय लेकर जहां अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता का परिचय दिया है, वहीं भारत के असंख्य लोगों की आस्था एवं विश्वास को भी किनारे करते हुए आराध्य देव भगवान श्रीराम को राजनीतिक रंग देने की कुचेष्ठा की है। भले ही यह भारतीय जनता पार्टी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वर्चस्व का अनुष्ठान है, लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रतिष्ठा देते हुए कांग्रेस को ऐसे राजनीतिक निर्णय लेने से दूर रहते हुए समारोह में भाग लेना चाहिए था। राम मंदिर के निमंत्रण को ठुकराना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और आत्मघाती फैसला है। ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस ने खुद अपनी जमीन को खोखला करने की ठान रखी है। विनाशकाले विपरीत बुद्धि! निश्चित ही कांग्रेस अब भारत की बहुसंख्यक जनता की भावनाओं को नकार रही है, वह राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक वास्तविकताओं और भावनाओं से पूरी तरह से कट गई है। इन दिनों कांग्रेस की ओर से लिए जा रहे हर फैसले भारत विरोधी शक्तियों को बल देने, कुछ वामपंथी चरमपंथियों को बढ़ावा देने, जातीयता एवं साम्प्रदायिकता की राजनीति को कायम रखने और शीर्ष पर बैठे नेताओं के आसपास के कुछ कट्टरपंथी अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए है। कांग्रेस ने पिछले कुछ दशकों में अयोध्या में मंदिर के लिए कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाया जो भगवान श्रीराम के अस्तित्व को नकार देने का ही द्योतक है।

ललित गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार है

श्रीराम राज्य तब भी और आज भी राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए है। जनता की भलाई एवं आस्था को न देखकर कांग्रेस मुस्लिम एवं ईसाई वोटों को प्रभावित करने के लिये तथाकथित ऐसा निर्णय लिया है, जो उसकी हिन्दू विरोध मानसिकता का द्योतक है।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे और अधीर रंजन चौधरी एवं इंडिया गठबंधन के अन्य दलों ने शामिल नहीं होने का निर्णय लेकर जहां अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता का परिचय दिया है, वहीं भारत के असंख्य लोगों की आस्था एवं विश्वास को भी किनारे करते हुए आराध्य देव भगवान श्रीराम को राजनीतिक रंग देने की कुचेष्ठा की है। भले ही यह भारतीय जनता पार्टी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वर्चस्व का अनुष्ठान है, लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रतिष्ठा देते हुए कांग्रेस को ऐसे राजनीतिक निर्णय लेने से दूर रहते हुए समारोह में भाग लेना चाहिए था। राम मंदिर के निमंत्रण को ठुकराना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और आत्मघाती फैसला है। ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस ने खुद अपनी जमीन को खोखला करने की ठान रखी है। विनाशकाले विपरीत बुद्धि! निश्चित ही कांग्रेस अब भारत की बहुसंख्यक जनता की भावनाओं को नकार रही है, वह राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक वास्तविकताओं और भावनाओं से पूरी तरह से कट गई है। इन दिनों कांग्रेस की ओर से लिए जा रहे हर फैसले भारत विरोधी शक्तियों को बल देने, कुछ वामपंथी चरमपंथियों को बढ़ावा देने, जातीयता एवं साम्प्रदायिकता की राजनीति को कायम रखने और शीर्ष पर बैठे नेताओं के आसपास के कुछ कट्टरपंथी अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए है। कांग्रेस ने पिछले कुछ दशकों में अयोध्या में मंदिर के लिए कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाया जो भगवान श्रीराम के अस्तित्व को नकार देने का ही द्योतक है। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल हिन्दुओं का ही नहीं बल्कि राष्ट्र का उत्सव है। साथ ही देश के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गौरव का महा-अनुष्ठान है।

बाबर से लेकर औरंगजेब तक सभी मुगल आक्रांताओं ने तलवार के बल पर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन ही नहीं कराया बल्कि हिन्दु मन्दिरों एवं आस्था के केन्द्रों को ध्वस्त किया था। श्रीराम जन्मभूमि, श्रीकृष्ण जन्मभूमि और काशी विश्वनाथ धाम को भी नहीं छोड़ा गया और हजारों मंदिरों को ध्वस्त कर उनके स्थान पर मस्जिदें बनवा दीं गयी। आजादी के बाद इस गौरवमय धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को पुनर्निर्मित करने का काम होना चाहिए था लेकिन कांग्रेस शासन ने संकीर्ण एवं स्वार्थ की राजनीति के कारण ऐसा नहीं होने दिया। आज भाजपा अपनी राष्ट्रीय अस्मिता एवं ऐतिहासिक भूलों को सुधारने काम कर रही है तो उसे राजनीतिक रंग देना मानसिक दिवालियापन एवं राष्ट्र-विरोधी सोच है। श्रीराम मंदिर राजनीति का विषय नहीं है बल्कि आस्था का विषय है। आस्था हर व्यक्ति की अस्मिता से जुड़ा प्रश्न है। राम लला साढ़े पांच सौ वर्षों से इसका इंतजार कर रहे थे। अब वह समय आ गया है, भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण हो चुका है और आगामी 22 जनवरी का दिन इतिहास के पन्नों में दर्ज होने वाला है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस दिन राम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में उपस्थित रहेंगे। श्रीराम भारतीय समाज के आदर्श पुरुष रहे हैं, भारत की राजनीति के लिये वे प्रेरणास्रोत हैं, उन्हें केवल भाजपा या आरएसएस का बताने वाले भारत की जनआस्था से स्वयं को ही दूर कर रहे हैं, स्वयं को हिन्दू विरोधी एवं राम-विरोधी होने का आधार ही मजबूत किया है। अच्छा होता निमंत्रण ठुकराने की बजाय इस समारोह में उपस्थित होकर श्रीराम के प्रति एवं असंख्य लोगों की आस्था का सम्मान करते। इस तरह एक जीवंत परम्परा को झुठलाने एवं ठुकराने के निश्चित ही आत्मघाती दुष्परिणाम होंगे।

श्रीराम राज्य तब भी और आज भी राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए है। जनता की भलाई एवं आस्था को न देखकर कांग्रेस मुस्लिम एवं ईसाई वोटों को प्रभावित करने के लिये तथाकथित ऐसा निर्णय लिया है, जो उसकी हिन्दू विरोध मानसिकता का द्योतक है। कांग्रेस ने सदैव श्रीराम मंदिर आंदोलन से दूरी बनाकर रखी, मंदिर निर्माण की प्रक्रिया में रोड़े अटकाए और जिसने सर्वोच्च न्यायालय में यह हलफनामा दिया हो कि श्रीराम का कोई अस्तित्व नहीं है, श्रीराम एक काल्पनिक पात्र हैं, उस कांग्रेस के नेताओं से यह अपेक्षा ही कैसे की जा सकती है कि वे श्रीराम मंदिर निर्माण के महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक प्रसंग में उत्साह, उमंग एवं आनंद के साथ शामिल होंगे? कांग्रेस के इस निर्णय से हिन्दू मन के कांग्रेसी नेता अवश्य ही आश्चर्यचकित एवं दुःखी हैं। कांग्रेस के भीतर से ही कई नेताओं ने खुलकर यह कहने की हिम्मत दिखायी है कि मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम हमारे आराध्य देव हैं इसलिए यह स्वाभाविक है कि भारतभर में अनगिनत लोगों की आस्था इस नवनिर्मित मंदिर से वर्षों से जुड़ी हुई है। कांग्रेस के कुछ लोगों को उस खास तरह के बयान से दूरी बनाए रखनी चाहिए और जनभावना का दिल से सम्मान करना चाहिए। यहां प्रश्न यह भी है कि जब मंदिर निर्माण को मंजूरी देने वाले सुप्रीम कोर्ट के फैसले का कांग्रेस ने स्वागत किया था, तो अब वे इसे केवल भाजपा का पार्टीगत मामला क्यों मान रही है? वास्तव में कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दल केवल एक ही तरीके से भाजपा को इससे होने वाले राजनीतिक लाभ को कम कर सकते है और वह तरीका शालीनता से इस समारोह में भाग लेना और इस बात पर जोर देना है कि श्रीराम सभी के हैं, उन पर किसी एक पार्टी या नेता का एकाधिकार नहीं है। लेकिन एक तरफ न्यायिक प्रक्रिया का स्वागत करना और दूसरी तरफ उद्घाटन-समारोह का न्योता ठुकराना अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने वाली रणनीति है। भले ही कांग्रेस ने सारे नफा-नुकसान को देखकर अपनी धर्मनिरपेक्ष वाली वैचारिक छवि के साथ खड़ी रहने का फैसला लिया हो, लेकिन इस फैसले से सन्निकट खड़े लोकसभा चुनाव में उसे भारी नुकसान ही होगा। वैसे भी श्रीराम के बहुप्रतीक्षित धाम का निर्माण भाजपा का अपना निजी प्रोजेक्ट नहीं है, यह सुप्रीम कोर्ट के फैसले की निष्पत्ति है और इसीलिए यह एक गैर-राजनीतिक घटना है।

नयी चुनौतियों के बीच राहुल की यात्रा-2

मकर संक्रांति, रविवार को उत्तरायण होते सूर्य की धूप में राहुल गांधी अपनी बहुप्रतीक्षित भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर निकल पड़े हैं। 7 सितम्बर, 2022 को कन्याकुमारी से चलकर 30 जनवरी, 2023 को श्रीनगर के लाल चौक पर तिरंगा फहराकर पूर्ण हुए उनके मार्च से इस बार की यात्रा दूरी के मामले में विस्तारित है तो उद्देश्य के लिहाज से वृहत्तर। पहले वे 4 हजार किलोमीटर चले थे, अब 6200 किमी नापेंगे। उस बार पूरा पैदल चले थे, अबकी पांव-पांव चलने के साथ वाहन में भी चलेंगे। पिछले वक्तदक्षिण से उत्तर की ओर बढ़े थे, अब पूर्वोत्तर के हिंसाग्रस्त मणिपुर से निकलकर पश्चिमी छोर में अरब सागर तीरे बसी देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई को 20 मार्च को छुएंगे। फर्क केवल किमी की घट-बढ़ का नहीं है, न ही यात्रा के तरीकों का है। अंतर है परिस्थितियों का जिनके बीच राहुल का सफर शुरू हुआ है, नयी चुनौतियों का है; और बढ़ी हुई जिम्मेदारियों का भी। उनकी दोनों यात्राओं में समानता एक ही है- अंधकार में प्रकाश फैलाने की जो जिम्मेदारी हर नागरिक की है, उसे वे भी निभा रहे हैं- एक राजनैतिक संगठन के नेता के तौर पर उनके द्वारा किये जा रहे उत्तरदायित्व के निर्वाह की बात तो बाद में की जाये। राहुल की यह यात्रा ऐसे वक्त में हो रही है, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का देश के सभी अंगों पर पूर्ण नियंत्रण है। इनमें उनकी अपनी भारतीय जनता पार्टी, मातृसंस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संसद, कार्यपालिका, संवैधानिक संस्थाएं, मीडिया सारा कुछ शामिल है। गिने-च

संक्षिप्त खबरें

डीएम समेत अफसरों-जनप्रतिनिधियों ने दिया स्वच्छता का संदेश

अमरोहा। अयोध्या में श्रीराम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर 14 से 22 जनवरी तक चलाए गए विशेष सफाई अभियान के तहत सोमवार को डीएम समेत अन्य अफसरों एवं जनप्रतिनिधियों ने श्रमदान किया। गजस्थल के शिव मंदिर परिसर में सफाई करते हुए आम लोगों को भी इस ओर जागरूक किया। गौरतलब है कि अभियान के तहत जिलेभर के प्रमुख मंदिरों, गंगा घाटों, स्कूल-कालेज, सरकारी कार्यालय, पंचायत भवनों में विशेष सफाई अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत सोमवार को डीएम राजेश कुमार त्यागी नौगावां सादात क्षेत्र के ऐतिहासिक शिव मंदिर गजस्थल पहुंचे। यहां डीएम समेत अन्य अफसरों एवं जनप्रतिनिधियों ने सफाई अभियान चलाया। मंदिर परिसर में सफाई करते हुए आम लोगों को भी स्वच्छता का संदेश दिया। इस दौरान एडीएम सुरेंद्र सिंह, एसडीएम सुधीर कुमार, ब्लॉक प्रमुख गुरेंद्र सिंह समेत अन्य अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। वहीं, सफाई अभियान के बाद मंदिर में विधिवत पूजन कर जलाभिषेक भी किया गया। इस दौरान डीपीआरओ पारुल सिसौदिया समेत अन्य संबंधित अधिकारी-कर्मी एवं श्रद्धालु मौजूद रहे।

श्रद्धालुओं ने दूसरे दिन भी गंगा मे लगाईं आस्था की डूबकी

गजरौला।मकर संक्रांति पर्व पर कड़ाके की ठंड के बीच सोमवार को लगातार दूसरे दिन भी हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने गंगा में आस्था की डुबकी लगाई। गंगा स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने खिचड़ी के प्रसाद का वितरण किया। जरूरतमंदों को दान कर पुण्य कमाया। गौरतलब है कि रविवार से दूर बहुत से श्रद्धालुओं ने सोमवार को मकर संक्रांति पर्व मनाया। इस दौरान मंदिरों में विधि विधान संग पूजन किया गया। अधिकांश परिवारों में खिचड़ी बनाई गई। मान्यता है कि मकर संक्रांति पर खिचड़ी का ही भोजन किया जाता है। वहीं, दूसरी ओर ब्रजघाट व तिगरी गंगा धाम में तड़के से श्रद्धालुओं का गंगा स्नान के लिए पहुंचना भी शुरू हो गया। विभिन्न स्थानों पर भंडारों का आयोजन कर खिचड़ी वितरित की गई। दोपहर तक गंगा तटों पर गंगा स्नान के लिए श्रद्धालुओं के पहुंचने का सिलसिला जारी रहा।

यमुना एक्सप्रेस-वे पर दो बसों की टक्कर में 40 लोग घायल

उत्तर प्रदेश में यमुना एक्सप्रेसवे पर सोमवार को दो बसों की टक्कर में कम से कम 40 यात्री घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।हादसा सुबह करीब 3 बजे मथुरा के पास माइलस्टोन 110 राया कट पर हुआ। घायलों को अस्पताल ले जाया गया। अधिकारियों के मुताबिक, एक बस धौलपुर से नोएडा जा रही थी जबकि दूसरी बस इटावा से नोएडा जा रही थी और यह हादसा आगरा से नोएडा जाने वाली सड़क पर हुआ। दुर्घटना के तुरंत बाद, 31 यात्रियों को जिला अस्पताल ले जाया गया, जबकि नौ अन्य को अन्य अस्पतालों में भर्ती कराया गया। मथुरा के एसएसपी शैलेश पांडे ने कहा, ह्यह्लहादसे का शिकार हुई एक बस धौलपुर से नोएडा जा रही थी और दूसरी बस इटावा से नोएडा जा रही थी। ये दोनों बसें यमुना एक्सप्रेसवे पर दुर्घटनाग्रस्त हो गईं। उत्तर भारत भीषण ठंड की चपेट में है और दिन और रात के अधिकांश समय इस क्षेत्र में कोहरा छाया रहता है, जिससे विजिबिलिटी सीमित हो जाती है, साथ ही ऐसी दुर्घटनाओं का खतरा भी बढ़ जाता है।

बिजनौर कांग्रेस जिलाध्यक्ष शेरबाज पठान की करीब ढाई करोड़ की संपत्ति जब्त

उत्तर प्रदेश के बिजनौर में पुलिस ने गैंगस्टर एक्ट की कार्यवाही के अभियुक्त शेरबाज पठान की 2 करोड़ 40 लाख की सम्पत्ति जब्त की है। कुख्यात गैंगस्टर शेरबाज पठान बिजनौर जिले के चांदपुर कस्बे के मौहल्ला चाहसंग का रहने वाला है। पुलिस ने उनकी कुल 2 करोड़ 40 लाख 81 हजार रुपए की चल-अचल सम्पत्ति गैंगस्टर अधिनियम के अंतर्गत कुर्क की है। आरोपी के खिलाफ धोखाधड़ी, जान से मारने का प्रयास, मारपीट, आर्म्स एक्ट, गुण्डा एक्ट और गैंगस्टर अधिनियम के कुल 46 मामले दर्ज हैं। बिजनौर जिलाधिकारी के आदेश पर करवाई करते हुए पुलिस ने एक ईंट भट्टा, 200 वर्ग मीटर प्लाट खाता सं 43 , 231, 232, 334, 373, 480, 479, 481, 482 रकबा 2.318 हेक्टेयर (कृषि भूमि) ग्राम खानपुर खादर, खाता सं 38 वह 73 रकबा 2.318 हेक्टेयर (कृषि भूमि) ग्राम ताहरपुर गुलाम इनामैन तहसील चांदपुर जनपद बिजनौर में जब्त की है जिसकी कीमत करीब 2 करोड़ 40 लाख 81 हजार 920 रुपए है।

श्री वेंक्टेश्वरा में "नमों विकसित भारत ऐम्बेसडर अभियान" के दूसरे चरण का शुभारम्भ

प्रात : किरण संवाददाता

● श्रीराम प्राण प्रतिष्ठा समारोह का निमन्त्रण मिलना मेरा परम सौभाग्य,22 को समारोह में सम्मलित होने के साथ-साथ संस्थान परिसर में बाईस हजार दीपक जलाकर एवं आतिशबाजी कर मनायेंगे दीपावली: डॉ. सुधीर गिरि

गजरौला। सोमवार का दिन श्री वेंक्टेश्वरा समूह के लिए बेहद यादगार रहा। वेंक्टेश्वरा संस्थान में ह्यह्यनमो विकसित भारत ऐम्बेसडर अभियानह्यह्य के तहत प्रदेश संगठन महामन्त्री धर्मपाल ने संस्थान के बाईस सौ से अधिक छात्र-छात्राओं/युवाओं को ह्यह्यनमो विकसित भारत ऐपह्यह्य डाउनलोड कराकर ह्यह्यविकसित भारत ऐम्बेसडरह्यह्य बनाया। वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय/संस्थान गजरौला एवं मेरठ परिसर को मिलाकर अब तक नमो एप के द्वारा अब तक चार हजार ह्यह्यविकसित भारत ऐम्बेसडरह्यह्य तैयार कर चुका है। विगत सप्ताह भी केन्द्रीय मन्त्री मीनाक्षी लेखी के निर्देशन में संस्थान के अठारह सौ से अधिक छात्र/छात्राओं को देश सेवा की शपथ दिलाते हुए ह्यह्यविकसित भारत ऐम्बेसडरह्यह्य बनाया गया। आज के समारोह में समूह चेयरमैन डॉ. सुधीर गिरि ने प्रदेश महामन्त्री को पगड़ी, पटका एवं राम मंदिर भेंट किया, तो वहीं प्रदेश संगठन महामंत्री ने राम जन्म भूमि प्राण प्रतिष्ठा का निमन्त्रण दिया। समूह चेयरमैन डॉ. सुधीर गिरि ने प्राण प्रतिष्ठा निमन्त्रण को अपना परम सौभाग्य बताते हुए बाईस जनवरी को विश्वविद्यालय में 22 हजार दीपक जलाकर दीवाली मनाने का निर्णय लिया है। इस ऐतिहासिक पल को यादगार बनाने के लिए जनपदवासियों को शानदार आतिशबाजी का नजारा देखने को मिलेगा। श्री वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय/ संस्थान के अटल स्मृति मुख्य द्वार पर आयोजित ह्यह्यनमो विकसित ऐम्बेसडर अभियानह्यह्य का शुभारम्भ मुख्य अतिथि प्रदेश संगठन महामंत्री श्री धर्मपाल जी, समूह चेयरमैन डॉ. सुधीर गिरि, क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री सतेन्द्र सिसोदिया, प्रतिकुलाधिपति डॉ. राजीव त्यागी, क्षेत्रीय अध्यक्ष भाजयुमों सुखविन्दर सिंह सोम जिलाध्यक्ष उदय गिरि आदि ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्प अर्पित करके किया।इसके बाद मुख्य अतिथि ने नमो एप डाउनलोड के लिए दिये गये टोल फ्री नम्बर पर मिस्डकॉल कराकर दो हजार से अधिक युवाओं को ह्यह्यनमो विकसित भारत एम्बेसडरह्यह्य बनाया।अपने सम्बोधन में मुख्य अतिथि संगठन महामन्त्री धर्मपाल ने कहा कि युवा राष्ट्र की ताकत है। आदरणीय प्रधानमंत्री के 2047 तक विकसित भारत के संकल्प का पूरा करने में युवा शक्ति का योगदान सबसे ऊपर होगा। वेंक्टेश्वरा शानदार शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ ह्यह्यविकसित भारत@2047ह्यह्य अभियान में अपना शानदार योगदान दे रहा है। देश के अन्य शिक्षण संस्थानों का भी वेंक्टेश्वरा से सीख लेकर राष्ट्रधर्म के इस महायज्ञ में अपना योगदान देना होगा।इस अवसर पर प्रधान सलाहकार डॉ. वी.पी.एस. अरोड़ा, सी.ई.ओ. अजय श्रीवास्तव, सलाहकार आर. एस. शर्मा, कुलपति डॉ. राकेश यादव, कुलसचिव डा. पीयूष पाण्डेय, डीन अकेडमिक अफेयर्स डॉ. राजेश सिंह, डॉ. दिव्या गिरधर, डॉ. मोहित शर्मा, डॉ. तेजपाल सिंह, डॉ. अनिल जयसवाल, डॉ. आशुतोष सिंह, डॉ. ओम प्रकाश गोसाई, डॉ. राहुल कुमार, डॉ. अश्विन कुमार सक्सेना, डॉ. राम निवास शर्मा, डॉ. सर्वनन्द साहू, डॉ. ऐना एरिक ब्राउन, डॉ. एल. एस. रावत, आशी नायर, अरूण कुमार गोस्वामी, मारूफ चौधरी, अभिषेक जैन, मेरठ परिसर से डॉ. प्रताप, मीडिया प्रभारी विश्वास राणा, आदि लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का शानदार संचालन प्रतिकुलाधिपति डॉ. राजीव त्यागी ने किया।

गरीबों को बिना भेदभाव मिल रहा सरकारी योजनाओं का लाभ: ललित तवंर

प्रात : किरण संवाददाता

हसनपुर। जिला पंचायत अध्यक्ष ललित तंवर ने विधान सभा हसनपुर के ग्राम ढवारसी में ह्यमोदी की गारंटी वाली गाड़ीह्न के पहुंचने पर आयोजित ह्यविकसित भारत संकल्प यात्राह्न कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर भाजपा सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों से संवाद तथा विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये एवं उपस्थित देवतुल्य जनता के साथ 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की शपथ ली।और कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व का परिणाम है जो सभी गरीबों को बिना भेदभाव कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है। आज हर भारतीय अपने देश पर गर्व की अनुभूति करता है।इसी के साथ ग्राम ढवारसी में ग्राम वासियों के घर, घर व दुकानों पर जाकर अयोध्या में प्रभु श्री राम जी के भव्य दिव्य मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव (गृहसंपर्क अभियान) के अंतर्गत रामलला प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के निमंत्रण रूप अक्षत व पत्रक वितरण किये व साथ ही मन्दिर में जाकर स्वच्छता अभियान चलाकर साफ सफाई की।

श्रद्धालुओं की सुविधा का संदेश दे रहे सरयू के घाटों पर स्थापित बायो टॉयलेट्स

अयोध्या, एजेंसी

अयोध्या में बड़े पैमाने पर धार्मिक पर्यटन को देखते हुए सरकार ने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए कई कदम उठाए हैं। इसी क्रम में सरकार की ओर से मकर संक्रांति के अवसर पर सरयू नदी के घाटों पर बायो टॉयलेट्स स्थापित किए गए हैं।इनके माध्यम से न सिर्फ पर्व पर स्नान करने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा प्रदान की जा रही है, बल्कि सीएम योगी के स्वच्छ अयोध्या के संकल्प को भी मूर्त रूप प्रदान किया जा रहा है। ये सभी बायो टॉयलेट्स अयोध्या नगर निगम द्वारा स्थापित किए गए हैं। अयोध्या के नगर आयुक्त एवं अयोध्या विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष विशाल सिंह ने कहा कि अयोध्या में बड़े पैमाने पर विकास हो रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में हम धार्मिक पर्यटन और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए सरयू घाटों के किनारे बायो टॉयलेट्स स्थापित कर रहे हैं। अयोध्या नगर निगम की इस पहल का उद्देश्य मकर संक्रांति स्नान और पर्यटन के लिए प्रमुख घाटों पर आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा में सुधार करना है। उन्होंने कहा कि ये बायो टॉयलेट सिर्फ सुविधाओं से कहीं अधिक हैं। ये अयोध्या को धार्मिक पर्यटन और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए एक मॉडल शहर बनाने की एक बड़ी योजना का हिस्सा हैं। सुविधाओं में 24/7 टोल-फ्री हेल्पलाइन, मुफ्त सार्वजनिक पहुंच, स्वच्छता और संचालन का रखरखाव शामिल है। उन्होंने बताया कि हम उपयोगकर्ता के अनुभव पर भी ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इसके लिए महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए बहुभाषी साइनेज और शौचालय, सभी के लिए पहुंच और सुविधा सुनिश्चित की गई है। इसके अलावा पर्यावरणीय दिशानिर्देशों का पालन करते हुए, ये बायो टॉयलेट्स ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016, एनजीटी दिशानिर्देशों और स्वच्छ भारत मिशन एसबीएम 2.0 निर्देशों के अनुरूप बनाए गए हैं। उन्होंने श्रद्धालुओं से अपील की कि अयोध्या को स्वच्छता, स्थिरता और आध्यात्मिक महत्व का प्रतीक बनाने की दिशा में इस यात्रा में हमारे साथ शामिल हों। आपका समर्थन अमूल्य है।

हर कॉमन सर्विस सेंटर पर बिजली बिल जमा होगा

नोएडा, एजेंसी

विद्युत निगम के उपभोक्ता अब किसी भी कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) में बिजली बिल जमा कर सकते हैं। इस सुविधा का सबसे ज्यादा लाभ देहात क्षेत्र के उपभोक्ताओं को मिलेगा। ऑनलाइन बिल जमा करने में देहात क्षेत्र के उपभोक्ताओं का प्रतिशत काफी कम है। देहात क्षेत्रों में विद्युत निगम के बिलिंग काउंटर भी काफी दूर हैं। कॉमन सर्विस सेंटर पर देहात क्षेत्र के उपभोक्ता आसानी से बिल जमा कर सकेंगे। जिले में विद्युत निगम के करीब साढ़े तीन लाख से अधिक उपभोक्ता हैं। इसमें शहरी क्षेत्र करीब दो लाख और देहात क्षेत्र में डेढ़ लाख उपभोक्ता हैं। शहरी क्षेत्र में ऑनलाइन बिल जमा करने वाले उपभोक्ताओं का प्रतिशत करीब 80 प्रतिशत से अधिक है। वहीं, देहात क्षेत्र में 20 प्रतिशत उपभोक्ता ही ऑनलाइन बिल जमा कर रहे हैं। शहरी क्षेत्र की तुलना में देहात क्षेत्र में बिलिंग काउंटर भी कम हैं। ऐसे में देहात क्षेत्र के उपभोक्ताओं को बिल जमा करने के लिए परेशानी का सामना करना पड़ता है। अभी तक बिल जमा करने के लिए निर्धारित किए गए कॉमन सर्विस सेंटर भी सीमित थे। अब विद्युत निगम ने जिले के सभी कॉमन सर्विस सेंटर पर बिल जमा करने की सुविधा शुरू की है। इससे उपभोक्ता अपने नजदीकी सीएससी पर जमकर बिल जमा कर सकेंगे। सीएससी पर जाकर बिल जमा करने के लिए उपभोक्ताओं से अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाएगा। इस सुविधा से विद्युत निगम के राजस्व में भी वृद्धि होगी। बिल लेकर जाना होगा : विद्युत निगम के अधिकारियों के अनुसार सीएससी पर बिल जमा करने के लिए उपभोक्ता को बिल या कनेक्शन पंजीयन रसीद ले जाना अनिवार्य है। विद्युत निगम के पोर्टल पर कनेक्शन नंबर डालते ही उपभोक्ता के बिल का ब्योरा सामने आ जाएगा। इसके बाद बिल जमा किया जाएगा।

दुष्कर्म के आरोपित एएसपी के खिलाफ करवाई की मांग को लेकर कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन, सौंपा ज्ञापन

गाजियाबाद, एजेंसी

उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग में एटीएस के अपर पुलिस अधीक्षक पद पर तैनात राहुल श्रीवास्तव के खिलाफ करवाई की मांग को लेकर सोमवार को राष्ट्रवादी जन सत्तादल ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन किया। जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। श्रीवास्तव पर 21 वर्षीय युवती के साथ दुष्कर्म करने के आरोप में मुकदमा दर्ज है। ज्ञापन में कहा गया है कि आरोपितों ने लखनऊ में 21 वर्षीय युवती का बलात्कार किया। पीड़ित युवती के करीब तीन महीने पुलिस के चक्कर लगाने के बाद मुकदमा दर्ज किया गया। बावजूद इसके अभी तक आरोपित अपर पुलिस अधीक्षक अपने पद पर बने हैं। पीड़ित का आरोप है कि लगातार अपने पद का दुरुपयोग करते हुए दर्ज अभियोग को प्रभावित कर रहे है। युवती समेत परिवार को भिन्न-भिन्न प्रकार से अपने विरुद्ध पंजीकृत अभियोग को वापस लेने का दबाव बनाया जा रहा है। साथ ही उनके द्वारा युवती को परिवार सहित जान से मारने की धमकी व झूठे मुकदमे में जेल भेजने की धमकी भी दी जा रही है। ताकि डरकर पीड़ित युवती व परिवार ने आरोपित पर पंजीकृत कराए गए अभियोग को वापस ले लिया जाए। ज्ञापन में आरोपित राहुल श्रीवास्तव व अन्य के विरुद्ध जल्द से जल्द मुकदमा दर्ज कर जेल भेजने की मांग की गई है। यह भी आरोप लगाया गया है कि अपर पुलिस अधीक्षक राहुल श्रीवास्तव को पुलिस मुख्यालय में बैठे सजातीय अधिकारी बचा रहे हैं। ज्ञापन में अपर पुलिस अधीक्षक राहुल श्रीवास्तव श्रीवास्तव, सौरव, सतीश, विक्रम, सिद्धार्थ को पुलिस विभाग से निलंबित कर गिरफ्तार करने की मांग की गई। ज्ञापन राष्ट्रवादी जनसत्ता दल के महासचिव व प्रभारी चिकित्सा प्रकोष्ठ यूपी डॉ. ब्रजपाल त्यागी के नेतृत्व में दिया गया।

विपिल सातवीं बार एनईए अध्यक्ष बनेंगे

नोएडा, एजेंसी

विपिन मल्हन का लगातार सातवीं बार नोएडा एंटरप्रिनियोर्स एसोशिएसन (एनईए) का अध्यक्ष चुना जाना तय हो गया है। विपिन मल्हन पैनल के सामने किसी भी प्रत्याशी ने नामांकन दाखिल नहीं किया है। विपिन मल्हन ने सबसे पहले वर्ष 2011 में अध्यक्ष पद पर जीत हासिल की थी। इसके बाद से वे निर्विरोध जीतते आ रहे हैं। एनईए में अध्यक्ष, महासचिव और कार्यकारिणी सदस्यों समेत 146 पद हैं। चुनाव के लिए डेढ़ सौ प्रत्याशियों ने नामांकनपत्र खरीदा था। सोमवार को नामंकनपत्र जमा करने का अंतिम दिन था। विपिन मल्हन और वीके सेठ पैनल के सभी प्रत्याशियों ने चुनाव अधिकारी के समक्ष नामांकनपत्र दाखिल किए। नामांकन से पहले सभी प्रत्याशी सेक्टर-19 स्थित सनातन धर्म मंदिर में एकत्र हुए और पूजा अर्चना के बाद नामांकन करने सेक्टर-6 स्थित एनईए भवन पहुंचे। पैनल का रास्ते में सेक्टर-9 और सेक्टर-5 में विभिन्न स्थानों पर उद्यमियों ने स्वागत किया। नामांकन का समय बीत जाने तक इस पैनल के अलावा अन्य किसी प्रत्याशी ने नामांकन नहीं कराया है। ऐसे में विपिन मल्हन के पूरे पैनल का निर्विरोध चुना जाना तय है। इसकी विधिवत घोषणा 17 जनवरी को नाम वापिसी का समय बीतने के बाद होगी। विपिन मल्हन ने कहा कि वे उद्यमियों की समस्याओं के निदान के लिए लगातार कार्य करेंगे। उनकी प्राथमिकता रहेगी कि उद्योग चलते रहें और उनके संचालन में किसी तरह की समस्या न आये तथा औद्योगिकरण बढ़े। जिसके लिए वह और उनका पैनल लगातार काम करेगा। उन्होंने एक बार फिर से निर्विरोध चुने जाने पर उद्यमियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उनके अलावा वीके सेठ महासचिव के पद पर लगातार पांचवीं बार चुने जाएंगे। वरिष्ठ उपाध्क्ष के पद पर धर्मवीर शर्मा, मुकेश कक्कड़, हरीश जुनेजा, राकेश कोहली, कोषाध्यक्ष पद पर एससी जैन, उपाध्यक्ष सुधीर श्रीवास्तव, मोहन सिंह, मौहम्मद इरशाद, राजेंद्र जिंदल, सचिव पद पर कमल कुमार, आलोक गुप्ता, राहुल नैय्यर, वीरेंद्र नरूला, राजन खुराना, पवन जैन, मयंक गुप्ता, सह कोषाध्यक्ष पद पर वीके बंसल और संदीप बिरमानी का चुना जाना तय है। उनके सामने अन्य किसी प्रत्याशी ने नामांकन नहीं किया है।

यूपी एटीएस ने बंगाल में मदरसे पर मारा छापा, कंप्यूटर और सिम कार्ड जब्त

लखनऊ, एजेंसी

यूपी पुलिस के आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने मानव तस्करी और आतंकी फंडिंग सिंडिकेट के सदस्य अबू सालेह द्वारा संचालित पश्चिम बंगाल के एक मदरसे से एक कंप्यूटर और दो सिम कार्ड बरामद किए हैं।दो ट्रस्टों के नाम पर 58 करोड़ रुपये की विदेशी धनराशि प्राप्त करने और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए उसका दुरुपयोग करने के आरोपी अबू सालेह को 8 जनवरी को लखनऊ के मानक नगर इलाके से गिरफ्तार किया गया था। एटीएस अधिकारियों ने कहा कि पुलिस उपाधीक्षक के नेतृत्व में एक टीम अबू सालेह को पश्चिम बंगाल ले गई। ह्लहमने अब तक मदरसे से एक कंप्यूटर, सिम कार्ड और घुसपैठियों से संबंधित कई दस्तावेज बरामद किए हैं। जब्त की गई सामग्री को अब फोरेंसिक ऑडिट के लिए भेजा जाएगा। एटीएस द्वारा अबू सालेह को सोमवार को उत्तर प्रदेश वापस लाने और उसकी रिमांड बढ़ाने की मांग के लिए अदालत में पेश करने की संभावना है। अबू सालेह ने कथित तौर पर कबीर बाग मिल्लत अकादमी और हरोआ-अल जामियातुल इस्लामिया दारुल उलूम मदरसा सहित विभिन्न ट्रस्टों का निदेशक होने का दावा किया था। एटीएस सूत्रों ने कहा, ह्लइन ट्रस्टों के एफसीआरए खातों (जिनके माध्यम से विदेशी फंडिंग प्राप्त की जा सकती है) से पता चला है कि उसे 2018 और 2022 के बीच यूके स्थित उम्माह वेलफेयर ट्रस्ट से 58 करोड़ रुपये मिले थे। एटीएस के एक अधिकारी ने कहा कि उम्माह वेलफेयर ट्रस्ट के खाते बार्कलेज और एचएसबीसी में थे, लेकिन ब्रिटेन में इसकी गतिविधियों के कारण इसे बंद कर दिया गया। ट्रस्ट ने इंटरपोल, एक फिलिस्तीनी संगठन, जिसे अमेरिका द्वारा आतंकवादी इकाई के रूप में नामित किया गया है, के साथ काम किया। उन्होंने कहा कि फंडिंग का एक बड़ा हिस्सा फर्जी बिल के माध्यम से नकदी के रूप में प्राप्त किया गया था।

लोकसभा चुनाव में महिलाओं को जिम्मेदारी देने की तैयारी : मनीषा अहलावत

मोदीनगर, एजेंसी

रालोद की महिला प्रकोष्ठ नारी शक्ति संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष मनीषा अहलावत ने कहा कि चुनाव में इस बार महिला कार्यकताओं को वोटर को लाने की जिम्मेदारी मिलेगी। महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रशिक्षण केंद्र खोले जाएंगे। मनीषा अहलावत ने यह बात दिल्ली मेरठ मार्ग पर प्रेस वार्ता में कही। उन्होंने गांव उजैड़ा निवासी सुमन चौधरी को महिला प्रकोष्ठ का जिलाध्यक्ष मनोनित किया। कहा कि महंगाई से महिलाओं की बचत खत्म हो गई है। ऐसे में उनके संगठन द्वारा महिलाओं को रोजगार प्रदान किया जा रहा। कई क्षेत्रों में उन्होंने सिलाई केंद्र खोले हैं। यहां पार्टी के झंडे, बैनर, टोपी आदि प्रचार सामग्री तैयार कराई जाती है, जिससे महिलाओं को रोजगार मिल रहा है। उन्होंने कहा कि वह अन्य राजनीतिक दलों से आह्वान करती हैं कि वह भी इन केंद्रों पर प्रचार सामग्री तैयार कराकर खरीदें। 30 से अधिक जिलो में संगठन द्वारा जिलाध्यक्ष नियुक्त किए जा चुके हैं। लोकसभा चुनाव में बूथ स्तर तक महिला को मजबूत करने की योजना बनाकर काम किया जा रहा है। मौके पर अमरजीत सिंह बिड्डी, जयदीप चौधरी, रीता चौधरी, जिलाध्यक्ष अमित त्यागी, भावना चौधरी, बीना रानी, शिवानी, सतेंद्र तोमर, रेखा चौधरी, विनोद गौतम और रामभरोसे मौर्य सहित अन्य रालोद नेता मौजूद थे।

अंगीठी के धुएं से मां की मौत, बेटा बेहोश

नोएडा, एजेंसी

सूरजपुर कोतवाली क्षेत्र के बिरोंडी गांव में ठंड से बचाव के लिए कमरे में अंगीठी के धुएं से दम घुटने से मां की मौत हो गई, जबकि बेटा बेसुध हो गया। उसका अस्पताल में इलाज चल रहा है। पुलिस ने महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। पुलिस मामले की छानबीन में जुटी है। मूलरूप से बिहार के रहने वाले मनोज कुमार बिरोंडी गांव में किराये के घर में परिवार के साथ रहते हैं। वह एक कंपनी में सुरक्षा गार्ड की नौकरी करते हैं। उनकी पत्नी गायत्री घरेलू सहायिका का काम करती थी। मनोज कुमार ने बताया कि शनिवार की रात उनकी पत्नी और बेटा ठंड से बचाव के लिए कमरे में अंगीठी जलाकर सो गए। पुलिस के मुताबिक देर रात को मनोज कुमार ड्यूटी से घर पहुंचे तो उन्होंने दरवाजा खटखटाया, लेकिन कमरे का दरवाजा नहीं खुला।

तेलंगाना में पतंगबाजी से पांच लोगों की मौत

हैदराबाद, एजेंसी

तेलंगाना में कुछ परिवारों के लिए मकर संक्रांति की खुशियां मातम में बदल गईं। पिछले कुछ दिनों के दौरान पतंगबाजी से जुड़ी घटनाओं में कम से कम पांच लोगों की मौत हो गई। जहां चार युवाओं की मौत करंट लगने और छत से गिरने के कारण हुई। वहीं, एक सैनिक खतरनाक चीनी मांझे का शिकार हो गया। इनमें से चार मौत हैदराबाद में हुईं जबकि पड़ोसी संगारेड्डी जिले में एक युवक की मौत हुई। रविवार शाम हैदराबाद के पेट बशीराबाद में अपने अपार्टमेंट परिसर की छत से गिरने के बाद 20 वर्षीय युवक की मौत हो गई। डिग्री द्वितीय वर्ष का छात्र आकाश, अलवल पुलिस स्टेशन में तैनात राजशेखर पुलिस के एक सहायक उप-निरीक्षक का बेटा था। पुलिस के मुताबिक पतंग उड़ाते समय आकाश अपने पांच मंजिला अपार्टमेंट की छत से गिर गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। रविवार को संगारेड्डी जिले के जोगीपेट शहर में दो मंजिला घर की छत पर पतंग उड़ाते समय करंट लगने से 30 वर्षीय एक व्यक्ति की मौत हो गई। पतंग उड़ाते समय सुब्रमण्यम हाईटेंशन तार के संपर्क में आ गए और बिल्डिंग से गिर गए। उन्हें बचाने की कोशिश में उनकी पत्नी चामुंडेश्वरी देवी घायल हो गईं। दंपति को संगारेड्डी ले जाया जा रहा था, लेकिन, सुब्रमण्यम ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। उनकी पत्नी का इलाज चल रहा है। सुब्रह्मण्यम अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ मकर संक्रांति मनाने के लिए इस्नापुर से अपने ससुराल आए थे। इससे पहले हैदराबाद में दो अलग-अलग घटनाओं में दो बच्चों की जान चली गई। शनिवार को अट्टापुर में एक अपार्टमेंट बिल्डिंग की छत पर पतंग उड़ाते समय करंट लगने से 11 वर्षीय तनिष्क की मौत हो गई। लड़का अपने दोस्तों के साथ एक अपार्टमेंट की छत पर पतंग उड़ा रहा था। पुलिस के मुताबिक, वह हाईटेंशन बिजली के तार के संपर्क में आ गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। दूसरी घटना में नागोले में अपने दोस्तों के साथ छत पर पतंग उड़ाते समय एक लड़के की जान चली गई। नागोले के एक सरकारी स्कूल में आठवीं कक्षा का 13 वर्षीय छात्र के. शिव प्रसन्ना पतंग उड़ाते समय चार मंजिला इमारत की छत से गिर गया। वह बगल की छत पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां उसने दम तोड़ दिया। नगरकुर्नूल में पतंग उड़ाते समय बिजली के तार के संपर्क में आने से एक लड़का घायल हो गया। उसे इलाज के लिए हैदराबाद शिफ्ट किया गया है। बिजली अधिकारियों ने लोगों को बिजली प्रतिष्ठानों के पास पतंग नहीं उड़ाने की सलाह देते हुए कहा कि धातु लेपित मांझा से बिजली का झटका लग सकता है और आपूर्ति नेटवर्क ट्रिप हो सकता है। खौफनाक चाइनीज मांझे ने हैदराबाद में एक सैनिक की जान ले ली।

महिला के चेहरे पर तेजाब फेंकने की धमकी दी

नोएडा, एजेंसी

ग्रेनो वेस्ट में रहने वाली महिला सिरफिरे की हरकत से परेशान है। उसने महिला को सोसाइटी में बदनाम करने और पुलिस में शिकायत करने पर टुकड़े-टुकड़े करने की धमकी दी है। वह महिला के चेहरे पर तेजाब फेंकने की भी धमकी दे रहा है। पीड़िता ने परेशान होकर पुलिस से आरोपी की शिकायत की। पुलिस ने मुकदमा दर्ज जांच शुरू कर दी है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट की सोसाइटी में रहने वाली महिला ने पुलिस को बताया कि वह जिले के एक अस्पताल में कार्यरत है। एक अज्ञात व्यक्ति उसे फोन कर परेशान कर रहा है। वह अश्लील बातें करता है। महिला ने विरोध किया तो सिरफिरे ने उसे गालियां दीं। आरोपी ने बात न मानने पर सोसाइटी के बाहर उसके फोटो चिपकाने तथा पुलिस में शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी है। आरोपी उसके पति को मारने की धमकी दे रहा है। वह फोन कर उस पर तेजाब डालने की भी धमकी दे रहा है। मनचले ने चेतावनी दी है कि अगर उसने पुलिस से शिकायत की तो उसके गंभीर परिणाम होंगे और उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। सिरफिरे युवक की धमकियों से घबराई महिला ने बिसरख कोतवाली में आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।

कार्यालय नगर पंचायत पिलखना, जनपद-(अलीगढ़)

पत्रांक : 91/ न0प0पि0/ 2023-24 दिनांक : 15-01-2024

निविदा सूचना

समस्त पंजीकृत/नवीनीकृत एवं अन्य विभागों में पंजीकृत ठेकेदारों/फर्मो को सूचित किया जाता है कि कार्यालय नगर पंचायत पिलखना जनपद अलीगढ़ में जी0आई0एस0 सर्वे आई0टी0 फर्म की नियुक्ति हेतु सील बंद कुटेशन/ निविदा दिनांकः 23/01/2024 को दोपहर 12.00 बजे तक कार्यालय नगर पंचायत पिलखना में आमंत्रित किये जाते है जोकि दिनांकः 24/01/2024 को 2.00 बजे कार्यालय नगर पंचायत पिलखना, में कुटेशन/ निविदा दाताओं के समक्ष अधोहस्ताक्षरी द्वारा खोलें जायेंगे। निविदा स्वीकृत / अस्वीकृत करने का समस्त अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा।

क्र. सं.	कार्य का नाम	दर	निविदा मूल्य	अवधि

संक्षिप्त खबरें

बाइक सवार ने राहगीर को मारी टक्कर, दोनों गंभीर रूप से जख्मी

आरा। जिले के कोइलवर थाना क्षेत्र के चनपुरा के समीप तेज रफ्तार से आ रहा बाइक सवार युवक ने पैदल जा रहे राहगीर को जोरदार टक्कर मार दिया जिससे दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए। आनन फानन में स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना कोइलवर थाने के पुलिस को दी गस्ती में निकले पुलिसकर्मियों ने दोनों जख्मियों को इलाज के लिए कोइलवर पीएचसी में भर्ती करवाया। जख्मी राहगीर जितेंद्र राय कोइलवर थाना क्षेत्र के बड़का चन्दा के रहने वाले बताये जाते हैं वही जख्मी बाइक सवार शिवम शर्मा कोइलवर के वार्ड 9 में अपने परिवार के साथ किराये के मकान में रहते हैं। जख्मी बाइक सवार की मां ने बताया कि उनका बेटा अपने पैतृक गाँव बड़हरा के एकवना से कोइलवर लौट रहा था इस दौरान वो अनियंत्रित होकर गिर गया। वही डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद दोनों जख्मियों को बेहतर इलाज के लिए आरा रेफर कर दिया। खबर लिखे जाने तक दोनों की हालत चिंताजनक बनी हुई थी।

पूजित अक्षत और निमंत्रण पत्र को घर - घर जाकर पहुँचाया गया

आरा। भारतीय जनता पार्टी द्वारा आरा लोकसभा के अगिआँव मण्डल के शक्तिकेन्द्र - अगिआँव , पवना , पवार , डिलिया में अयोध्या श्री रामलला प्राण - प्रतिष्ठा के निमित्त पूजित अक्षत और निमंत्रण पत्र को घर - घर जाकर पहुँचाया गया। साथ - ही - साथ श्री राम जी के भक्तों से आग्रह किया गया कि 22 जनवरी को अपने - अपने घरों में श्री राम लला को स्थापित कर पूजा अर्चना करें और संध्याकाल में दीप जलाकर दीपोत्सव मनायें। इस पूजित अक्षत वितरण कार्यक्रम में भाजपा अगिआँव मण्डल के रामाकांत चंद्रवंशी , कुन्दन कुमार कुशवाहा , चन्द्रशेखर आजाद (शेखर राय) , उमेश सिंह कुशवाहा , संजय कुमार पाण्डेय , अशोक सिंह , दिनेश पासवान और कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

रोहतास एसपी के निर्देश पर विभिन्न थानों से 14 आरोपी गिरफ्तार

सासाराम (रोहतास) रोहतास एसपी विनीत कुमार के निदेर्शानुसार विभिन्न थानों के पुलिस द्वारा अपराधियों व शराब तस्करों आदि के विरुद्ध छापेमारी अभियान चलाया गया। जिस अभियान के तहत 14 जनवरी को सभी चौदह अपराधकर्मियों को गिरफ्तार किया गया। जिसके अंतर्गत काराकाट थाना से आरोपी उपेन्द्र यादव, जबकि पुलिस द्वारा शराब बिक्री के साथ सात आरोपी गिरफ्तार हुए। जिसमें जिला क्षेत्र के डिहरी नगर थाना से आरोपी प्रकाश कुमार, दिनारा थाना से दीपक कुमार, अकोढीगोला थाना बंसत कुमार, गंगीया देवी, चेनारी थाना से राजू मुसहर, सासाराम नगर थाना जगनी देवी, दरिहट थाना श्याम बिहारी पासवान, वही नासरीगंज थाना अन्तर्गत 15 लीटर देशी महुआ शराब भी बरामद किया गया है।

वाहन चेकिंग अभियान में पुलिस ने वसूला जुर्माना

सासाराम (रोहतास) रोहतास पुलिस ने वाहन चेकिंग अभियान चला वसूला जुमार्ना। इस संबंध में एसपी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि इस अभियान तहत सभी 150 वाहनों की जाँच की गयी। जिसमें यातायात नियमों का उलंघन पालन अंतर्गत 82 वाहनों से 103000 रुपए शमन की राशि वसूली गयी है।

अवैध खनन और ओभर लोडिंग के विरूद्ध ट्रक जब्त

सासाराम (रोहतास) रोहतास पुलिस ने अवैध खनन और ओभर लोडिंग के खिलाफ अभियान चलाते हुए दो ट्रकों को जब्त किया। इस संबंध में रोहतास एसपी विनीत कुमार ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि जिला के शिवसागर थाना अन्तर्गत एक अवैधबालू लदा एक ट्रक सहित बिक्रमगंज थाना क्षेत्र से एक अवैध बालू लदा ट्रक को जब्त करते हुए कानूनी कार्रवाई की गई है।

नीलगाय के झुंड से दो बाइक सवार जख्मी

करगहर (रोहतास) प्रखंड क्षेत्र के गारा चौबे नहर पथ पर सोमवार को कल्याणपुर गांव समीप नीलगायों के झुंड दो बाइक सवार जख्मी हो गए। जिसे ग्रामीणों ने जख्मी हालत में उन्हें एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए जिला सदर अस्पताल सासाराम रेफर कर दिया। घटना के संबंध में बताया जाता है कि कैमूर जिला के रामगढ़ निवासी मनीष कुमार गुप्ता और संजय प्रताप गुप्ता सासाराम स्थित अपने एक रिश्तेदार के घर जा रहे थे। इसी क्रम में कल्याणपुर-तोरना गांवों स्थित बधार में नीलगायों का एक झुंड दौड़ते हुए सड़क पार कर रहा था।

तीन वर्षीय मासूम बच्चें की गला दबाकर पड़ोसी महिला ने की हत्या

प्रात : किरण संवाददाता

सासाराम/अगरेर (रोहतास) जिला क्षेत्र के अगरेर थाना क्षेत्र के आकाशी गांव में एक 3 वर्षीय बच्चें की गला दबाकर महिला ने हत्या कर दी। वहीं घर के इकलौता चिराग तीन वर्षीय मासूम शिवम के हत्या के बाद आक्रोशित लोगों ने महिला की भी पीटकर हत्या कर दी। जिस घटना के बाद से गांव में तनाव बन हुआ है। दूसरी तरफ इस घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय घटनास्थल पर पुलिस कैंप में तब्दील हो हो गई है।

दूसरी तरफ घटना के संबंध में बताया जाता है कि अगरेर थाना क्षेत्र के अकाशी गांव निवासी जगु सिंह के 3 वर्षीय पुत्र शिवम कुमार जो अपने घर स्थित दरवाजे पर खेल रहा था।

इसी क्रम में पड़ोसी दशरथ सिंह की पत्नी चिंता देवी ने मासूम शिवम को अपने घर चुपके से ले जाकर उसका गला दबाकर हत्या कर दी। वही घटना के बाद तीन वर्षीय मासूम शिवम के शव को बोरा में बंद कर घर में छुपा कर रख दिया। लेकिन जब शिवम काफी देर घर में नजर भाई आया तो परिजनों ने ग्रामीणों के साथ आसपास के घरों में खोजबीन शुरूआत कर दी। इसी क्रम में जब लोगों ने पड़ोसी दशरथ सिंह के घर देर रात पहुंच दरवाजे को खोलवाना शुरू किया तो वह दरवाजा खोलने से इंकार कर दिया।

इसके बाद आक्रोशित लोगों ने पड़ोसी का दरवाजा तोड़ घर में प्रवेश कर घर में खोजबीन शुरू कर दी। जहां ग्रामीणों ने मासूम शिवम का मृत शव एक बंद बोरे में बंद छत से फेंक पाया। इसके बाद आक्रोशित लोगों ने आरोपी महिला चिंता देवी के घर को आग के हवाले करते हुए उसकी पीट-पीटकर हत्या कर दी। वही घटना मामलें में आरोपी महिला के अन्य परिवार के सदस्यों ने रात के अंधेरे में गांव छोड़कर भागने सफल रहें।

दूसरी तरफ घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस आकाशी गांव पहुंच घटनास्थल से मासूम बच्चें के शव को कब्जे में लेते हुए जिला सदर अस्पताल सासाराम में पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप दिया है। जबकि आरोप मृतक महिला के परिजनों आने के प्रतीक्षा में उपलब्ध में शव को शीत गृह में रखा गया है। इस संबंध में रोहतास एसपी विनीत कुमार ने बताया कि घटना मामलें में पीड़ित परिवार के बयान पर प्राथमिकी दर्ज कर आरोपियों के गिरफ्तारी के लिए त्वरित कार्रवाई जारी है।

महावीर मंदिर रमण में चल रहे हनुमंत कथा में जुट रही है हजारों की भीड़

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। मारुत नन्दन सेवा समिति, महावीर मंदिर रमना आरा के तात्वाधान मे हनुमंत कथा के छठे दिन अयोध्या धाम के राष्ट्रीय संत श्री मधूसुदनाचार्य जी महराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि हनुमान जी को खुश करना है तो उनके सामने राम जी कि चरित्र का वर्णन करें, गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहाहै, राम चरित्र सुनबे को रसीया, जब हनुमान जी खुश होते हैं तो, सभी संकट और पिड़ा समाप्त हो जाते हैं, अयोधा धाम कि झाकि ने कृष्ण लिला को भक्तों के सामने प्रस्तुत किया, उक्त अवसर पर महावीर मंदिर के महंत सुमन बाबा ने कहा कि कृष्ण कर्मयोगी थे, वे प्रेम मुर्ती थे, उन्होनें धर्म और कर्म दोनों को जीवन में कैसे उतारें अपने लिला के माध्यम से सभी को बताया, मिउजीकल मंत्रा के सदस्यों ने भक्तों के लिऐ अपने अंदाज में प्रस्तुति प्रस्तुत किया, कार्यक्रम का संचालन करते हुए डा सुनिल कु सिंह अधिवक्ता ने सभी आये हुए मेहमानों का अभिवादन किया , महावीर मंदिर के अध्यक्ष श्री सतेन्द्र नारायण सिंह ने आये हुए सभी भक्तों का स्वागत किया, कार्यक्रम को सफल बनने में द्विवयांशू मिश्रा, डा सत्यनारायण उपाध्याय, इन्द्रजीत मिश्रा, संजय सिंह, संजय राय, मनन सिंह अधिवक्ता, देवराज ओझा, ठाकुर राजकिशोर सिंह उमीर्ला सिंह, संगीता देवी, रेशु पाण्डेय, कुमारी कोमल, कुमारी काजल, मनोज यादव कि सक्रिय सहयोग रहा।

शिक्षा संवाद कार्यक्रम को लेकर बीड़ीओ ने की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

काराकाट (रोहतास) प्रखंड मुख्यालय गोड़ारी के सभागार में प्रखंड विकास पदाधिकारी राहुल कुमार सिंह की अध्यक्षता में शिक्षा संवाद को हुई बैठक। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु प्रखंड के माध्यमिक विद्यालय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों के साथ बैठक आयोजित की गई ।निदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग एवं संयुक्त सचिव बिहार सरकार सामान्य प्रशासन विभाग मुख्य सचिव बिहार सरकार एवं जिला पदाधिकारी के निर्देश के आलोक में बैठक आयोजित की गई। जिसमें 16 से 24 जनवरी तक प्रखंड के सभी माध्यमिक विद्यालय में शिक्षा संवाद कार्यक्रम आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि शिक्षा विभाग के महत्वाकांक्षी योजनाओं को विस्तार पूर्वक सभी जानकारी दी जायेगी। शिक्षा संवाद में प्रधानाध्यापकों के द्वारा सभी अभिभावकों को सूचना देकर बुलाना है। जिस आयोजित शिक्षा संवाद कार्यक्रम अंतर्गत नोडल पदाधिकारी भी प्रतिनियुक्त होंगे। मौके पर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी , अशोक तिवारी सहित विभिन्न माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक उपस्थित थे ।

प्रधानमंत्री के आह्वान पर बड़हरा विधायक द्वारा चलाया गया स्वच्छता अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

आराः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान पर पूरे देश मे 14 जनवरी से 21जनवरी तक स्वच्छता अभियान चलाने का आह्वान किया गया है। उसी कार्यक्रम के तहत भारतीय जनता पार्टी भोजपुर द्वारा जिले के मंदिरो और सार्वजनिक स्थलो पर सफाई अभियान चल रहा है।

सोमवार को बड़हरा विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह के नेतृत्व मे सलेमपुर मंडल के पीपरा मे महामाया मंदिर परिसर मे स्वच्छता अभियान चलाया गया ।स्वच्छता अभियान के तहत भाजपा कार्यकताओं और ग्रामीण जनता द्वारा मंदिर परिसर को सफाई किया गया। उक्त अवसर परपूर्व मंत्री बड़हरा विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि मयार्दा पुरूषोत्तम प्रभु श्री राम 500 वर्षो बाद अपने जन्मस्थान अयोध्या मे 22 जनवरी को विरजमान होंगे। उनके आने की खुशी मे पूरे देश मे उल्लास और उमंग का पर्व मनाया जा रहा है।। उनके आने के पहले चारो तरफ वातावरण स्वस्थ और साफ होना चाहिए ।इसलिए प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है ।सभी मंदिरों के सफाई मे कार्यकताओं और आम जनमानस का सहयोग प्राप्त हो रहा है। कार्यक्रम मे जिला प्रवक्ता धीरज सिंह सलेमपुर मंडल अध्यक्ष धनंजय तिवारी, सत्येंद्र सिंह, अरविंद सिंह प्रमोद तिवारी जी, संजय तिवारी, मुटुर सिंह, अमन यादव, मोहित जी, देवानंद जी, रोशन, हरी भजन यादव जी, बृजेश सिंह, बडक सिंह, सरवन सिंह, कौशल सिंह, सोनु, रजीव तिवारी जी , रविश सिंह, अंन्दन सिंह, विकास सिंह, रिशु सिंह, निसंत सिंह, शशि सिंह, पवन सिंह, महावीर पासवान जी और प्रमुख लोग शामिल हुए।

व्यवसायी संघ ने विधायक का किया स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास) सासाराम व्यापार मंडल में राजद विधायक राजेश कुमार गुप्ता का व्यवसायी लोगों ने स्वागत किया। ज्ञात हो कि पिछले दिनों एक नापतोल अधिकारी के द्वारा व्यवसायी लोगों को परेशान किया जा रहा था। जिसकी शिकायत पर विधायक के अनुशंसा के बाद लापरवाह नापतोल अधिकारी पर निलंबन की कार्रवाई की गई थी। इस पर खुशी व्यक्त करते हुए व्यवसायियों ने विधायक का सासाराम में अभिनंदन कि विधायक ने बताया कि वे लगातार व्यवसाईयों के हित में काम करते रहे हैं। जहां राष्ट्रीय जनता दल पार्टी व्यवसाईयों के मान सम्मान के प्रति संकल्पित है। साथ ही साथ बताया कि वर्तमान सरकार लोक कल्याणकारी के सभी हितों का ध्यान रखने का निरंतर कार्य कर रही है।

क्रिकेट के फाइनल मैच जीत दर्ज कर अमन इलेवन टीम बनी विजेता

प्रात : किरण संवाददाता

काराकाट (रोहतास) प्रखण्ड क्षेत्र के मुंजी गांव के खेल मैदान पर शांति चैंपियन्स ट्रॉफी क्रिकेट टूनार्मेंट का फाइनल मैच रविवार को खेला गया। जिसमें अमन इलेवन ने अतुल इलेवन को छह विकेट से हराकर ट्राफी पर कब्जा जमाया। फाइनल मैच अमन इलेवन और अतुल इलेवन के बीच खेला गया। फाइनल मैच में अतुल इलेवन की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया पहले बल्लेबाजी करते हुए अतुल इलेवन की टीम ने निर्धारित आठ ओवर में आठ विकेट खोकर 81 रन बनाई।

अतुल इलेवन के तरफ से बल्लेबाजी करते हुए रौशन 33 व अतुल 27 रन बनाए, जबकि अमन इलेवन के तरफ से गेंदबाजी करते हुए पवन तीन, रबाडा और मंगल ने दो-दो विकेट लिया। जबकि सिंटू को एक विकेट मिला। 82 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए अमन इलेवन की टीम ने 7.4 ओवर में चार विकेट खोकर लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लिया। अमन इलेवन के तरफ से बल्लेबाजी करते हुए सिधु 43, क्षितिज 21 रन बनाए। जबकि अतुल इलेवन के तरफ से गेंदबाजी करते हुए प्रिंस दो और धोनी को एक विकेट मिला। इस तरह से शांति चैंपियन्स ट्रॉफी क्रिकेट टूनार्मेंट के फाइनल में अमन इलेवन की टीम ने अतुल इलेवन की टीम को छः विकेट से हराकर ट्राफी पर कब्जा जमाया। वही फाइनल मैच के मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार अमन इलेवन टीम के सिधु को दिया गया। जबकि मैन ऑफ द सीरीज का पुरस्कार अतुल इलेवन टीम के रौशन को दिया गया। वही बेस्ट बैट्समैन का पुरस्कार अमन इलेवन टीम के सिधु और बेस्ट बॉलर का पुरस्कार अमन इलेवन टीम के सिंटू को दिया गया। फाइनल मैच का उद्घाटन पूर्व विधायक संजय यादव ने फीता काटकर किया। फाइनल मैच में अंपायर की भूमिका में मो० रिजवान और रामाशंकर थे। जबकि स्कोरिंग की भूमिका में रविरंजन और चंद्रभान थे तो वही कमेंट्री का कार्यभार दीपू, भोला कुमार और सच्चिदानंद ने संयुक्त रूप से संभाला। इस जीत पर इलेवन टीम के कप्तान अमन तिवारी ने इस जीत का श्रेय पूरी टीम के खिलाड़ियों को दिया। मौके पर कमिटी अध्यक्ष दीपक कुमार रौशन, सचिव शशि कुमार, प्रमुख राकेश कुमार लाली, मुखिया रामेश्वर यादव, गजाधर सिंह, विजय कुमार, सच्चिदानंद, अनिल, जयप्रकाश सिंह, सुशील सिंह, रंजन, दीपू, भोला कुमार, ओमप्रकाश सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

भाजपा नगर मंडल पदाधिकारी की बैठक संपन्न

बिक्रमगंज (रोहतास) स्थानीय शहर में भाजपा पार्टी के नगर मंडल पदाधिकारी ने कार्यालय अंतर्गत एक बैठक की। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर अध्यक्ष नागेश्वर कुशवाहा व संचालन महामंत्री सुदर्शन प्रसाद वैश्य ने की। बैठक में सर्व समिति से प्रस्ताव तहत 24 जनवरी को भाजपा द्वारा कपूर्री ठाकुर जन्म शताब्दी समारोह मिलन शहर के इंटर हाई स्कूल प्रांगण में आयोजित पर चर्चा हुई। जिसमें बढ़-चढ़कर भाग लेने का निर्देश दिया गया। वही श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व स्वच्छता अभियान बिक्रमगंज में 17 जनवरी को काली स्थान तेंदुनी, 18 जनवरी को आस्कामिनी मंदिर व धारूपुर एवं 19 जनवरी को दुर्गा स्थान बिक्रमगंज सुबह 9 बजे से प्रारंभ होगी। जिस कार्यक्रम में बलिया उत्तर प्रदेश के सांसद नीरज शेखर उपस्थित रहेंगे । विकसित भारत संकल्प यात्रा काराकाट विधानसभा के पंचायत में सांसद तीन दिन उपस्थित रहेंगे। जो 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाएगा। जिसमें प्रधानमंत्री लोगों से लाइव रूबरू होंगे। बैठक में ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष एवं काराकाट लोकसभा के संयोजक नवीन चंद्र साह, धनंजय सिंह, विनोद कुमार मिश्रा सहित अन्य लोग शामिल थें।

कलाकारों ने नुक्कड़ नाटक कर ग्रामीणों को किया जागरूक

प्रात : किरण संवाददाता

काराकाट (रोहतास) दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक क्षेत्रीय कार्यालय सासाराम वित्तीय एवं डिजिटल वित्तीय साक्षरता अभियान के अंतर्गत विशेष वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम से नाबार्ड द्वारा प्रतिबंधित द्वितीय समावेशी फंड के अंतर्गत समर्थित नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। इसके माध्यम से लोगों को जानकारी दिया गया कि बैंक में खाता को खुलवाएं, बैंक में खाता खुलवाने से आने वाले फायदा को नुक्कड़ नाटक, गीत, संगीत के माध्यम से लोगों को जागरूक किया गया। लोगों को आयुष्मान भारत कार्ड बनाना, अटल पेंशन लागू करना, किसानों को आसान किस्त में ऋण मुहैया करना, किसान निधि से फायदा उठाना एवं केसीसी करना या इंश्योरेंस करना ताकि घटना दुर्घटना पर ठीक लाभ मिल सके। इसके साथ हीं केंद्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में लोगों को जानकारी दिया गया। बैंक प्रबंधक सत्येंद्र कुमार ने बताया कि कुरुर ग्राम में ब्रह्म स्थान (प्राइमरी स्कूल) के पास एवं कुरूर और चिकसिल बाजार पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसे लोगों को जागरूक किया गया। कलाकार बजरंगी कुमार, कृतांत राज, संजय कुमार, संदीप कुमार, प्रिय कुमारी ने अपनी कला से लोगों को जागरूक किया। मौके पर अभय सिंह, मनोज सिंह, बिठाल कुशवाहा, शिवनाथ सिंह, मिथलेश कुशवाहा, रामचंद्र शाह सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

दो समुदाय के बीच जमकर हुई मारपीट, नौ लोग घायल

प्रात : किरण संवाददाता

राजपुर (रोहतास) स्थानीय बाजार के चिक मुहल्ला व थाना क्षेत्र के दयालगंज गांव के दो वर्ग के कुछ लड़कों के बीच मामूली विवाद को लेकर सोमवार को जमकर हुई मारपीट में नौ लोग घायल हो गए ।घायलों का इलाज स्थानीय पीएससी में कराया जा रहा है। तनाव को देखते हुए प्रशासन द्वारा बाजार में रैपिड एक्शन फोर्स को उतारा गया है ।कई जगहों पर पुलिस पीकेट बना फोर्स को पहरा पर लगाया गया है। घटना के बाद से हीं एसडीएम, एसडीपीओ, पुलिस इंस्पेक्टर, मजिस्ट्रेट के तौर पर बीडीओ, सीओ व पुलिस प्रशासन की आधा दर्जन गाड़ियां क्षेत्र में दिन भर गस्ती करती रही। जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष मोहन कुमार ने बताया कि बजार के नासरिगंज रोड स्थित एक होटल में राजपुर चिक मुहल्ला के मुस्लिम समुदाय के कुछ लड़के नाश्ता कर रहे थे. जहां दयालगंज गांव के लडके भी बैठे हुए थे. नाश्ता के दौरान मुस्लिम समुदाय के एक लडके को छिंक आई व सरक गया, जिससे मुंह से निकल जुठन दयालगंज के लड़को पर चला गया ।जिसको ले तू तू मै मैं से शुरू हुआ विवाद कुछ हीं समय में मारपीट में तब्दील हो गया ।दोनों पक्ष से काफी संख्या में आकर लोग घटना स्थल पर मारपीट में शामिल हो गए ।जिसमें कुल नौ लोग जख्मी हुए हैं। पीएचसी में ईलाज कर रहे डाक्टर सुमित कुमार ने बताया कि एक पक्ष से 22 वर्षीय मो परवेज कुरैशी, 24 वर्षीयमो अजहर खुर्शीद, 21 वर्षीयमो अमजद कुरैशी, 40 वर्षीय इमरान कुरैशी, 40 वर्षीय मो इमतेयाज कुरैशी व 40 वर्षीय मो रौशन तथा वहीं दूसरे पक्ष से 20 वर्षीय बलजीत कुमार, 23 वर्षीयमनीष कुमार व 49 वर्षीय झपसी सिंह यादव का ईलाज किया गया। जिसमें गम्भीर रूप घायल बलजीत कुमार .मो परवेज कुरैशी .कुल छः लोगों को बेहतर ईलाज के लिए सदर अस्पताल सासाराम रेफर कर दिया गया। इस घटना मामले में एसडीपीओ कुमार संजय ने बताया कि दोनों पक्ष के लोगों से हमारी बात हुई है ।माहौल पूर्णतया शांतिपूर्ण है ।मारपीट की घटना हुई है. दोनो पक्ष के लोगों को थाना बुला बातचीत की जा रही है ।गांव के पंचायत प्रतिनिधियों को भी बुलाकर माहौल को ठीक रखने की हिदायत दी गई है। साथ ही साथ प्राथमिक की दर्ज कर दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की होगी।

धुंध के कारण अनियंत्रित कार पेड़ से टकराई, तीन जख्मी

करगहर (रोहतास) सासाराम चौसा पथ में बेलासपुर गांव के समीप स्थित तीखा मोड़ पर रविवार की देर रात एक चिकित्सक की कार पेड़ से टकरा गई। जिसमें सवार पति-पत्नी सहित चालक बुरी तरह जख्मी हो गए। जिन्हें स्थानीय लोगों की मदद से कार से बाहर निकाल जिला सदर अस्पताल सासाराम में भर्ती कराया गया। घटना के संबंध में बताया जाता है कि गया जिला मुख्यालय में निजी क्लीनिक का संचालन कर रहे चिकित्सक अविनाश कुमार अपनी पत्नी मंजू देवी के साथ बक्सर जिला के राजपुर प्रखंड अंतर्गत मुंजी बकसड़ा गांव स्थित अपने रिश्तेदार के घर जा रहे थे। इसी क्रम में बेलासपुर मोड़ के समीप देर रात करीब 11 बजे अत्यधिक धुंध की वजह से चालक को दिशा भटक गया। जिसके बाद कार अनियंत्रित होकर पेड़ में टक्करा गई। जिस घटना में कार के परखर्चे उड़ गए।

मढ़ौरा प्रमुख के खिलाफ लगाया गया अविश्वास प्रस्ताव

प्रात : किरण संवाददाता

मढ़ौरा ग्रामीण । प्रमुख गायत्री देवी के खिलाफ विरोधियों ने सोमवार को अविश्वास लगा दिया। मुबारकपुर की बीडीसी सदस्य नीतू कुमारी की अगुवाई में 30 में से 17 बीडीसी सदस्यों के हस्ताक्षर से लाये गए इस अविश्वास प्रस्ताव में वर्तमान प्रमुख के खिलाफ कई गंभीर आरोप लगाए गए है। इस अविश्वास प्रस्ताव में विरोधी सदस्यों ने वर्तमान प्रमुख पर जनहित के कार्यो की उपेक्षा कर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने, कार्य पुस्तिका में अपने मनमर्जी से प्रस्ताव लिखने, समानुपाती ढंग से विकास राशि का वितरण सभी बीडीसी क्षेत्र में नहीं करने, सदस्यों के बीच द्वेष फैलाकर अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति करने, बीडीसी की बैठक समय पर नहीं करने आदि का गंभीर आरोप लगाया है । जिन बीडीसी सदस्यों के हस्ताक्षर से वर्तमान प्रमुख के खिलाफ यह विश्वास लाया गया है उसमें मुख्य रूप से बीडीसी सदस्य नीतू कुमारी, पूनम देवी, मोहन कुमार, मोहम्मद हसनैन, मनोज राय, प्रियंका देवी, विश्वकर्म कुमार, अवधेश कुमार, जाहिद अहमद आजाद, चानी देवी, रीता देवी, पिंकी देवी, दुर्गावती देवी, कांति देवी, शशिकांत, फूल कुमारी देवी, कल्याणी देवी का नाम शामिल है। विरोधियों की अगुवाई कर रही प्रमुख पद की दावेदार नीतू कुमारी का कहना है कि वे सोमवार को पूर्वाहन में अविश्वास प्रस्ताव की प्रति मढौरा प्रमुख को देने गई किंतु उन्होंने लेने से इनकार किया जिसके बाद वे लोग नियमानुकूल पंचायत समिति के कार्यपालक पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी को इस अविश्वास की प्रति को रिसीव करा दिया। बीडीओ को जैसे ही अविश्वास प्रस्ताव की प्रति प्राप्त हुई उन्होंने तत्काल एक पत्र के साथ प्रमुख गायत्री देवी को इस अविश्वास प्रस्ताव की प्रति लिखित रूप में उपलब्ध करा दी। अब देखना है कि आने वाले दिनों में यह मामला कोर्ट में लटकाया जाता है या निर्धारित समय के अंदर प्रमुख पर लगे अविश्वास पर विशेष बैठक बुलाई जाती है।

शराब के साथ महिला धंधेबाज गिरफ्तार

करगहर (रोहतास) रविवार की देर शाम रामपुर नरेश गांव में पुलिस ने छापामारी कर 10 लीटर देसी महुआ शराब के साथ एक महिला धंधेबाज को गिरफ्तार कर लिया। इसकी जानकारी एस आई ज्ञानदीप कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि एक गुप्त सूचना के आधार पर रामपुर नरेश गांव में छापामारी की गई । जहां घर में छुपा कर रखे गए 10 लीटर देसी महुआ शराब को बरामद कर महिला धंधेबाज मीना देवी पति हीरालाल चौधरी को गिरफ्तार कर लिया गया। जिसे पुलिस ने कानूनी कार्रवाई कर जेल भेज दिया।

जीकेसी कार्यकारणी ने किया महादेवी वर्मा अवार्ड चयन समिति गठित

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जीकेसी (ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंस) राष्ट्रीय कार्यकारिणी की वर्चुअल बैठक रविवार को ग्लोबल अध्यक्ष राजीव रंजन प्रसाद की अध्यक्षता में देर रात सम्पन्न हुई। बैठक में "महादेवी वर्मा अवार्ड" चयन समिति का गठन किया गया। इस समिति में जिन राज्यों में जीकेसी सक्रीय रूप से कार्यरत हैं, उन राज्य से एक सदस्य मनोनीत किया जायेगा। तत्काल तीन सदस्य मनोनीत किया गया है जिसमें बिहार से वरिष्ठ पत्रकार -सह- संपादक नवबिहार टाईम्स -सह- राष्ट्रीय प्रवक्ता जीकेसी कमल किशोर प्रसाद शामिल हैं। बैठक को संबोधित करते हुए ग्लोबल अध्यक्ष राजीव रंजन प्रसाद ने कहा कि सभी राज्यों में जिस तरह से ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंस सक्रीय रूप से काम कर रहे हैं काबिले तारीफ है। उन्होंने "महादेवी वर्मा अवार्ड" के संदर्भ में विस्तार से चर्चा करते हुए लोगों को दिशा निर्देश दिया। उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती, गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन, जीकेसी स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित करने पर भी चर्चा की। ग्लोबल अध्यक्ष ने प्रदेश कार्यसमिति, राष्ट्रीय कार्यसमिति और प्रकोष्ठों की बैठक आहूत करने के संदर्भ में लोगों को मार्ग दर्शन किया। उन्होंने सीसीसीआई, कुटीर उद्योग, कानूनी सहायता, गाजियाबाद स्थित जीकेसी पाठशाला, महिला विंग द्वारा स्पीक आउट एवं डिजिटल सेल द्वारा आरंभ डिजिटल मैगजीन पर भी चर्चा की ।उन्होंने जीकेसी मीडिया सेल को सुदृढ़ करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर लोगों से जुड़कर काम करने की सलाह दी। उक्त अवसर पर प्रबंध न्यासी रागिनी रंजन ने जीकेसी महिला प्रकोष्ठ को रोजगारमुख और स्वावलंबी बनाने की दिशा में पहल करने की सलाह दी और कहा कि जो कायस्थ परिवार स्कूल चला रहे हैं या चलाना चाह रहे हैं और उन्हें आर्थिक मदद की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जरूरत हो तो उसे जीकेसी की ओर से आर्थिक मदद दी जानी चाहिए और इसके लिए फंड की व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने अपनी ओर से 1100 रुपए की सहयोग राशि देने की बात कही। कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह बिहार प्रदेश अध्यक्ष दीपक कुमार अभिषेक ने बताया कि बिहार प्रदेश 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती मनाने, 26 जनवरी को झंडोत्तोलन कार्यक्रम आयोजित करने, 1 फरवरी से 4 फरवरी तक जीकेसी स्थापना दिवस समारोह मनाने और 11 फरवरी को कार्यकारणी की बैठक आहूत करने की बात कहते हुए इस दिशा में चल रही तैयारी की जानकारी दी। अन्य राज्यों के सदस्यों ने प्रदेश कार्यसमिति, राष्ट्रीय कार्यसमिति एवं अन्य प्रकोष्ठों की मीटिंग आयोजित करने, सीसीसीआई, कुटीर उद्योग, कानूनी सहायता, गाजियाबाद स्थित जीकेसी पाठशाला, महिला विंग द्वारा स्पीकआउट एवं डिजिटल सेल द्वारा आरंभ डिजिटल मैगजीन विषय पर प्रकाश डालते हुए सघन चर्चा किया। उपाध्याय केरल प्रदीप कुमार ने विजीटर्स आई कार्ड की चर्चा की जिसे सहर्ष स्वीकार कर लिया गया और तत्काल एक डिजाइन की प्रस्तुती की गई जिसे ग्लोबल अध्यक्ष ने स्वीकृति दी। बैठक रविवार को रात 8 बजे से लगातार 11 बजे तक चली। बैठक में शुभ्रांशु श्रीवास्तव, कमल किशोर, आनंद सिन्हा, अरुण कुमार सिन्हा, डॉ अमित कुमार वर्मा, डॉ निशांत श्रीवास्तव, नीरज सहाय, प्रदीप कुमार, प्रेम कुमार, संजय सिन्हा, संतोष श्रीवास्तव, सोमिका श्रीवास्तव, संजय सिन्हा, उत्कर्ष आनंद, श्वेतांक शैलकवल, डॉ पूनम कर्ण, नवीन कुमार, राजीव कांत, रूपक श्रीवास्तव, सौरभ श्रीवास्तव, सपना वर्मा, आशु

रणबीर कपूर के साथ काम करना चाहती हैं मेधा

वर्ष 2023 में रिलीज हुई फिल्म 12वीं फेल समीक्षकों और दर्शकों दोनों को खूब पसंद आई। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर भी जबरदस्त कमाई की। फिल्म के कलाकारों के जबरदस्त अभिनय की भी दर्शकों ने खूब सराहना की। विक्रांत मैसी अभिनीत यह फिल्म ओटीटी पर भी रिलीज हुई, जिसके बाद फिल्म की लोकप्रियता आसमान छू गई है और इसके किरदार रातों-रात मशहूर हो गए हैं। वहीं, इस फिल्म की मुख्य अभिनेत्री मेधा शंकर ने हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में रणबीर कपूर के साथ काम करने की इच्छा जताई। इसके अलावा मेधा ने यह भी बताया कि अभिनय में अपना करियर बनाने के लिए उन्होंने कैसे अपने पिता को मनाया था। मेधा शंकर से पूछा गया कि वे किस बॉलीवुड अभिनेता के साथ काम करना चाहती हैं? इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा, मैं रणबीर कपूर के साथ काम करना चाहती हूं। अभिनेता की तारीफ करते हुए मेधा ने कहा, मैं उनकी बहुत बड़ी फैन हूं। रणबीर कला में माहिर हैं, वे अपने किरदार में बखूबी ढल जाते हैं। अभिनेत्री ने अभिनय में अपना करियर बनाने के लिए कैसे अपने पिता को समझाया इस बारे में बात की। मेधा ने कहा, मैं एक मध्यम वर्गीय परिवार से हूं। मेरे पिता मुझे पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे, लेकिन जब मैंने उनसे कहा कि मैं एक अभिनेत्री बनना चाहती हूं, तो उन्हें बड़ा झटका लगा। उन्होंने मुझसे कहा, क्या तुमने अपने सोचने समझने की शक्ति खो दी है।

पिता से लिया दो वर्ष का समय

अभिनेत्री ने बताया कि उनके पिता का मानना था कि अभिनय में करियर बनाने का विचार उन लोगों का होता है, जो पढ़ाई में संघर्ष करते हैं। हालांकि, मैंने अपनी मास्टर डिग्री पूरी कर ली थी। मैंने अपने पिता से अभिनय में करियर बनाने के लिए दो वर्ष का समय मांगा। मैं उन दो वर्षों के अंदर कुछ भी नहीं कर पाई, मेरे पिता ने आगे कुछ और करने के बारे में कहा, लेकिन मैं अपना करियर अभिनय में ही बनाना चाहती थी। मैंने फिर अपने पिता से दो वर्ष का समय देने के लिए कहा, इस विश्वास के साथ कि इस बार मैं मुंबई जाकर अपना सपना पूरा करूंगी।

कटरीना कैफ और विजय सेतुपति स्टारर फिल्म 'मेरी क्रिसमस' 12 जनवरी को रिलीज हो गई है। फिल्म को लेकर दर्शकों का अच्छा रिस्पॉन्स है।

कटरीना के साथ काम करने पर बोले विजय सेतुपति

एक इंटरव्यू के दौरान जब विजय सेतुपति से पूछा गया कि कटरीना के साथ स्क्रीन शेयर करना है। ये सुनकर आपका क्या रिएक्शन था? इस पर विजय ने बताया कि ये बात सुनकर वो हैरान हो गए थे। वो ये बात सोचकर परेशान हो गए थे कि कटरीना के साथ उनकी जोड़ी स्क्रीन पर कैसी दिखेगी। उन्होंने कहा- मैं हैरान था क्योंकि हर किसी के पास यही सवाल था। जब मैंने पहली बार लोगों को बताया कि मैं श्रीराम राघवन सर की फिल्म कर रहा हूं, तो लोगों ने कहा- ठीक है, बहुत अच्छा, शानदार! और जब मैंने कहा- मैं इसे कटरीना कैफ के साथ कर रहा हूं, तो सभी ने कहा- तो क्या तुम्हारा गेस्ट रोल है? क्या ये एक्ट्रेस पर बेस्ड फिल्म है? कटरीना को हर कोई जानता है। उनके साथ काम करना मेरे लिए भी शॉकिंग था। कई सवाल दिमाग में आ रहे थे, जैसे कि फिल्म कैसी होगी? हर कोई पूछ रहा है, स्क्रीन पर ये जोड़ी कैसी दिखेगी? शुरुआत में मुझे इन सभी बातों का डर था।

सनी कौशल ने भाई विक्की के बारे में किया खुलासा

सनी कौशल और विक्की कौशल का रिश्ता बेहद खास है। सनी ने एक इंटरव्यू के दौरान अपने बचपन की कुछ यादें शेयर कीं। उन्होंने बताया कि विक्की और सनी एक-दूसरे के लिए हमेशा प्रोटेक्टेड रहे हैं। सनी ने बचपन का एक किस्सा बताया जब विक्की परेशान हो गए थे क्योंकि एक बच्चे ने खेल के दौरान सनी को थप्पड़ मार दिया था। उस समय सनी की उम्र 11 साल थी। सनी कौशल और विक्की कौशल एक-दूसरे के करीब हैं सनी कौशल ने बॉलीवुड बबल से अपनी फैमिली और भाई के बारे में बातचीत की। उन्होंने कहा- मैं और विक्की मम्मी-पापा के रिश्ते को देखकर बड़े हुए हैं। हम हमेशा से एक-दूसरे के लिए फिक्रमंद रहे हैं। हालांकि हमें किसी ने कभी ये सिखाया नहीं। लेकिन हम दोनों जानते थे कि हम साथ हैं। जब हम किसी ग्रुप का हिस्सा हुआ करते थे, जिसमें सिर्फ लड़के थे- वहां भी हम जानते थे कि हमें एक-दूसरे एक साथ रहना होगा। फिर चाहे हम कुछ खेल रहे हों, क्रिकेट का मैच या फिर फुटबॉल। सच कहूं तो ये बहुत स्वाभाविक रूप से आता था। विक्की मेरे लिए खड़ा होगा, मैं विक्की के लिए खड़ा रहूंगा। ये बहुत नॉर्मल बात है क्योंकि आप समझते हैं कि आप दोनों एक खून हैं (एक ही परिवार का हिस्सा हैं)।

सनी और विक्की एक-दूसरे के लिए फिक्रमंद रहे हैं

सनी ने बचपन का एक और किस्सा याद किया। उन्होंने कहा- एक बार मैं और विक्की चोर-पुलिस खेल रहे थे। हम दोनों की टीम अलग-अलग थी। उसी दौरान किसी बात पर मेरा और विक्की का झगड़ा हो गया। उस वक्त हम 11 या 12 साल के रहें होंगे। हम दोनों की बहस के बीच विक्की ने मुझे धक्का दे दिया। अचानक कोई दूसरा बच्चा आया, ये सोचकर की लड़ाई शुरू हो गई, और उसने मुझे थप्पड़ मार दिया। ये देखकर विक्की को बहुत गुस्सा आया और वो अपना आपा खो बैठे। उन्होंने उस बच्चे की कॉलर पकड़ी और कहा- मैं इसका भाई हूं, मैं इसे थप्पड़ मार सकता हूं। तुम कौन होते हो सनी को मारने वाले?

एनिमल मेरे टाइप की फिल्म नहीं कोंकणा सेन शर्मा

अभिनेत्री कोंकणा सेन शर्मा इन दिनों अपनी वेब सीरीज किलर सूप को लेकर चर्चा में हैं। इस सीरीज उनके साथ मनोज बाजपेयी भी है, जिसे दर्शक खूब पसंद कर रहे हैं। हाल ही में कोंकणा ने एक साक्षात्कार में रणबीर कपूर स्टारर एनिमल को लेकर अपने विचार साझा किए। उन्होंने इसे अपनी टाइप से अलग का फिल्म बताया, साथ ही अभिनेत्री ने यह भी बताया कि उन्होंने इस फिल्म को अभी तक नहीं देखा है। गौरतलब है कि एनिमल साल 2023 की ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक है। रणबीर कपूर स्टारर यह फिल्म अपनी रिलीज के लगभग डेढ़ महीने बाद भी थिएटर में चल रही है। इस फिल्म ने अब तक 900 करोड़ से ज्यादा का कलेक्शन किया है। वहीं, दर्शकों ने इसे खूब प्यार दिया है। हालांकि, फिल्म में महिला किरदार और हिंसा को लेकर इसकी आलोचना भी हुई, जिसे लेकर लोगों के अपने-अपने तर्क हैं। अब इसी कड़ी में अभिनेत्री कोंकणा सेन शर्मा का भी नाम भी शामिल हो गया है। कोंकणा ने एनिमल को लेकर कहा कि उन्हें स्क्रीन पर हिंसा दिखाने से कोई आपत्ति नहीं है, जब तक कि इसके लिए कोई ठोस कारण न हो। यही बात इंटीमेट सीन्स पर भी लागू होती हैं। उन्हें ऐसे सीन्स देखने पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन हिंसा और इंटीमेट सीन्स का कहानी को आगे बढ़ाने में एक उद्देश्य होना चाहिए।

इमरजेंसी के लिए कंगना रणौत ने शुरू की डबिंग

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रणौत इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म इमरजेंसी के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। फिल्म की तैयारी में वे कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं। यह फिल्म देश की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की राजनीतिक यात्रा पर आधारित है। अब वे अपनी आगामी पीरियड ड्रामा फिल्म की रिलीज डेट की घोषणा करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। अपनी नवीनतम सोशल मीडिया पोस्ट में कंगना रणौत ने प्रशंसकों को डबिंग सत्र की एक झलक दी और उन्हें फिल्म की रिलीज के बारे में अपडेट दिया। कंगना रणौत ने एक प्यारी तस्वीर साझा की। इस तस्वीर में कंगना रणौत एक कुर्सी पर पैर मोड़कर बैठी हुई हैं और स्क्रिप्ट की ओर देखते हुए डबिंग की तैयारी कर रही हैं। इस पोस्ट के साथ उन्होंने कैप्शन में लिखा, आज इमरजेंसी फिल्म के लिए डबिंग शुरू होगी, रिलीज डेट की घोषणा जल्द होगी।

आलिया के साथ फिल्म जिगरा में दिखेंगे वेदांग रैना!

आलिया भट्ट की फिल्म जिगरा में वेदांग रैना नजर आ सकते हैं। फिल्म में उन्हें आलिया के भाई के रोल में देखा जा सकता है। हालांकि, मेकर्स या वेदांग की तरफ में इस खबर को सही करार नहीं किया गया है। वेदांग रैना का कहना है कि उन्हें खुशी होगी, अगर वो इतने बड़े प्रोजेक्ट का हिस्सा बनेंगे। मगर, उन्हें भी इससे जुड़ी जानकारी नहीं है। वेदांग को हाल ही में फिल्म आर्चीज में देखा गया था। इस डेब्यू फिल्म की शूटिंग के पहले दिन वो बहुत नर्वस थे। इस बात का खुलासा उन्होंने खुद एक हालिया इंटरव्यू में किया है।

एक्टर नहीं सिंगर बनना चाहते थे वेदांग

इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में वेदांग ने बताया कि वो कभी एक्टर नहीं बनना चाहते थे। वो म्यूजिक फील्ड में अपना करियर बनाना चाहते थे। 17 या 18 साल की उम्र में उन्होंने अपना पोर्टफोलियो एक एजेंसी को भेजा और वहीं से ऑडिशन देने का सिलसिला शुरू हुआ। फिल्म जिगरा में काम करने के सवाल पर उन्होंने कहा- हर कोई मुझसे यह पूछता रहता है, लेकिन मुझे भी इस बारे में कुछ नहीं पता है। इस तरह के प्रोजेक्ट का हिस्सा बनना बहुत बड़ी बात है। अफवाहें हमेशा उड़ती रहेंगी, लेकिन आलिया भट्ट के भाई का किरदार निभाना एक बहुत ही दिलचस्प मौका है। बता दें, फिल्म जिगरा में आलिया पहली बार एक्शन अवतार में नजर आएंगी। फिल्म करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शन के बैनर तले बन रही है। फिल्म 27 सितंबर 2024 को रिलीज होगी। वेदांग ने फिल्म आर्चीज में पहली बार खुशी कपूर के साथ काम किया था। उन्होंने खुशी कपूर के साथ अपनी बॉन्डिंग पर बात करते हुए कहा कि उन्हें लगा था कि पहला दिन तनाव में बीतेगा। वो इस बात को लेकर परेशान थे कि खुशी के उनकी दोस्ती हो पाएगी या नहीं। मगर, कुछ समय में दोनों बहुत दोस्त बन गए। खुशी के साथ उनका यह सफर अच्छा रहा। खबरें यह भी हैं कि खुशी और वेदांग एक दूसरे को डेट कर रहे हैं।

बॉलीवुड एक्ट्रेस अदा शर्मा ने कई फिल्में कीं। लेकिन पहचान उन्हें द केरल स्टोरी में निभाई। इसमें उनके किरदार ने हर किसी को अंदर तक झकझोर दिया। अब उन्होंने इंटरव्यू में काफी सारी बातें की। उन्होंने बताया कि वह सोशल मीडिया पर ट्रोल्स को कैसे हैंडल करती हैं। साथ ही अपनी अपकमिंग वेब सीरीज के बारे में भी बात की।

अदा शर्मा ने बताया सोशल मीडिया पर ट्रोल्स को कैसे करती हैं हैंडल

अदा शर्मा उन एक्ट्रेसेस में से हैं, जो अपनी फिल्मों के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी चर्चा में रहती हैं। वह अपने स्टेटमेंट्स और दिलकश अंदाज से सभी को दीवाना बनाती रहती हैं। पिछले दिनों द केरल स्टोरी से बॉक्स ऑफिस के रिकॉर्ड तोड़ने वाली अदा इन दिनों चर्चा में है अपनीं नई वेब सीरीज सनफ्लावर के सीजन 2 से। इस खास मुलाकात में वह सोशल मीडिया, ट्रोल्स, अपने लड़की होने के मजबूत और कमजोर पल के बारे में बात कर रही हैं. अदा शर्मा ने ट्रोलिंग पर भी खुलकर बात की है।

सोशल मीडिया पर आप काफी एक्टिव रहती हैं, आपके कई फॉलोअर्स भी हैं

आज कल तो सोशल मीडिया का जमाना है। हर कोई सोशल मीडिया पर एक्टिव रहता है। असल में मैं सोशल मीडिया पर वो चीजें शेयर करती हूं, जिनमें मैं रियल हूं। अगर मैं गांव में घूम रही हूं, तो बिना मेकअप के रहती हूं और वही पोस्ट साझा करती हूं। अगर मैं हाथी को नहला रही हूं या सड़क के कुत्तों से मिल रही हूं, तो मैं उन पोस्ट को उसी वास्तविक रूप में शेयर करती हूं। मैं फिल्मों में जो किरदार निभाती हूं, मैं वो हूं ही नहीं। मगर मैं जो सोशल मीडिया पर हूं, वास्तव में मैं वही हूं। मैं सोशल मीडिया पर फिल्टर के साथ नहीं आती। अब जैसे एयरपोर्ट पर मेरे बाल बिखरे हैं या मेरे डार्क सर्कल हैं, तो मैं उन्हें छुपाती नहीं। लोगों को भी तो पता चलना चाहिए कि हम भी इंसान हैं और बिना मेकअप के कैसे लग सकते हैं। अपने सोशल मीडिया पर आप जितने रियल रहो, उतना अच्छा है, वरना आप कभी न कभी तो पकड़े ही जाते हो।

सोशल मीडिया आप आपको ट्रोल्स का भी सामना करना पड़ता है, उन्हें कैसे हैंडल करती हैं आप?

मैं अपने आप को खुशकिस्मत मानती हूं कि जो मुझे इतनी शोहरत और ढेर सारा प्यार मिला है। मेरा मानना है कि सोशल मीडिया पर यदि लोग आपको इतना चाहते हैं, तो उनको नफरत करने का हक भी होना चाहिए। अगर उन्हें प्यार करने है हक है, तो उनकी ट्रोल्स भी आपको सिर माथे पर लेनी होगी। मुझे ये स्वीकार करना होगा कि कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो मुझे पसंद नहीं करते। वैसे मैं काफी खुश किस्मत हूं कि सोशल मीडिया पर मेरे चाहने वालों की तादाद बहुत ज्यादा है, तो कोई नफरत वाला कॉमेंट लिख भी देता है, तो उसके नीचे सौ कॉमेंट ऐसे होते हैं, जो मेरे सपोर्ट में होते हैं कि आप अदा जी को ऐसे कह सकते हैं।

अगर द केरल स्टोरी की बात करूं, तो ये फिल्म आपके करियर के लिए किस तरह से टर्निंग पॉइंट साबित हुई?

अब मैं क्या कहूं, सभी जानते हैं कि फिल्म ने इतिहास रचा है। मेरे लिए तो यह बहुत बड़ी बात है। बीते साल की टॉप टेन फिल्मों में द केरल स्टोरी भी शुमार है। इतने सारे बड़े स्टार्स के साथ मेरा नाम भी आया है। इसे हाईएस्ट फीमेल ग्रोसिंग फिल्म का दर्जा मिला है। कभी -कभी तो यकीन नहीं होता कि ये मेरी फिल्म का कलेक्शन है। वैसे मेरे करियर में मेरा हर काम टर्निंग पॉइंट ही रहा है। जब मैंने 1920 जैसी हॉरर फिल्म से शुरुआत की, तब भी वो मेरे लिए करियर का टर्निंग पॉइंट था क्योंकि मुझे इंडस्ट्री में मौका मिला, बिना किसी जान-पहचान के। मेरी तेलुगू फिल्म भी मेरे करियर का बहुत बड़ा मोड़ था। हां, मगर ये सच है कि इस फिल्म ने लोगों के दिलों में एक खास जगह बना ली है।

सुनील ग्रोवर के साथ आपकी नई सीरीज सनफ्लावर के सीजन 2 की भी खूब चर्चा है?

अगले महीने ये वेब सीरीज रिलीज होगी। मैं बहुत उत्साहित हूं कि 1920 में हॉरर, कमांडो में एक्शन और केरल स्टोरी में ड्रामा करने के बाद मैं इस सीरीज में कॉमिडी कर रही हूं। इंस्टाग्राम पर तो मैं कॉमिडी करती रहती हूं, मगर अब पर्दे पर भी कॉमिडी करती नजर आऊंगी। मेरा किरदार बहुत ही अजीब है। मैं तो इसे पढ़कर हैरान थी। सोच रही थी कि इसे कैसे निभाऊंगी। यह डरावना, प्यारा और अतरंगी किरदार है। सुनील ग्रोवर जैसे कॉमिडी के महारथी के साथ इस चरित्र को निभाने में बहुत मजा आया। मेरे साथ इसमें आशीष विद्यार्थी सर, रणवीर शौरी और गिरीश कुलकर्णी भी है।

खरमास खत्म होते ही सोने-चांदी के दाम में उछाल, सिल्वर 72000 के पार

नईदिल्ली, एजेंसी। खरमास बीतते ही मकर संक्रांति के दिन सोने-चांदी की कीमतों में तेजी आ गई है। सर्राफा बाजारों में अब 10 ग्राम 24 कैरेट गोल्ड 208 रुपये महंगा होकर 62723 रुपये पर खुला। जबकि, चांदी का भाव अब 616 रुपये प्रति किलो उछल कर 72146 रुपये प्रति किलो पर पहुंच गया है। सोना अपने 4 दिसंबर 2023 के ऑल टाईम हाई 63805 रुपये से केवल 1082 रुपये सस्ता है।

सोने-चांदी के ये रेट इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन द्वारा जारी किए गए हैं। इस रेट पर जीएसटी और ज्वेलरी मेकिंग चार्ज नहीं लगा है। हो सकता है आपके शहर में सोना-चांदी 1000 से 2000 रुपये महंगा मिल रहा हो।

22 और 23 कैरेट सोने के रेट- आईबीजेए ने आज जो रेट जारी किया है, उसके मुताबिक दिल्ली, मुंबई, गोरखपुर, लखनऊ, जयपुर, इंदौर पटना समेत सभी शहरों में सोने-चांदी के औसत भाव में तेजी आई है। सर्राफा मार्केट में आज 23 कैरेट सोना 62472 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव से खुला। जबकि, 22 कैरेट सोने का दाम अब 57454 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया है।

18 कैरेड गोल्ड का भाव- जेवरों में सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाला 18 कैरेड गोल्ड की चमक भी बढ़ गई है। आज यानी सोमवार 15 जनवरी को यह 47042 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया है। 14 कैरेट सोने का भाव 36693 रुपये है। सोने-चांदी के इस रेट पर जीएसटी और ज्वेलरी मेकिंग चार्ज नहीं लगा है।

सोना 74000 रुपये तक पहुंच सकता है- केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया सोने को लेकर उत्साहित हैं। उन्होंने हिन्दुस्तान से बताया, उम्मीद करते हैं कि अगर अस्थिरता जारी रही तो कीमतें लगभग 2,240 डॉलर की नई ऊंचाई पर पहुंच जाएंगी। हमारा यह भी अनुमान है कि अगर बुनियादी सिद्धांत मजबूत रहे तो कीमतें अगले साल 2,400 डॉलर तक पहुंच सकती हैं। घरेलू मार्केट में सोना 74000 रुपये तक पहुंच सकता है। अमेरिकी फेड दर की गतिशीलता और भू-राजनीतिक तनाव से सोने की कीमतों में और तेजी आने की उम्मीद है।

संक्षिप्त समाचार

डब्ल्यूईएफ सर्वेक्षण में मुख्य अर्थशास्त्रियों का अनुमान, 2024 में कमजोर होगी वैश्विक अर्थव्यवस्था

नईदिल्ली, एजेंसी। मुख्य अर्थशास्त्रियों के एक सर्वेक्षण में 2024 में वैश्विक अर्थव्यवस्था के कमजोर होने और भू-आर्थिक विखंडन में तेजी आने का अनुमान लगाया गया है। विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की सोमवार को जारी चीफ इकोनॉमिस्ट आउटलुक रिपोर्ट में अधिक आर्थिक अनिश्चितता को लेकर आगाह करते हुए कहा गया कि वैश्विक आर्थिक संभावनाएं कमजोर बनी हुई है। वैश्विक अर्थव्यवस्था तंग वित्तीय परिस्थितियों, भू-राजनीतिक दरारों और जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में तेजी से प्रगति से ग्रस्त है।

एफपीआई ने जनवरी में अब तक शेयरों में लगाए 3,900 करोड़ रुपये

नईदिल्ली, एजेंसी। ब्याज दर परिदृश्य को लेकर अनिश्चितता के बीच विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने सतर्क रुख अपनाया है और जनवरी के पहले दो सप्ताह में भारतीय शेयर बाजारों में करीब 3,900 करोड़ रुपये लगाए हैं। इससे पहले पूरे दिसंबर महीने में एफपीआई ने भारतीय

शेयर बाजारों में 66,134 करोड़ रुपये डाले थे। वहीं नवंबर में एफपीआई ने शेयरों में 9,000 करोड़ रुपये का निवेश किया था।

डिपॉजिटरी के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने इस महीने अबतक (12 जनवरी तक) भारतीय शेयरों में शुद्ध रूप से 3,864 करोड़ रुपये का निवेश किया है। मॉर्निंगस्टार इनवेस्टमेंट एडवाइजर इंडिया के एसोसिएट निदेशक-प्रबंधक शोध हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा- निवेशकों के निवेश का मौजूदा रुख मुनाफावसूली की वजह से है, क्योंकि भारतीय शेयर बाजार इस समय अपने सर्वकालिक उच्चस्तर पर है।

3 दिन लगभग 200 गुना सब्सक्रिप्शन, कीमत 66

नईदिल्ली, एजेंसी। न्यू स्वान मल्टीटेक आईपीओ को निवेशकों की तरफ से अच्छा रिस्पॉस मिला है। दूसरे दिन इस आईपीओ को करीब 59 प्रतिशत सब्सक्राइब किया जा गया था। जबकि पहले दिन भी आईपीओ को 52 गुना सब्सक्रिप्शन प्राप्त हुआ था। न्यू स्वान मल्टीटेक आईपीओ पर दांव लगाने का आज आखिरी मौका है। बता दें कंपनी के आईपीओ का साइज 33 करोड़ रुपये से अधिक का है। न्यू स्वान मल्टीटेक आईपीओ का प्राइस बैंड 62 रुपये प्रति शेयर से 66 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है। कंपनी ने 2000 शेयरों का एक लॉट बनाया है। इस वजह से निवेशकों

तिमाही नतीजों के बाद आईटी शेयरों में आई तेजी

नईदिल्ली, एजेंसी। शेयर बाजार तेजी के साथ कारोबार कर रहा है। आईटी कंपनियों द्वारा जारी तिमाही नतीजों ने मार्केट को बढ़त हासिल करने में मदद की है। पिछले हफ्ते विप्रो और एचसीएल ने अपने तिमाही नतीजे जारी किये थे। इन नतीजों के बाद आज कंपनी के स्टॉक बढ़त के साथ कारोबार कर रहे हैं।

एससीएल के शेयर- आज एचसीएल टेक्नोलॉजीज के स्टॉक 5 फीसदी से ज्यादा तेजी के साथ कारोबार कर रहे हैं। कंपनी ने पिछले हफ्ते तिमाही नतीजे जारी किये थे। इस नतीजे में कंपनी ने बताया कि उनका नेट प्रॉफिट 6.2 फीसदी बढ़कर 4,350 रुपये हो गया। कंपनी का नेट प्रॉफिट अभी तक का सबसे ज्यादा है। कंपनी ने सर्विस और सॉफ्टवेयर बिजनेस दोनों में बढ़ोतरी दर्ज हुई।

आज बीएसई पर स्टॉक 4.83 प्रतिशत उछलकर 52-सप्ताह के उच्चतम स्तर 1,617.65 रुपये पर पहुंच गया। वहीं, एनएसई पर, यह 5.11 प्रतिशत बढ़कर 1,619.60

रुपये पर पहुंच गया - जो इसका 52-सप्ताह का उच्चतम स्तर है।

आज सुबह के करोबार में आईटी शेयर सुर्खियों में रहे। विप्रो, टेक महिंद्रा, इंफोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के स्टॉक तेजी के साथ कारोबार कर रहे।

एचसीएल के तिमाही नतीजे- एचसीएल टेक नेअपने तिमाही नतीजे में बताया कि एक साल पहले दिसंबर तिमाही में कंपनी का नेट प्रॉफिट 4,096 करोड़ रुपये था। दिसंबर तिमाही नमें एचसीएल टेक का नेट रेवेन्यू 6.5 प्रतिशत बढ़कर 28,446 करोड़ रुपये हो गया। यह पिछले साल इसी अवधि में 26,700 करोड़ रुपये था। कंपनी ने चालू वित्त वर्ष में साल-दर-साल आधार पर 5-5.5 फीसदी के बीच राजस्व वृद्धि का अनुमान लगाया है।

विप्रो के शेयर- तिमाही नतीजों के बाद आईटी कंपनी विप्रो के शेयरों में तेजी आई है। आज विप्रो के शेयर लगभग 14 फीसदी की छलांग लगाई। इसके बाद कंपनी के बाजार मूल्यांकन में 18,168.68 करोड़ रुपये का इजाफा हुआ। आज बीएसई पर कंपनी के स्टॉक 13.10 प्रतिशत उछलकर 52-सप्ताह के उच्चतम स्तर 526.45 रुपये पर पहुंच गया।

एनएसई पर विप्रो के शेयर 13.65 प्रतिशत बढ़कर 529 रुपये पर पहुंच गया - जो इसका 52-सप्ताह का शिखर है। यह सेंसेक्स और निफ्टी कंपनियों के बीच टॉप गेनर था। आद शुरुआती सौदों में कंपनी का एमकैप 18,168.68 करोड़ रुपये बढ़कर 2,61,217.37 करोड़ रुपये हो गया।

विप्रो के तिमाही नतीजे- आईटी कंपनी विप्रो ने अपने तिमाही नतीजों में बताया कि दिसंबर तिमाही में उनका नेट प्रॉफिट लगभग 12 प्रतिशत की गिरावट के साथ 2,694.2 करोड़ रुपये दर्ज हुआ। वहीं कंपनी का रेवेन्यू 4.4 प्रतिशत गिरकर 22,205.1 करोड़ रुपये हो गया, जो एक साल पहले 23,229 करोड़ रुपये था।

उद्योगपति नादिर गोदरेज बोले- विनिर्माण, स्वास्थ्य सेवा और अन्य क्षेत्रों में मदद कर सकता है एआई

नईदिल्ली, एजेंसी। डब्ल्यूईएफ की वार्षिक बैठक में हिस्सा लेने पहुंचे उद्योगपति नादिर गोदरेज ने कहा- भारत में विनिर्माण, स्वास्थ्य सेवा तथा अन्य क्षेत्र कृत्रिम मेधा (एआई) के सही इस्तेमाल से नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं। भारत अपने नेट जीरो लक्ष्यों को समय सीमा

से पहले हासिल कर सकता है क्योंकि देश जलवायु संबंधी मामलों पर सही दिशा में आगे बढ़ रहा है। नेट जीरो का अर्थ है कि कोई देश वातावरण में कार्बन आधारित ग्रीनहाउस गैसों का जितना उत्सर्जन कर रहा है, उतना ही उसे सोख तथा हटा भी रहा है। यानी उसकी तरफ से वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों का योगदान न के बराबर हो।

नादिर गोदरेज ने आगे कहा कि एआई में प्रक्रियाओं को सर्वोत्तम बनाकर विभिन्न क्षेत्रों की मदद करने की काफी क्षमता है। इसे विघटनकारी के बजाय एक सुविधा प्रदाता के रूप में देखा जाना चाहिए। जलवायु परिवर्तन, संघर्ष, भू-राजनीतिक, भू-आर्थिक चिंताएं और एआई द्वारा उत्पन्न अवसर तथा खतरे सोमवार से यहां शुरू होने वाली पांच दिवसीय डब्ल्यूईएफ वार्षिक बैठक में चर्चा के प्रमुख विषयों में से हैं। बैठक में जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आर्थिक चिंताओं और संघर्ष आदि पर समाधान सामने आने की उम्मीद है।

तेज रफ्तार में भाग रहा है रेलवे का शेयर, 18 प्रतिशत चढ़ा भाव

नईदिल्ली, एजेंसी। रेलवे की दिग्गज कंपनी इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन के शेयरों में आज तेज उछाल देखने को मिली है। कंपनी के शेयर आज यानी सोमवार को 18.50 प्रतिशत की तेजी के साथ एक वक्त 134.50 रुपये के लेवल पर ट्रेड कर रहे थे। यह रेलवे का स्टॉक का 52 वीक हाई है। बता दें, पिछला एक साल इस स्टॉक के लिए किसी सपने से कम नहीं रहा है।

400 प्रतिशत चढ़ा शेयर – सोमवार की सुबह कंपनी के शेयर बीएसई में 116.20 रुपये के लेवल पर ओपन हुए थे। लेकिन कुछ ही देर बाद यह 134.50 रुपये के इंट्रा-डे हाई पर पहुंच गए। बता दें, पिछले साल अप्रैल में कंपनी के शेयरों का भाव 30 रुपये के आस-पास ही थी।

छोटी कंपनी के शेयर पर टूट पड़े लोग, 4 महीने पहले 160 रुपये पर आया आईपीओ

नईदिल्ली, एजेंसी। एक छोटी कंपनी कोडी टेक्नोलैब के शेयरों में जबरदस्त तेजी है। कोडी टेक्नोलैब के शेयर सोमवार को 5 पर्सेंट की तेजी के साथ 769.40 रुपये पर पहुंच गए हैं। कंपनी के शेयरों में यह तेजी बड़े ऐलान के बाद आई है। कोडी टेक्नोलैब ने बताया है कि उसे 30 करोड़ रुपये के ऑर्डर मिले हैं। 4 महीने से कम में ही कंपनी के शेयरों में 365 पर्सेंट से ज्यादा का उछाल आ गया है। कोडी टेक्नोलैब के शेयरों का 52 हफ्ते का लो लेवल 169 रुपये है।

कंपनी को मिले 30 करोड़ रुपये के एक्सपोर्ट ऑर्डर- कोडी टेक्नोलैब ने

एक्सचेंज फाइलिंग में बताया है कि उसे डैशर (सर्विंग रोबोट) के लिए 30 करोड़ रुपये के एक्सपोर्ट ऑर्डर कई कस्टमर्स से मिले हैं। कंपनी इन डैशर्स की डिलीवरी 6 महीने के भीतर करना चाहती है। कोडी टेक्नोलैब कस्टम डिवेलपमेंट, एआई कंसल्टेशन एंड एम्प्लीमेंटेशन, आइओटी सर्विसेज, रोबोटिक्स एंड आईटी कंसल्टिंग सर्विसेज के बिजनेस में है। कंपनी अलग-अलग इंडस्ट्रीज के लिए सॉफ्टवेयर डिवेलप करती है।

4 महीने में 160 रुपये से 760 रुपये के पार पहुंचे शेयर- कोडी टेक्नोलैब के शेयरों ने 4 महीने में ही निवेशकों को मालामाल कर दिया है। कंपनी का आईपीओ 15 सितंबर 2023 को खुला था और यह 20 सितंबर तक ओपन रहा। कंपनी का आईपीओ 160 रुपये के प्राइस बैंड पर आया था।

किआ ने नई सॉनेट को 7.99 लाख रुपये की विशेष शुरुआती कीमत पर पेश किया

सबसे उन्नत कॉम्पैक्ट एसयूवी: किआ ने एडैस वाली नई सॉनेट को 7.99 लाख रुपये की विशेष शुरुआती कीमत पर पेश किया

भोपाल। भारत की अग्रणी प्रीमियम कार निर्माता, किआ ने अपनी सबसे प्रीमियम कॉम्पैक्ट एसयूवी - नई सॉनेट को देश भर में 7.99 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होने वाली विशेष प्रारंभिक कीमत पर पेश किया है। दिसंबर 2023 में पेश किए गए, किआ के दूसरे सबसे ज्यादा बिकने वाले इनोवेशन के इस नवीनतम संस्करण में 25 सुरक्षा सुविधाएं दी गई हैं, जिसमें 10 ऑटोनॉमस सुविधाओं वाला उत्कृष्ट एडैस और मजबूत 15 हाई-सेफ्टी विशेषताएं शामिल हैं। इस वाहन में 70 से अधिक कनेक्टेड कार सुविधाएं हैं, जैसे कि फाइंड माइ कार विद एसवीएम, जो सॉनेट को सबसे आरामदायक ड्राइव बनाने के लिए कार के आसपास का दृश्य प्रदान करता है और हिंग्लिश कमांड देता है। नई सॉनेट 19 अलग-अलग वेरिएंट में

अपनी उपलब्धता के साथ विविध प्रकार के ड्राइविंग अनुभव प्रदान करती है, जिसमें 9.79 लाख रुपये से शुरू होने वाले 5 डीज़ल मैनुअल वेरिएंट भी शामिल हैं। 10 ऑटोनॉमस फंक्शंस की विशेषता वाला सेगमेंट का बेस्ट एडैस लेवल 1, डीज़ल और पेट्रोल दोनों इंजन्स के लिए टॉप-ऑफ़-द-लाइन वेरिएंट में उपलब्ध है। पेट्रोल में जीटी लाइन और एक्स-लाइन वेरिएंट की कीमत क्रमशः 14.50 और 14.69 लाख रुपये, और डीज़ल की कीमत 15.50 और 15.69 लाख रुपये है।

नई मस्कुलर और स्पोर्टियर सॉनेट एक अपराइट बॉडी स्टाइल के साथ सड़क पर अपनी विशिष्ट उपस्थिति बरकरार रखती है। फ्रंट कोलिजन-अवॉइडेंस असिस्ट, लीडिंग व्हीकल डिपार्चर अलर्ट और लेन फॉलोइंग असिस्ट जैसी 10 ऑटोनॉमस सुविधाओं से भरपूर, इस लोकप्रिय कॉम्पैक्ट एसयूवी का यह नवीनतम संस्करण आधुनिक भारतीय ग्राहकों के व्यक्तित्व से गहराई से मेल खाता है।

निवेश दस्तावेज जमा नहीं किया तो कट जाएगा वेतन, 31 मार्च से पहले जमा कराने होते हैं संबंधित कागजात

नईदिल्ली, एजेंसी। अगर आप नौकरीपेशा हैं व आपका वेतन कर के दायरे में आता है तो निवेश संबंधी दस्तावेज 31 मार्च, 2024 से पहले कंपनियों के पास जमा कर दें। दस्तावेज नहीं देने पर आपको ज्यादा टीडीएस का भुगतान करना पड़ेगा। इसका असर आपके हाथ में आने वाले वेतन पर पड़ेगा। अगर तय अवधि से पहले अपने कर स्लैब के मुताबिक किसी भी तरह का निवेश करते हैं तो आप इसकी जानकारी बाद में आईटीआर दाखिल करते समय देकर रिफंड के लिए आवेदन कर सकते हैं।

किराये की रसीद- किराया सालाना एक लाख रुपये से ज्यादा होने पर मासिक किराया रसीद। इसमें मकान मालिक के नाम के साथ पैन कार्ड जरूरी। किराये के नकद भुगतान पर रेंट रसीद, जिस पर राजस्व टिकटें होनी चाहिए।

राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र (एनएससी), पब्लिक प्रोविडेंट फंड, टैक्स सेविंग म्यूचुअल फंड, ईएलएसएस, बच्चों की ट्यूशन फीस, सुकन्या समृद्धि योजना में निवेश से जुड़े दस्तावेज।

होम लोन- अगर आपने संपत्ति के

लिए कोई होम लोन लिया है और बैंक को हर साल मूलधन का भुगतान करते हैं तो इस पर आयकर नियमों के तहत 1.50 लाख रुपये तक की छूट मिलती है। इसे पाने के लिए आपको जरूरी दस्तावेज जमा करने होंगे। कुछ मामलों में बिल्डर से प्राप्त प्रमाणपत्र भी देना पड़ता है।

इन तरीकों से भी बचा सकते हैं गाढ़ी कमाई – 80डीः इसके तहत स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम पर टैक्स बचा सकते हैं। अगर खुद के लिए, जीवनसाथी या बच्चों के लिए प्रीमियम भरते हैं तो 25,000 रुपये तक कर बचा सकते हैं। 60 साल से ज्यादा उम्र के माता-पिता के लिए स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम देते हैं तो 50,000 रुपये तक छूट पा सकते हैं। अगर करदाता व माता-पिता दोनों वरिष्ठ नागरिक हैं तो एक वित्त वर्ष में एक लाख रुपये तक छूट का दावा।

80सीसीडी (1बी): एनपीएस टियर-1 खाते में निवेश पर 50,000 रुपये तक की छूट। यह 80सी से अलग है। इस तरह, आप दो लाख रुपये तक की राशि पर छूट पा सकते हैं यानी 80सी के तहत 1.5 लाख व 80सीसीडी 1(बी) के तहत 50,000 रुपये।

आयकर कानून की धारा 80 यू, 80ईईए, 80टीटीए, 80टीटीबी और 80ई के तहत भी आयकर रिटर्न भरते समय आप छूट का दावा कर सकते हैं।

तो रिटर्न दाखिल करने में आसानी- स्वीटी मनोज जैन, निवेश सलाहकार का कहना है कि कंपनियां प्रस्तावित निवेश से जुड़े दस्तावेज मांगती हैं और उसी आधार पर हर माह टैक्स काटती हैं। वित्त वर्ष के अंत तक अगर प्रस्तावित रकम से कम निवेश करते हैं तो जनवरी, फरवरी व मार्च में उसके हिसाब से आपके वेतन से ज्यादा टीडीएस काटा जाता है। कंपनी को निवेश की सही जानकारी देने पर रिटर्न भरना भी आसाना होता है।

प्रखर चतुर्वेदी ने कूच बिहार में बनाए 404 रन

अंडर-19 टूर्नामेंट में 400+ स्कोर करने वाले पहले खिलाड़ी, कर्नाटक ने जीता खिताब

शिवमोग्गा (एजेंसी)। कर्नाटक के बल्लेबाज प्रखर चतुर्वेदी ने कूच बिहार ट्रॉफी के फाइनल में मुंबई के खिलाफ नाबाद 404 रन की पारी खेली। वे इस अंडर-19 क्रिकेट टूर्नामेंट में 400+ रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बन गए है। शिवमोग्गा के केएससीए नेवले स्टेडियम में प्रखर की पारी की बदौलत मैच ड्रॉ रहा और कर्नाटक ने पहली पारी में 510 रन की बढ़त के आधार पर ट्रॉफी अपने नाम की। कूच बिहार ट्रॉफी अंडर-19 खिलाड़ियों के लिए इंडिया का फर्स्ट क्लास डोमेस्टिक टूर्नामेंट है।

पारी के दौरान प्रखर ने 46 चौके लगाए – प्रखर ने कर्नाटक के लिए पारी की शुरुआत की और पारी घोषित करने तक नाबाद रहे। उन्होंने पारी में 638 गेंदों का सामना करते हुए 46 चौके और तीन छक्के लगाए। उनकी पारी के दम पर कर्नाटक ने अपनी पहली पारी घोषित करने से पहले 223 ओवरों में 8 विकेट के नुकसान पर 890 रनों का विशाल स्कोर बनाने में कामयाबी हासिल की।

राहुल द्रविड़ के बेटे समित ने 22 रन बनाए – मैच में भारतीय क्रिकेट टीम के हेड कोच राहुल द्रविड़ के बेटे समित द्रविड़ ने भी 5वें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए 46 गेंदों पर 22 रन बनाए। समित ने गेंदबाजी करते हुए दो विकेट भी लिए। टीम के हर्षिल धर्मानी पारी के दूसरे शतकवीर थे, जिन्होंने 228 गेंदों पर 19 चौकों और 5 छक्कों की मदद से 169 रन बनाए। प्रखर ने दूसरे विकेट के लिए उनके साथ 290 रन जोड़े।

कर्नाटक ने जीती ट्रॉफी –फाइनल में पहले फील्डिंग करने का फैसला करने के बाद, कर्नाटक बैकफुट पर था, क्योंकि सलामी बल्लेबाज आयुष म्हात्रे के 145 रनों की मदद से पहली पारी में मुंबई को 380 रन दिए थे। हांलाकि, जब प्रखर चतुर्वेदी मैदान पर उतरे तो कर्नाटक मजबूत स्थिति में आ गया। उन्होंने 404 रन बनाकर अपनी एक अलग पहचान बना ली। उनकी पारी के दम पर कर्नाटक ने पहली पारी में 510 रनों की बड़ी बढ़त हासिल की और चौथे दिन पारी घोषित करने के तुरंत बाद दोनों टीमों ने ड्रॉ पर समझौता करने का फैसला किया। पहली पारी में बढ़त लेने के साथ ही कर्नाटक इस सीजन में कूच बिहार ट्रॉफी का चैंपियन बन गया।

द्रविड़ के दोनों बेटे प्रोफेशनल क्रिकेटर – द्रविड़ के 2 बेटे हैं और दोनों ही प्रोफेशनल क्रिकेट खेल रहे हैं। बड़े बेटे समित, जो इस साल की शुरुआत में 18 साल के हो गए, वीनू मांकड़ ट्रॉफी में कर्नाटक के लिए खेले थे। दूसरी ओर, उनके छोटे बेटे अन्वय कर्नाटक अंडर-14 टीम के कप्तान हैं।

बीसीसीआई ने सिलेक्शन कमेटी के लिए आवेदन मांगा

एप्लिकेशन जमा करने की आखिरी तारीख 25 जनवरी, किसे रिप्लेस किया जाएगा कन्फर्म नहीं

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने सोमवार को मेंस सीनियर क्रिकेट टीम सिलेक्शन कमेटी के सदस्य के एक पद के लिए आवेदन मंगाए हैं। बीसीसीआई ने अपनी वेबसाइट पर इसकी जानकारी दी है। इस आवेदन में अजीत अगरकर की अध्यक्षता वाले मौजूदा पांच सदस्यीय पैनल में से किसे रिप्लेस किया जाएगा, यह नहीं बताया गया है। आवेदन भरने की आखिरी तारीख 25 जनवरी है। बीसीसीआई के नियम के अनुसार, बोर्ड हर जोन (ईस्ट, वेस्ट नार्थ, साउथ और सेंट्रल) से एक चयनकर्ता चुनता है, जिसमें सबसे अनुभवी सदस्य को पैनल का अध्यक्ष बनाया जाता है, जो अभी अजीत अगरकर हैं। किसी भी चयनकर्ता का संयुक्त कार्यकाल पांच साल (जूनियर और सीनियर पैनल को मिलाकर) से अधिक नहीं हो सकता है। चेतन शर्मा को फरवरी 2023 में एक स्टिंग ऑपरेशन के बाद पद से इस्तीफा देना पड़ा था। इसके बाद जुलाई में वेस्ट जोन से अगरकर को अध्यक्ष के रूप में शामिल किया गया था। फिलहाल अगरकर और सलिल अंकोला (वेस्ट), एस शरत (साउथ), एसएस दास (ईस्ट) और सुब्रोतो बनर्जी (सेंट्रल) चयन समिति में मौजूद हैं। यह संभव है कि बीसीसीआई समिति में नार्थ से किसी को रखना चाहेगा।

अगरकर सिलेक्शन कमेटी के चेयरमैन – पूर्व तेज गेंदबाज अजित अगरकर को जुलाई 2023 में टीम इंडिया की सिलेक्शन कमेटी का नया चेयरमैन बनाया गया था। बीसीसीआई ने लिखा था, अगरकर को टेस्ट मैचों में सीनियॉरिटी के आधार पर चीफ सिलेक्टर बनाया गया है। आवेदन करने के लिए जरूरी योग्यता 7 टेस्ट मैच खेले हो। 30 फर्स्ट क्लास मैच खेले हो। या 10 वनडे और 20 फर्स्ट क्लास मैच का अनुभव हो। आवेदन करने वाले खिलाड़ी के संन्यास को कम से कम पांच साल का समय बीत गया हो। सीनियर चयन समिति के अध्यक्ष को एक करोड़ रुपए सालाना मिलते हैं

राष्ट्रीय चयनकर्ता के पद के लिए आवेदन करने से अक्सर बड़े खिलाड़ी कतराते हैं, क्योंकि सैलरी कम होती है। बता दें कि सीनियर चयन समिति के अध्यक्ष को एक करोड़ रुपए सालाना मिलते हैं, जबकि चार बाकी सदस्यों को 90 लाख रुपए सालाना दिए जाते हैं। चेतन शर्मा को फरवरी में देना पड़ा था इस्तीफा अगरकर ने 45 साल के पूर्व गेंदबाज ने पूर्व क्रिकेटर चेतन शर्मा की जगह ली थी। चेतन शर्मा को फरवरी 2023 में एक स्टिंग ऑपरेशन के बाद पद से इस्तीफा देना पड़ा था। इस स्टिंग में वह भारतीय खिलाड़ियों और टीम चयन को लेकर गोपनीय जानकारी पर बात करते नजर आए थे।

टीम इंडिया के खिलाड़ी महाकाल की शरण में

रवि बिश्नोई, तिलक वर्मा, वॉशिंगटन सुंदर और जीतेश शर्मा भस्म आरती में हुए शामिल

उज्जैन (एजेंसी)। इंडियन क्रिकेट टीम के खिलाड़ियों ने सोमवार सुबह महाकाल के दर्शन किए। तड़के 2 बजे क्रिकेटर रवि बिश्नोई, तिलक वर्मा, वॉशिंगटन सुंदर और जीतेश शर्मा महाकाल मंदिर पहुंचे। सभी ने नंदी हॉल में बैठकर भगवान महाकाल की आरती की। रविवार को इंदौर में भारत और अफगानिस्तान के बीच मैच खेला गया था। टीम को मिली जीत के बाद भारतीय टीम के चारों खिलाड़ी उज्जैन पहुंचे। करीब 2 घंटे तक भस्म आरती में शामिल होने के बाद सभी इंदौर के लिए रवाना हो गए।

मैदान में घुसा फैन, विराट को गले लगाया

इंदौर (एजेंसी)। भारत ने अफगानिस्तान के खिलाफ दूसरा टी-20 मुकाबला 6 विकेट से जीता। टीम ने इंदौर के होलकर स्टेडियम में 173 रन का टारगेट 15.4 ओवर में 4 विकेट पर हासिल कर लिया। अफगानिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पूरे 20 ओवर में सभी 10 विकेट खोकर 172 रन बनाए थे। मुकाबले के दौरान एक फैन मैदान में घुस गया और विराट को गले लगा लिया। लगातार सीरीज के दूसरे मुकाबले में कप्तान रोहित जीरो पर आउट हुए। वहीं, नवीन उल हक ने विराट कोहली का विकेट लिया।

विराट से मिलने के लिए फैन ने सिक्योरिटी तोड़ी – अफगानिस्तान की पारी के 18वें ओवर के दौरान एक युवक सिक्योरिटी तोड़कर विराट कोहली से मिलने पहुंचा। उन्होंने विराट को गले लगा लिया, उस वक्त स्टार बल्लेबाज मैदान पर फील्डिंग कर रहे थे। बाद में युवक को हिरासत में ले लिया गया। युवक विराट कोहली का बहुत बड़ा फैन लग रहा था और खिलाड़ी से मिलने की इच्छा से फेंस पर चढ़कर मैदान में घुस गया।

जीतने के बाद रोहित बोले 2007 में डैब्यू के बाद मैंने अब तक हर पल को जिया है – इंदौर टी20 जीतने के साथ ही रोहित शर्मा ने सबसे ज्यादा टी20 मैच जीतने का महेंद्र सिंह धोनी का रिकॉर्ड बराबर कर लिया। रोहित भले ही मोहाली और इंदौर टी20 मुकाबले में बल्ले से कुछ नहीं कर पाए लेकिन वह अपनी टीम को जीत दिलाने में सफल रहे। रोहित शर्मा ने मैच जीतने के बाद कहा कि जीत की खुशी तो है ही। 2007 से ही इस यात्रा के दौरान मैंने हर पल का लुत्फ उठाया है। जिस तरह का प्रदर्शन हमारे खिलाड़ियों ने किया वह गौरवान्वित करने वाला है। पिछले दोनों मुक़ाबलों में हमने हर पहलू में अच्छा किया है। यशस्वी ने सिर्फ टी20 में ही नहीं बल्कि टेस्ट में भी यह साबित किया है कि वह क्या कर सकते हैं। सिर्फ टैलेंट ही नहीं बल्कि उनका शॉट सेलेक्शन भी बेहतरीन है। दुबे ने प्रभावित किया। ख़ास तौर पर जिस तरह वह स्पिनर्स पर आक्रमण करते हैं वह काबिल ए तारीफ़ है। बता दें कि रोहित शर्मा ने इंदौर टी20 के साथ ही कई रिकॉर्ड अपने नाम कर लिए। वह बतौर कप्तान सबसे ज्यादा 41 टी20 मुकाबले जीतकर महेंद्र सिंह धोनी के रिकॉर्ड की बराबरी कर चुके हैं। आगामी मुकाबला जीतते ही वह धोनी को पीछे छोड़ देंगे। रोहित 150 टी20 मुकाबले खेलने वाले पहले प्लेयर हैं। इसके अलावा टी20 में रोहित के नाम 12 बार 0 पर आऊट होने का रिकॉर्ड दर्ज हो गया है।

एंडी मरे ऑस्ट्रेलियन ओपन 2024 से बाहर

पहले राउंड में अर्जेंटीना के टॉमस ने सीधे सेटों में हराया ; मेदवेदेव दूसरे दौर में पहुंचे

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के स्टार टेनिस एंडी मरे ऑस्ट्रेलियन ओपन 2024 के पहले राउंड में हारकर बाहर हो गए हैं। उन्हें सोमवार को टूर्नामेंट के फर्स्ट राउंड में अर्जेंटीना के 24 साल के टेनिस खिलाड़ी टॉमस मार्टिन ने सीधे सेटों में हराया। वहीं वर्ल्ड के तीसरे नंबर के खिलाड़ी डेनियल मेदवेदेव जीतकर दूसरे दौर में पहुंच गए हैं। शो कोर्ट एरेना में मार्टिन ने तीन बार ग्रैंड स्लैम चैंपियन मरे को 6-4, 6-2, 6-2 से हराकर सीजन के पहले ग्रैंड स्लैम के दूसरे दौर में प्रवेश किया। अगले दौर में मार्टिन का सामना फ्रांस के गेल मोनफिल्स से होगा। मोनफिल्स ने पहले राउंड में यानिक हनफमैन को 6-4, 6-3, 7-5 से हराया।मार्टिन ने तीन बार ग्रैंड स्लैम चैंपियन मरे को 6-4, 6-2, 6-2 से हराया।

मेदवेदेव ने एटमाने को हराया – मेंस कैटेगरी में तीसरी सीड रूस के मेदवेदेव ने अपने प्रतिद्वंदी फ्रांस के टेरेंस एटमाने के मैच के बीच से रिटायर हो जाने की वजह से दूसरे दौर में जगह बनाई। जब 22 साल के एटमाने ने हटने का फैसला किया तब मेदवेदेव 5-7, 6-2, 6-4, 1-0 से आगे चल रहे थे। अगले दौर में मेदवेदेव का सामना फिनलैंड के एमिल रुसुवुओरी से होगा।मेदवेदेव अगले दौर में फिनलैंड के एमिल रुसुवुओरी से भिड़ेंगे।

सिटसिपास ने बर्ग्स को मात दी – पिछले साल फाइनल में नोवाक जोकोविच से हारने वाले स्टेफानोस सिटसिपास ने बेल्जियम के जिजौ बर्ग्स को 5-7, 6-1, 6-1, 6-3 से हराया। ऑस्ट्रेलियन ओपन 2014 के चैंपियन और तीन बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन स्टेन वावरिंका पहले राउंड में हारकर बाहर हो गए। उन्हें एड्रियन मन्नारिनो ने 6-4, 3-6, 5-7, 6-3, 6-0 से हराया।सिटसिपास ने बेल्जियम के जिजौ बर्ग्स को 5-7, 6-1, 6-1, 6-3 से मात दी।

साल का पहला ग्रैंड स्लैम है ऑस्ट्रेलिया ओपन – टेनिस में 4 ग्रैंड स्लैम होते हैं। चारों हर साल आयोजित होते हैं, इसकी शुरुआत जनवरी में ऑस्ट्रेलियन ओपन से होती है। मई और जून में फ्रेंच ओपन होता है। जुलाई में विम्बलडन और अगस्त-सितंबर में स ओपन होता है। यूएस ओपन साल का आखिरी ग्रैंड स्लैम होता है।

481.2 करोड़ है प्राइज मनी – इस साल ऑस्ट्रेलियन ओपन की कुल प्राइज मनी 481.2 करोड़ रुपए है। पिछले साल के मुकाबले इस साल प्राइज मनी में 13 फीसदी का इजाफा हुआ। मेंस और विमेंस सिंगल्स के विनर को करीब 17.50 करोड़ रुपए मिलेंगे। टूर्नामेंट में सभी कैटेगरी के लिए हर स्टेज पर अलग-अलग प्राइज मनी है।

डीपफेक का शिकार बने सचिन तेंदुलकर

फर्जी वीडियो वायरल होने के बाद लोगों को किया सतर्क

मुंबई (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने उस वीडियो को फर्जी बताया है जिसमें उन्हें और उनकी बेटी सारा को एक ऐप इस्तेमाल कर आसानी से पैसा कमाने के लिए कहा गया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल वीडियो में पृष्ठभूमि में तेंदुलकर को एक अलग व्यक्ति की आवाज के साथ दिखाया गया है। क्लिप में कहा गया कि तेंदुलकर की बेटी एक खास गेम खेलती है जिससे उन्हें पैसे कमाने में मदद मिलती है। क्लिप सामने आने के बाद तेंदुलकर ने सफाई देते हुए अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट डाला है।

महान क्रिकेटर ने कहा कि वह टेक्नोलॉजी के बड़े पैमाने पर दुरुपयोग को देखकर परेशान थे। उन्होंने गलत सूचना और डीपफेक के प्रसार को रोकने की भी अपील की और लोगों से अधिक सतर्क और सावधान रहने को भी कहा। तेंदुलकर ने कहा, ये वीडियो फर्जी हैं। टेक्नोलॉजी का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग देखना परेशान करने वाला है। सभी से बड़ी संख्या में इस तरह के वीडियो, विज्ञापन और ऐप्स की रिपोर्ट करने का अनुरोध करें। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों को शिकायतों के प्रति सतर्क और प्रतिक्रियाशील रहने की जरूरत है। गलत सूचना और डीपफेक के प्रसार को रोकने के लिए उनकी ओर से उचित कार्रवाई महत्वपूर्ण है। तेंदुलकर ने अपने पोस्ट में इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय, केंद्रीय राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर और महाराष्ट्र साइबर क्राइम को भी टैग किया। डीपफेक, 'डीप लर्निंग' और 'फेक' का एक संयोजन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके बनाई गई हाइपर-यथार्थवादी वीडियो या ऑडियो रिकॉर्डिंग हैं।

पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने पीएम मोदी को दी बधाई

राम लला की प्राण प्रतिष्ठा देशवासियों के लिए ऐतिहासिक दिन

जालंधर (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर व आम आदमी पार्टी के पंजाब से राज्यसभा सांसद हरभजन सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और देशवासियों को अयोध्या में 22 जनवरी को श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की शुभकामनाएं दी हैं। सांसद हरभजन सिंह ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर वीडियो को शेयर किया है। उन्होंने कहा कि उन्हें राम लला से मुलाकात का इंतजार है।

वीडियो में सांसद हरभजन ने कहा कि अब कुछ ही दिन बाकी बचे हैं। जब उनकी भी राम लला के साथ सीधी-साक्षात मुलाकात होगी। हम सब भारत वासियों के लिए ये बहुत बड़ा दिन है। सभी राम भक्तों को मेरा प्रणाम। 22 जनवरी को हम सभी के राम लला की प्राण-प्रतिष्ठा होनी है। आपकी तरह मैं भी 22 जनवरी का इंतजार कर रहा हूं। ये एक ऐतिहासिक दिन है और पूरे विश्व का सपना पूरा होने जा रहा है। पूरे भारत वासियों में खुशी की लहर है।

पहली बधाई प्रधानमंत्री को – सांसद हरभजन सिंह ने बधाई संदेश में पहली बधाई प्रधानमंत्री को दी। उन्होंने कहा कि मैं सबसे पहली बधाई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देना चाहता हूं और आप सभी को बहुत शुभकामनाएं। ये एक ऐसा मंदिर बनने जा रहा है, जहां बहुत सारे लोग आएंगे और श्रीराम के दर्शन करके निहाल होकर जाएंगे। भगवान राम हम सब पर कृपा बनाए रखें।

प्रधानमंत्री कर चुके हैं देशभर में दीये जलाने की अपील – अयोध्या के राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। कार्यक्रम के लिए देशभर में उत्साह है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 जनवरी को देशवासियों से दीये जलाने की अपील कर चुके हैं। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम देश के हर गांव में लाइव (सीधा प्रसारण) दिखाया जाएगा। आजादी के बाद देश में सबसे बड़ा कार्यक्रम होने जा रहा है।

सट्टेबाजी डेटा संग्रह के लिए एफआईएच की नई डील पर सवाल खड़े हुए

रांची, एजेंसी। अंतर्राष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) द्वारा हाल ही में स्प्रिंग मीडिया के साथ साझेदारी करके प्रशंसकों को एक सट्टेबाजी पैकेज की पेशकश करने का निर्णय, जिसमें चार साल के चक्र में 1,300 मैच शामिल हैं, ने चिंताओं के साथ एक आशंका का पिटारा खोल दिया है। एफआईएच ने एक बयान में बताया, अंतर्राष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) को यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि उसने प्रशंसकों को एक सट्टेबाजी पैकेज की पेशकश करने के लिए स्प्रिंग मीडिया के साथ साझेदारी की है, जिसमें सभी एफआईएच इवेंट शामिल हैं, जो चार साल के चक्र में 1,300 से अधिक मैचों का प्रतिनिधित्व करते हैं। नया समझौता पेरिस 2024 के लिए एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर रांची और वालेंसिया, स्पेन में एक साथ आयोजित होने के साथ प्रभावी हुआ। हालाँकि अधिकांश यूरोपीय देशों, अमेरिका और ओसनिया में सट्टेबाजी वैध है, भारत, पाकिस्तान, मलेशिया और सभी मुस्लिम देशों में यह अवैध है। एफआईएच विज्ञप्ति में कहा गया है, सट्टेबाजी पैकेज स्प्रिंग मीडिया के हॉकी पोर्टफोलियो में नवीनतम अतिरिक्त है। एजेंसी ने हाल ही में ऑस्ट्रेलियाई शीर्ष स्तरीय हॉकीवन लीग के साथ साझेदारी की है, जो अपने 2023 संस्करण के मीडिया अधिकारों को राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर कई प्रमुख बाजारों में वितरित कर रही है। 2022 से, अंतर्राष्ट्रीय पूर्ण -सर्विस एजेंसी ने वियाप्ले नीदरलैंड्स की ओर से होस्ट ब्रॉडकास्टर के रूप में भी काम किया है, जो राष्ट्रीय होफडक्लास के मैचों को कवर करता है।

इस कदम को एफआईएच के कानूनी सट्टेबाजी में शामिल होने के रूप में देखा जा रहा है, जो कि अधिकांश शीर्ष अंतरराष्ट्रीय महासंघ नहीं करते हैं, इसे भारत जैसे देशों में भी संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है जहां सट्टेबाजी अवैध है और केवल घुड़दौड़ में ही इसकी अनुमति है।

हालाँकि, एफआईएच ने रविवार को स्पष्ट किया कि स्प्रिंग मीडिया के साथ सौदा केवल दुनिया भर की सभी एफआईएच प्रतियोगिताओं से विश्व स्तर पर सट्टेबाजी डेटा एकत्र करने और वितरित करने से संबंधित है और न तो एफआईएच और न ही उसका भागीदार स्प्रिंग मीडिया एक सट्टेबाज की तरह काम करेगा और सट्टेबाजी का संचालन करेगा। एफआईएच ने स्पष्ट किया कि नया सौदा स्पोर्टरडार के साथ उसके पिछले अनुबंध से बहुत अलग नहीं है, जो कुछ महीने पहले समाप्त हो गया था। स्पोर्टरडार के साथ समझौते की तरह, यह सौदा भी विश्व स्तर पर सट्टेबाजी डेटा एकत्र करने और वितरित करने से संबंधित होगा और इसमें विपणन अधिकारों का वितरण भी शामिल होगा। एफआईएच ने रविवार को स्पष्ट किया कि यह सौदा अतिरिक्त राजस्व उत्पन्न करके अपने वित्त को बढ़ाने के लिए किया गया है। एफआईएच के जिस प्रवक्ता से आईएएनएस ने रविवार को यहां बात की, उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि सट्टेबाजी और किसी अन्य सट्टेबाजी से जुड़ी गतिविधियों के लिए डेटा एकत्र करने में उसकी भागीदारी को लेकर सदस्यों के साथ किस तरह की परामर्श प्रक्रिया चल रही है, जिसमें उसका भागीदार शामिल है।

भारतीय महिला हॉकी टीम ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 3-1 से शानदार जीत दर्ज की

रांची (एजेंसी)। भारतीय महिला हॉकी टीम को यहां झारखंड स्थित रांची के मारंग गोमके जयपाल सिंह एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम में जारी एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर-2024 के अपने दूसरे पूल-बी मैच में न्यूजीलैंड को 3-1 से हराकर शानदार जीत दर्ज कर ली। भारत के लिए संगीता कुमारी, उदिता और ब्यूटी डुंगडुंग ने गोल किए जबकि न्यूजीलैंड के लिए एकमात्र गोल मेगन हल ने किया। अपने पहले मैच में शनिवार को अमेरिका के खिलाफ 0-1 की निराशाजनक हार के बाद भारतीय टीम ने न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच के शुरुआती मिनट में गोल करके शानदार शुरुआत की।

नेहा ने सकर्ल में सलीमा टेटे के लिए शॉट सेट किया और सिमडेगा की प्रतिभाशाली खिलाड़ी संगीता कुमारी ने इसे शानदार फिनिशिंग टच दे दिया। हालांकि अगले ही मिनट में न्यूजीलैंड को मैच का पहला पेनल्टी कॉर्नर मिल गया, लेकिन टीम इसे गोल में तब्दील नहीं कर सकी। इस बीच, भारत ने धैर्यपूर्वक अपने खेल को आगे बढ़ाया और न्यूजीलैंड की डिफेंस को कमजोर कर दिया। दोनों टीमों को अगले मिनटों में फिर पेनल्टी कॉर्नर मिला। लेकिन इस बार न्यूजीलैंड को सफलता मिली और मेगन हल ने 9वें मिनट में गोल करके न्यूजीलैंड को मुकाबले में बराबरी दिला दी। इसके 4 मिनट बाद ही लालरेमसियामी ने सकर्ल में अच्छा प्रदर्शन करके भारत को फिर से पेनल्टी कॉर्नर दिला दिया। इस बार बर्थडे गर्ल उदिता ने एक तेज-तररर शॉट के साथ इस पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर भारत की बढ़त को दोगुना कर दिया।

भारत ने पहले क्वार्टर में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखा और 14वें मिनट में अपनी बढ़त 3-1 कर ली, जब झारखंड की दो खिलाड़ियों- सलीमा की मदद से ब्यूटी डुंगडुंग ने मेजबान टीम के लिए तीसरा गोल करने का काम किया। 3-1 की शानदार बढ़त ने भारत को दूसरे क्वार्टर में आरामदायक स्थिति में ला दिया। हालांकि इस क्वार्टर में कोई गोल नहीं हुआ और पहले 15 मिनट की तेज गति के बाद टीम की स्पीड थोड़ी धीमी हो गई। लेकिन ब्यूटी, सलीमा और दीपिका ने जोरदार शानदार दिखाकर खचाखच भरे घरेलू दर्शकों को सीटों पर बैठने के लिए मजबूर कर दिया।

न्यूजीलैंड की टीम फिर मुकाबले में नई रणनीति और जोश के साथ उतरी। कीवी टीम को इस क्वार्टर में कुछ पेनल्टी कॉर्नर जरूर मिले,वे भारत की डिफेंस में सेंध नहीं लगा पाई। भारतीय कप्तान सविता ने भी पेनल्टी कॉर्नर पर न्यूजीलैंड को स्कोर करने से रोके रखा और कुछ शानदार बचाव किए। इसके बाद निशा भी शानदार खेल दिखाया। इसके बाद भारत ने भी अगले मिनटों में कुछ मौके बनाए लेकिन टीम इसे गोल में नहीं बदल सकी। भारत ने अपने मजबूत डिफेंस के दम 3-1 की बढ़त को बनाए रखा।

संक्षिप्त समाचार

भाजपा नेता के बयान से गरमाई राजनीति, कांग्रेसियों ने दर्ज कराई पूर्व केंद्रीय मंत्री हेगड़े की शिकायत

बेंगलुरु। कर्नाटक में कांग्रेस कार्यकर्ताओं और केपीसीसी महासचिव एस मनोहर ने रविवार को हाई ग्राउंड पुलिस स्टेशन में पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता अनंत कुमार हेगड़े के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। कांग्रेसियों ने हेगड़े की गिरफ्तारी की मांग की है। हेगड़े ने कही थी ये बात मनोहर ने कहा, हेगड़े ने बयान दिया है कि राज्य में मस्जिदों को ध्वस्त कर दिया जाना चाहिए। इससे कानून-व्यवस्था को खतरा है। इसलिए पुलिस मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार करे।भाजपा नेता हेगड़े ने एक मस्जिद को लेकर कहा था कि जैसे विवादित ढांचे को ढहाया गया, भटकल की मस्जिद का भी वैसा ही हश्र होगा। हेगड़े ने शनिवार को कुमता में कार्यक्रम में यह भी कहा था कि गोहत्या के चलते दिए गए श्राप के कारण पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और कांग्रेस नेता संजय गांधी मृत्यु हुई थी। यह श्राप गोहत्या पर प्रतिबंध के लिए चलाए गए आंदोलन के दौरान करपात्री महाराज ने दिया था।

कौशल विकास घोटाला मामले में बढ़ सकती हैं चंद्रबाबू नायडू की मुश्किलें

नईदिल्ली, एजेंसी। कौशल विकास निगम घोटाला मामले में आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट 16 जनवरी को अपना फैसला सुनाएगा। हाई कोर्ट ने इस मामले में नायडू के खिलाफ प्राथमिकी को रद करने से इनकार कर दिया था। नायडू ने हाई कोर्ट के आदेश को शीर्ष न्यायालय में चुनौती है। नायडू को पिछले साल नौ सितंबर को गिरफ्तार किया गया था जस्टिस अनिरुद्ध बोस और जस्टिस बेला एम. त्रिवेदी की शीर्ष अदालत की पीठ ने पिछले साल 17 अक्टूबर को नायडू की याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।कौशल विकास निगम के फंड के कथित दुरुपयोग के आरोप में नायडू को पिछले साल नौ सितंबर को गिरफ्तार किया गया था। आरोप है कि जब वह 2015 में मुख्यमंत्री थे उस दौरान हुए इस घोटाले से राज्य के खजाने को 371 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था। नायडू ने आरोपों से इन्कार किया है। आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट ने पिछले साल 20 नवंबर को मामले में उन्हें जमानत दे दी थी।

चेन्नई में भोगी के धुएं के कारण उड़ान सेवा बाधित, अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को हैदराबाद किया गया डायवर्ट

चेन्नई। चेन्नई में भोगी के धुएं के कारण दृश्यता प्रभावित होने से रविवार को उड़ान सेवा बाधित रही। भोगी फसल उत्सव पोंगल की पूर्व संध्या पर मनाया जाता है। इस दिन लोग पुरानी चीजों को त्यागते हैं। लोग लकड़ी के लट्ठों और घर पर लकड़ी के पुराने फर्नीचर के साथ अलाव जलाते हैं। हवाईअड्डे के अधिकारियों ने बताया कि सुबह लगभग दो घंटे तक उड़ान सेवाएं बाधित रहीं। तीन अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को हैदराबाद डायवर्ट कर दिया गया। दिल्ली से आने वाली एक घरेलू उड़ान को भी तेलंगाना की राजधानी की ओर डायवर्ट किया गया। हालांकि एहतियाती उपायों के मद्देनजर इस वर्ष भोगी के कारण हवाई यातायात पर प्रभाव अपेक्षाकृत कम था।

जयपुर में शराब की दुकानों से बंधी ले रहे बालमुकुंदाचार्य, कांग्रेस विधायक रफीक खान का आरोप

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान में शराब और मीट की दुकानों को हटाने के मामले को लेकर सुर्खियों में आए बीजेपी विधायक बालमुकुंदाचार्य पर आरोप लगे है। कांग्रेस विधायक रफीक खान ने आरोप लगाया है कि बीजेपी विधायक बालमुकुंदाचार्य शराब की दुकानों से बंधी ले रहे है।अब चौथ वसूली की तैयारी कर रहे हैं। हालांकि, बालमुकुंदाचार्य ने कहा कि आरोप झूठे है। दरअसल जयपुर के संजय बाजार में हटवाड़ा हटाने को लेकर रविवार को विवाद हो गया। पहले दुकानदारों ने निगम दस्ते का विरोध किया। सूचना पर आदर्श नगर से विधायक रफीक खान पहुंचे। उन्होंने भाजपा विधायक बालमुकुंदाचार्य पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि वे शराब की दुकानों से बंधी ले रहे हैं। इस पर विधायक बालमुकुदाचार्य ने कहा कि रफीक खान के आरोप मिथ्या है।

अमिताभ बच्चन ने राम मंदिर से 15 मिनट की दूरी पर अयोध्या में खरीदा प्लॉट

मुंबई, एजेंसी। बॉलीवुड के लेजंडरी एक्टर अमिताभ बच्चन राम की नगरी अयोध्या में आलीशान घर बनवाना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने अभिनंदर लोढ़ा से सेवन स्टार टाउनशिप द सरयू में प्लॉट खरीदा है। अभिनंदन मुंबई बेस्ड डेवलपर द हाउस ऑफ अभिनंदन लोढ़ा के चेयरमैन हैं। यह जगह कितनी बड़ी और कितने की है, इस पर एचओएबीएल की तरफ से कोई कमेंट नहीं मिल सका। हालांकि सोर्सेज का कहना है कि अमिताभ बच्चन वहां 10,000 स्क्वैयर फीट का घर बनवाना चाहते हैं जिसकी कीमत 14.5 करोड़ होगी। 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर में प्रधानमंत्री प्राण प्रतिष्ठा करेंगे। उसी दिन द सरयू एन्क्लेव का लॉन्च होगा। बताया जा रहा है कि यह 51 एकड़ में फैला है। इस प्रोजेक्ट में इनवेस्टमेंट पर अमिताभ बच्चन ने हिंदुस्तान टाइम्स से कहा, मैं द हाउस ऑफ अभिनिंद लोढ़ा के साथ अयोध्या में द सरयू में घर बनाने के लिए उत्साहित हूं। इस शहर की मेरे दिल में खास जगह है। अयोध्या के अध्यात्म और संस्कृति ने एक इमोशनल रिश्ता बनाया है जो कि भौगोलिक सीमाओं से परे है। बिग बी ने कहा कि अयोध्या में परंपरा और मॉडर्निटी एक साथ बसती है।

दिल्ली में कोहरा का कोहराम, आईजीआई एयरपोर्ट पर 10 फ्लाइट डायवर्ट, 20 रद्द, 400 से ज्यादा उड़ानों में देरी

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली में मौसम की मार से धरती से आसमान तक हाहाकार मचा हुआ है। दिल्ली में जारी घने कोहरे और लो विजिबिलिटी के कारण रेल से लेकर हवाई यातायात बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। दिल्ली एयपोर्ट पर रविवार सुबह कुल 10 उड़ानों को डायवर्ट कर दिया, वहीं 20 उड़ानें रद्द कर दी गईं और 400 से अधिक उड़ानों में देरी हुई। एयरपोर्ट और रेलवे अधिकारियों ने कहा कि रविवार को लगभग 11 घंटे तक घने कोहरे के कारण राजधानी में उड़ान और रेल परिचालन प्रभावित हुआ, जिससे हजारों यात्रियों को घंटों इंतजार करना पड़ा।

अधिकारियों ने बताया कि रात 12.30 बजे दृश्यता 200 मीटर से नीचे चली गई और सुबह 3 बजे से 10.30 बजे के बीच लगभग साढ़े सात घंटे तक दृश्यता शून्य रही - जिसके कारण हवाई अड्डे पर लगभग 400 उड़ानें विलंबित हुईं, 10 का मार्ग बदला गया और कम से कम 20 उड़ानें रद्द कर दी गईं। हिन्दुस्तान टाइम्स डॉट कॉम की रिपोर्ट के

अनुसार, देरी का असर शाम तक जारी रहा, हालांकि दोपहर 12 बजे से शाम 5 बजे तक अच्छी धूप खिलने से पांच घंटे तक विजिबिलिटी में सुधार देखा गया। मौस विभाग (आईएमडी) के पूर्वानुमानों से पता चलता है कि सोमवार को भी घना से बहुत घना कोहरा छाए रहने की संभावना है, साथ ही ऑरेंज अलर्ट भी जारी है।

एयरपोर्ट के एक अधिकारी ने कहा, यह साल का सबसे घना कोहरा था, जिससे उड़ानों का परिचालन प्रभावित हुआ और जयपुर एयरपोर्ट के 10 रूट लो विजिबिलिटी के कारण प्रभावित हुए। हवाई अड्डे पर कुल 10 उड़ानें डायवर्ट की गईं। यह सुबह 4.30 बजे से दोपहर के बीच अलग-अलग समय पर हुआ। हालांकि देरी वाली उड़ानों की संख्या के बारे में कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन दिल्ली एयरपोर्ट की वेबसाइट से पता चलता है कि पूरे दिन लगभग 200 उड़ानें विलंबित हुईं। वेबसाइट पर कम से कम 10 उड़ानों के रद्द होने की जानकारी मिली। जब विजिबिलिटी 800 मीटर से कम हो जाती है तो एयरपोर्ट कम दृश्यता प्रक्रियाएं (एलवीपी) शुरू करता है - जिसका उद्देश्य उड़ानों के लिए लैंडिंग को आसान बनाना है। इस अवधि के दौरान, सीएटी-प्रथम प्रक्रियाएं लागू होती हैं, जो लैंडिंग में पायलटों का मार्गदर्शन करने के लिए सावधानियों का सबसे बुनियादी सेट है। केवल सीएटी-सेकंड अनुपालन वाली उड़ानों और पायलटों को दृश्यता 550 मीटर से कम होने पर उतरने की अनुमति है। वहीं, सीएटी थर्ड पायलट तब लैंडिंग कर सकते हैं, जब विजिबिलीटी 175 से 300 मीटर के बीच हो। सीएटी थर्ड क्वसबसे कठोर योग्यता है, जो विजिबिलिटी 50 मीटर होने पर भी उन्हें उतरने की अनुमति देती है। जबकि विजिबिलिटी 50 मीटर होने पर भी उड़ानें हवाई अड्डे पर उतर सकती हैं, किसी भी उड़ान को तब तक टेकऑफ करने की अनुमति नहीं है जब तक कि रनवे विजिबिलिटी सीमा (आरवीआर) 125 मीटर न हो, जिससे उड़ान में देरी होती है। एक रनवे पर चल रहे काम के कारण उड़ान संचालन में भी बाधा आई। हवाईअड्डे पर चार में से तीन रनवे अगस्त 2023 से चालू हैं।

दिल्ली में बीएस-3 पेट्रोल और बीएस-4 डीजल वाहनों की एंट्री पर रोक, नियम तोड़ा तो देना होगा जुर्माना

नईदिल्ली, एजेंसी।
बढ़ते प्रदूषण के बीच दिल्ली में ग्रैप स्टेज- 3 की पाबंदियां लागू कर दी गई हैं। इसी बीच परिवहन विभाग ने आदेश जारी किया है कि ग्रेप स्टेज-3 के तहत राजधानी में बीएस-3 पेट्रोल और बीएस-4 डीजल से चलते वाले हल्के वाहन प्रतिबंधित रहेंगे। इस संबंधित परिवहन विभाग के उपायुक्त योगेश जैन से आदेश जारी किया है, जिसमें कहा गया है कि यह पाबंदी अग्रिम आदेश तक लागू रहेगी। माना जा रहा है कि इस आदेश के बाद दिल्ली में करीब दो से तीन लाख वाहनों के आवागमन पर असर पड़ सकता है क्योंकि बड़ी संख्या में लोगों के पास बीएस-3 संचालित डीजल कारों की संख्या काफी है।

दिल्ली परिवहन विभाग ने अपने आदेश में कहा कि संशोधित ग्रैप के संचालन के लिए उप-समिति ने दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक के पूर्वानुमान की समीक्षा की है। संशोधित ग्रैप-3 और मोटर वाहन अधिनियम, 1988 की धारा 115 के तहत दिए गए निर्देशों के अनुसार, यह आदेश दिया जाता है कि दिल्ली एनसीटी में अगले आदेश तक तत्काल प्रभाव से बीएस-तीन पेट्रोल और बीएस-चार डीजल एलएमवी (चार पहिया वाहन) चलाने पर प्रतिबंध होगा (आपातकालीन सेवाओं में तैनात वाहनों, पुलिस वाहनों और प्रवर्तन के लिए उपयोग किए जाने वाले सरकारी वाहनों को छोड़कर)। जारी बयान में कहा गया है कि राजधानी में प्रदूषण बढ़ने के बाद एक बार फिर ग्रैप लागू कर दिया गया है। निजी निर्माण और ध्वस्तीकरण कार्यों के साथ ही बीएस-3 मानक वाले पेट्रोल और बीएस-4 मानक वाले डीजल वाहनों के संचालन पर भी रोक लगा दी गई है। अब अगर ऐसे वाहन सड़कों पर चलते पाए जाते हैं, तो उनके ऊपर जुर्माना भी लगाया जाएगा। यदि कोई बीएस-तीन पेट्रोल और बीएस-चार डीजल एलएमवी (चार पहिया वाहन) सड़क पर पाया गया तो उस पर मोटर वाहन अधिनियम, 1988 की धारा 194 (1) के तहत मुकदमा चलाया जाएगा, जिसमें 20,000 रुपये का जुर्माने का प्रावधान है। दिल्ली में बीते दो दिनों के अंदर प्रदूषण में बेहद तेजी से इजाफा हुआ है।

इंडिगो फ्लाइट में भारी बवाल, यात्री ने अनाउंसमेंट कर रहे पायलट को मारा जोर से मुक्का; चिल्लाने लगी एयर होस्टेस

नईदिल्ली, एजेंसी।
इंडिगो की एक विमान में सवार एक यात्री ने पायलट के साथ मारपीट की जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। दरअसल, एयरक्राफ्ट पायलट विमान में देरी के संबंध में एक घोषणा कर रहे थे जिससे यात्री गुस्सा हो गया और उसके साथ मारपीट करने लगा। यात्री की पहचान साहिल कटारिया के रूप में हुई है। अचानक पायलट की ओर जाता है और उसे मुक्का मार देता है। इस घटना के बाद एयर होस्टेस जोर-जोर से चिल्लाने लगती है। यह घटना दिल्ली से गोवा जाने वाली इंडिगो की उड़ान (6ई-2175) में हुई है। बता दें कि यात्री फ्लाइट में हो रही देरी से नाराज था जिसके कारण वह पायलट पर भड़क उठा। वीडियो के वायरल होने के बाद अब लोग शख्स की गिरफ्तारी की मांग कर रहे है। वीडियो के वायरल होने के बाद ङ्ग (पूर्व में ट्विटर) पर यूजर्स ने अपने रिएक्शन दिए है। एक यूजर ने लिखा, पायलट या केबिन क्रू को देरी से क्या लेना-देना है? वे बस अपना काम कर रहे थे। इस आदमी को गिरफ्तार करें, और उसे नो-फ्लाई सूची में डाल दें।वहीं, अन्य ने लिखा कि यह पागलपन है, इस तरह के लोगों को उड़ान भरने से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए या ब्लैक लिस्ट में डाला जाना चाहिए। चालक दल बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं हैं। माना जा रहा है कि विमान की शुरुआती टीम ने स्नष्ठञ्जरु यानी फ्लाइट ड्यूटी टाइम लिमिटेशन्स का उल्लंघन किया था, इसके कारण विमान में नए पायलट पहुंचे और अनाउंसमेंट करने लगे। पहले से ही फ्लाइट में काफी देरी हो चुकी थी। समाचार एजेंसी, ह्वढ्ढ के मुताबिक, इंडिगो ने यात्री के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है और दिल्ली पुलिस ने कहा कि हम आरोपियों के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई करेंगे। सरकारी सूत्रों के अनुसार, विमानन सुरक्षा एजेंसी ने वायरल वीडियो के संबंध में जांच शुरू कर दी है। विजिबिलिटी कम होने के कारण दिल्ली को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने वाली कई फ्लाइट्स और ट्रेन देरी से चल रही हैं।

बेंगलुरु ने दिल्ली को दी मात, प्राइवेट कारों के मामले में सिलिकॉन वैली बना टॉप शहर

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली को पीछे करते हुए बेंगलुरु सबसे अधिक प्राइवेट कारों वाला शहर बन गया है। दिल्ली स्टैटिस्टिक हैंडबुक 2023 के अनुसार, 31 मार्च, 2023 तक, बेंगलुरु में कुल 23.1 लाख प्राइवेट कार थी। ये संख्या दिल्ली के मुकाबले सबसे अधिक है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली में कुल कारों की संख्या 79.5 लाख है, जिसमें से प्राइवेट कार की संख्या महज 20.7 लाख है। हाल के वर्षों में, दिल्ली परिवहन विभाग ने पुराने और खराब हो चुके वाहनों का पंजीकरण रद्द करने और उन्हें स्क्रैप करने के उपाय किए हैं। दिल्ली स्टैटिस्टिक हैंडबुक 2023 के अनुसार, दिल्ली में कुल रजिस्टर वाहनों की संख्या 1.2 करोड़ थी, जिनमें से 33.8 लाख प्राइवेट कारें थी। बात करें 2021-22 और 2022-23 वर्ष की तो लगभग 55 लाख कारों का रजिस्ट्रेशन रद्द किया गया और 1.4 लाख कारों को नष्ट कर दिया गया।

वहीं, 6.2 लाख से अधिक ने अन्य राज्यों में फिर से रजिस्ट्रेशन करने के लिए नो-ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट प्राप्त किए है। परिवहन विभाग ने 10 और 15 साल से अधिक पुराने डीजल और पेट्रोल वाहनों पर सुप्रीम कोर्ट के प्रतिबंध के अनुपालन में यह एक्शन लिया। भारत की सिलिकॉन वैली नाम से मशहूर बेंगलुरु इस समय खराब बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक परिवहन की लगातार समस्या से जूझ रहा है। बारिश और फेस्टिवल के दौरान बेंगलुरु की सड़कें खचाखच वाहनों से भरी रहती है और लोगों को भारी ट्रैफिक का भी सामना करना पड़ता है। बता दें कि 2022 के दौरान वैश्विक यातायात भीड़ रैंकिंग में बेंगलुरु ने दूसरा स्थान हासिल किया था जो मुद्दे की गंभीरता को उजागर करता है। पिछले साल बेंगलुरु,लंदन को पीछे छोड़ते हुए 2022 में वैश्विक स्तर पर दूसरा सबसे भीड़भाड़ वाला शहर बना था।

युद्ध के बीच बेंजामिन नेतन्याहू को नई टेंशन! गंवा सकते हैं सरकार- सर्वे

येरुशलम, एजेंसी।
हमास के जारी युद्ध के बीच इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की सरकार पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। हाल ही में सामने आए एक सर्वे से संकेत मिले हैं कि चुनावों में नेतन्याहू सरकार गंवा सकते हैं। इधर, वॉर कैबिनेट मंत्री बैनी गैंट्ज को इजरायल के अगले पीएम के तौर पर भी देखा जने लगा है। चैनल 14 के सर्वे में पता चला है कि नेतन्याहू की अगुवाई वाला गठबंधन घटकर 56 सीटों पर आ सकता है। जबकि, संभावनाएं जताई जा रही हैं कि विपक्ष 64 सीटों का आंकड़ा छू सकता है। इतना ही नहीं खुद नेतन्याहू की लिकुड

पार्टी भी 32 सीटों से कम होकर 26 पर आ सकती है। इधर, संकेत मिल रहे हैं कि गैंट्ज की ब्लू एंड वाइट पार्टी 29 सीट हासिल कर सकती हैं। फिलहाल, इजरायल में नेतन्याहू की अगुवाई में गठबंधन सत्तारूढ़ है। अगर गठबंधन नहीं टूटता है, तो 2026 तक देश में आम चुनाव होने की संभावनाएं नहीं हैं।

नेतन्याहू ने गाजा में जारी युद्ध के 100 दिन पूरे होने के बीच कहा कि इजरायल हमास के खिलाफ जीत मिलने तक युद्ध जारी रखेगा और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) समेत कोई उसे रोक नहीं सकता। संयुक्त राष्ट्र की शीर्ष अदालत ने दक्षिण अफ्रीका के इन आरोपों को लेकर दो दिन सुनवाई की कि इजरायल फिलिस्तीनियों का जनसंहार कर रहा है। इजरायल ने इन आरोपों को सिरे से खारिज किया है। नेतन्याहू ने आईसीजे में सुनवाई के बाद यह बयान दिया।

इजरायल पर युद्ध समाप्त करने का अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ रहा है। इस युद्ध के दौरान गाजा में 23,000 से अधिक फिलिस्तीनी मारे जा चुके है। इजरायल का तर्क है कि युद्ध समाप्त करने का मतलब हमास की जीत होगा। हमास और अन्य आतंकवादियों ने इजरायल में सात अक्टूबर को हमला कर करीब 1,200 लोगों की हत्या कर दी थी जिनमें अधिकतर आम नागरिक थे। इसके अलावा 250 से अधिक लोगों को बंधक बना लिया गया था। इनमें से कुछ को रिहा कर दिया गया है, कुछ लोगों की मौत की पुष्टि कर दी गई है और माना जा रहा है कि आधे से अधिक लोग अब भी कैद में हैं।

इमरान खान की पार्टी पीटीआई चुनाव चिह्न बल्ला से वंचित

इस्लामाबाद, एजेंसी।
8 फरवरी को होने वाले आम चुनाव से पहले देश के सर्वोच्च न्यायालय ने पाकिस्तान चुनाव आयोग (ईसीपी) के फैसले को बरकरार रखा है और इमरान खान के नेतृत्व वाली पीटीआई के अंतर-पार्टी चुनावों को रद्द कर दिया है, इससे पार्टी चुनाव से बल्ले से वंचित हो गई है। स्थानीय मीडिया ने यह जानकारी दी। डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, तीन दिनों तक लगातार सुनवाई के बाद, मुख्य न्यायाधीश काजी फैज ईसा, न्यायमूर्ति मुहम्मद अली मजहर और न्यायमूर्ति मुसर्रत हिलाली की तीन-न्यायाधीशों की पीठ ने ईसीपी की याचिका पर शनिवार रात 11.15 बजे फैसला सुनाया।

पीटीआई के बल्ले के चुनाव चिन्ह की बहाली के संबंध में पेशावर उच्च न्यायालय के आदेश को रद्द करते हुए पीठ ने कहा, पीटीआई द्वारा केवल एक प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना, जिसमें कहा गया है कि अंतर-पार्टी चुनाव हुए थे, यह स्थापित करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता कि ऐसे चुनाव वास्तव में आयोजित किए गए थे, खासकर जब कुछ पार्टी के सदस्य इस दावे को चुनौती दे रहे हैं।

22 दिसंबर को, कुछ विद्रोही पीटीआई सदस्यों द्वारा दायर शिकायतों पर सुनवाई करते हुए चुनाव निगरानी संस्था ने 2 दिसंबर को हुए पीटीआई के इंट्रा-पार्टी चुनावों को अमान्य कर दिया था। पीटीआई ने ईसीपी के आदेश के खिलाफ पेशावर उच्च न्यायालय का रुख किया था, जिसने बुधवार को चुनाव निकाय के फैसले को गैरकानूनी, बिना किसी कानूनी अधिकार के और बिना किसी कानूनी प्रभाव वाला घोषित किया था।

मुझे उपराष्ट्रपति बनने में कोई दिलचस्पी नहीं : निक्की हेली

न्यूयॉर्क, एजेंसी।
आयोवा कॉकस द्वारा रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के नामांकन की प्रक्रिया शुरू करने से कुछ घंटे पहले, भारतीय-अमेरिकी राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार निक्की हेली ने कहा है कि वह अब उप राष्ट्रपति की भूमिका निभाने की इच्छुक नहीं हैं। आयोवा की बर्फीली ठंड को पार करते हुए और राज्य में मजबूत जीत की उम्मीद करते हुए, 2024 के राष्ट्रपति पद की दौड़ में अकेली महिला अगले अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में अपने चुनाव को लेकर आश्वस्त हैं।

हेली ने सीबीएस न्यूज साक्षात्कार में कहा, मुझे उपराष्ट्रपति बनने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं राष्ट्रपति बनने के लिए और जीतने के लिए दौड़ रही हूं और हम जीतेंगे। हाल ही में हुए पोल के अनुसार हेली आमने-सामने के मुकाबले में ट्रम्प या फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस की तुलना में राष्ट्रपति जो बाइडेन पर बड़ी बढ़त बनाए हुए हैं।

हेली ने रविवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा था, रिपब्लिकन को फिर से जीतना शुरू करने की जरूरत है। मैं आम चुनाव में जो

बिडेन पर भारी पड़ूंगी। पिछले सप्ताह जारी एमर्सन कॉलेज पोलिंग/डब्ल्यूएचडीएच न्यू हैम्पशायर सर्वेक्षण में हेली को राज्य के राष्ट्रपति पद के प्राइमरी में 28 प्रतिशत पर पाया गया, जो नवंबर 2023 में 18 प्रतिशत था।

दूसरी ओर, ट्रम्प को राज्य में रिपब्लिकन प्राथमिक मतदाताओं के बीच 44 प्रतिशत समर्थन प्राप्त है, जो पिछले साल नवंबर में 49 प्रतिशत से कम है। 23 जनवरी को न्यू हैम्पशायर प्राइमरी और 3 फरवरी को साउथ कैरोलिना में होने वाले प्राइमरी चुनाव के साथ, संयुक्त राष्ट्र के पूर्व राजदूत ने कहा कि रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद की दौड़ में उनके और ट्रम्प के बीच मुकाबला होगा। हेली ने एक साक्षात्कार में फॉक्स न्यूज को बताया,मुझे लगता है कि मैं और डोनाल्ड ट्रम्प न्यू हैम्पशायर जा रहे हैं। और आप देखेंगे कि यह पहले से ही करीब है। यह और भी करीब आने वाला है, और फिर हम इसे दक्षिण कैरोलिना में अपने राज्य में ले जा रहे हैं। सीबीएस द्वारा यह पूछे जाने पर कि वह उन मतदाताओं से क्या कहेंगी, जो उन्हें उपराष्ट्रपति के रूप में पसंद करते हैं, लेकिन जो अभी भी ट्रम्प का समर्थन कर रहे हैं, हेली ने कहाः ठीक है, मुझे लगता है कि देखो, यदि आप अराजकता के चार और साल चाहते हैं, तो आप यही करने वाले हैं। हेली ने दोहराया कि वह साथी भारतीय-अमेरिकी कमला हैरिस को राष्ट्रपति के रूप में नहीं चाहती हैं। हेली ने सीबीएस न्यूज को बताया, हम अपनी सांसें रोक लेंगे, मुझे राष्ट्रपति कमला हैरिस नहीं चाहिए।

रिश्वतखोरी में सजा काट रहा रूसी मेयर समय से पहले रिहा, शर्त थी- यूक्रेन से लड़नी होगी जंग

मास्को, एजेंसी।
रूस में व्लादिमीर पुतिन की सरकार ने रिश्वतखोरी के आरोप में 12 साल की सजा काट रहे पूर्व मेयर को सजा खत्म होने से पहले ही रिहा कर दिया है, इस शर्त पर कि वह यूक्रेन युद्ध में रूसी सेना की ओर से लड़ने के लिए कीव जाएंगे। स्थानीय मीडिया ने रविवार को यह खबर दी। महापौर ओलेग गुमेन्युक को पिछले साल 4.32 लाख अमेरिकी डॉलर की रिश्वतखोरी में पकड़ा गया था। उन्होंने तीन साल तक रूस में बतौर मेयर काम किया है।

रूस के सुदूर पूर्वी शहर और सांस्कृतिक केंद्र व्लादिवोस्तोक के 2018 और 2021 के बीच महापौर के तौर पर कार्य करने वाले ओलेग गुमेन्युक को पिछले साल 3.8 करोड़ रूबल (लगभग 4.32 लाख अमेरिकी डॉलर) की रिश्वत लेने का दोषी ठहराया गया था और 12 साल कैद की सजा सुनाई गई थी।

रूसी समाचार आउटलेट कोमर्सेंट को उनके वकील आंद्रेई किताएव ने बताया, लगभग दो साल पहले यूक्रेन से शुरू हुए युद्ध में देश की ओर से लड़ने पर सहमत होने के बाद उन्हें रिहा कर दिया गया। उन्होंने कहा कि पूर्व महापौर

का ठिकाना अज्ञात था, लेकिन उन्हें 22 दिसंबर को अपनी सैन्य इकाई में रिपोर्ट करने का निर्देश दिया गया था। हालांकि प्रिमोर्स्की क्षेत्र में संघीय कारागार सेवा के स्थानीय अधिकारियों ने इस खबर की पुष्टि नहीं की है

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129